MAHARASHTRA
News

HINDI

HALKARA
Bombay

FEBRUARY 1993

मानवता के अमर दीप
रास्ते के निराश्रितमानसिक रोगियों के लिए एक वरदान : श्रद्धा फाऊन्डेशन

आज के आपाधापी के युग में जहां मानसिक रोगियों को स्वयं अपने ही घरों में समुचित सहानुभूति एवं देखभाल नसीब नहीं होती वहां रास्तों के निराश्रित मानसिक रोगियों की दुर्दशा की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। ऐसे बदनसीबों की सुधबुध लेने वाली संस्था भी बंबई में विद्यमान है। बंबई महानगर के प्रमुख व्यापारिक केन्द्र बोरीवली (वेस्ट) की "श्रद्धा रीहेबिलिटेशन फाउन्डेशन" नामक संस्था पिछले तीन वर्षों से बंबई की सड़कों पर भटकते निराश्रित

चिकित्सा के पहले

मानसिक रोगियों की सेवा में जी-जान से जुटी है। इस अवधि में संस्था ने सौ से अधिक मानसिक रोगियों को सड़कों से उठा कर अपने नर्सिंग होम में दाखिल कर उनकी सही मानसिक चिकित्सा व सेवा-सुश्रुषा कर उनको उनके निवास स्थानों पर पहुंचाया है। देश के विभिन्न राज्यों से आए ऐसे रास्ते के निराश्रित मानसिक रोगियों के लिए यह संस्था वरदान साबित हो रही है।

❀

सोने में सुगंध

चिकित्सक या डॉक्टर का पेशा एक आदर्श व्यवसाय माना गया है। इसमें भी मानवता को समर्पित चिकित्सकों का जमावड़ा अगर एक स्थान पर हो जाये तो कहना ही क्या।

डॉ. दम्पति के साथ सुधरा हुआ रूप

सोने में सुगंध समान इस संस्था के "श्रद्धा नर्सिंग होम" के कुशल मानसिक चिकित्सकों खास कर डॉ. भरत वटवानी, डॉ. सिता वटवानी एवं डॉ. धनश्याम भिगानी के अथक निःस्पृह प्रयास रंग ला रहे हैं एवं यत्र-तत्र-सर्वत्र इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही है। इस शुभ कार्य में सहयोगी डॉक्टरों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, पुलिस विभाग, रोगियों, रोगियों के सगे-संबंधियों एवं ऐसे ही कई सेवाभावी लोगों एवं संस्थाओं का भरपूर सहयोग व प्रेरणा मिल रही है। महाराष्ट्र के चैरिटी कमिश्नर कार्यालय में पंजीकृत सरकार मान्य इस संस्था को प्राप्त दान की राशि को आयकर मुक्ति दी गई है। देश के कई प्रमुख अखबारों में संस्था के कार्यों की व्यापक प्रशंसा के साथ चर्चा हुई है।

रास्तों के भटकते निराश्रित मानसिक रोगियों की सेवा को तन-मन-धन से समर्पित इस संस्था के यशस्वी डॉ. दंपत्ति डॉ. भरत वटवानी एवं डॉ. सिता वटवानी ने "हलकारा" के प्रतिनिधि को एक विशिष्ट भेंटवार्ता में बताया कि रास्तों पर भटकते निराश्रित मानसिक रोगियों की चिकित्सा का कार्य वे मरते दम तक जारी रखेंगे।माना कि ऐसे रोगियों की तादाद हजारों में हैं। हमारे द्वारा भले ही इतनी विशाल संख्या की सेवा न की जा सके परंतु जो भी कमोबेश हो रहा है वह हमारे लिए प्रेरक है।

श्रद्धा रीहेबिलिटेशन फाउन्डेशन व उसके श्रद्धा नर्सिंग होम का पता है :
गार्नेट, शांति आश्रम के पीछे, ऑफ एक्सर रोड,
बोरिवली (वेस्ट), बंबई ४००१०३
फोन : 855020 • 854333

सम्पादकीय टिप्पणी

तीन वर्ष पूर्व स्थापित यह संस्था मानसिक रूप से विकृत कमजोर लोगों को जो अपनी याददाश्त खो चुकने के कारण घर छोड़कर निकल पड़ते हैं, भटकते-भटकते वे कहां से कहां पहुंच जाते हैं। इनमें से बहुत से लोग बम्बई की सड़कों पर भटकते, गिरते पड़ते, नंगे भूखे की तरह के खेल करते दिखाई पड़ जाते हैं। ऐसे लोगों की कौन खोज खबर लें? ऐसे मानसिक रोगी तो अपना पता भी नहीं जानते हैं। माता-पिता की एक सीमा तक खोज खबर करके बैठ जाते हैं। आखिर कहां जाये?

कहावत है कि जिसका कोई नहीं होता उसका परमेश्वर होता है। परमेश्वर किसी पवित्र आत्मा को प्रेरित करता है कि वह इस तरफ देखें। डॉ. भरत वटवानी एवं उनकी धर्मपत्नी डॉ. सिता वटवानी के प्रयत्नों का प्रतिरूप श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन एक ऐसी ही संस्था है। -संपादक

कहानी कलबा बहन की

जब डॉ. वटवानी से यह पूछा गया कि आप यह काम क्यों कर रहे हो तो उनका जवाब था क्योंकि ऐसे लोग जो रास्ते पर मानसिक रोग के कारण भटकते रहते हैं, ऐसे इन्सानों का कोई साथ नहीं देता। न उनके सिर पर कोई छत होती है न बदन ढंकने के लिये वस्त्र। पर इन लोगों को भी हक है जीने का और वह भी इज्जत के साथ। उनका यह हक हम उन्हें वापिस दिला दें। यह हम अपना वैयक्तिक धर्म समझते हैं। इन तीन सालों में सौ से भी अधिक रोगियों को डाक्टर दंपत्ति ने सुधारा है।ये मानसिक रोगी भटकते भटकते कहां से बंबई में आ पहुंचते हैं। नागालैंड, कश्मीर, तमिलनाडु, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, आन्ध्रप्रदेश, राजस्थान, आदि प्रदेशों से आ जाते हैं तथा बड़ी बुरी हालत में हमें देखने को मिलतेहैं।

डॉ. वटवानी ने उन्हें ठीक कर उनके परिवार से वापिस मिलाया है। कितनी खुशी होती होगी उन परिवारवालों को। ऐसे सैकड़ों पत्र डाक्टर के पास हैं जिन्हें पढ़कर हमारी आंखें भी गीली हो जाती हैं आखिर क्यों न हो? किसी की मां, किसी की बहन, किसी का भाई जब चुस्त दुरुस्त हालत में उन्हें मिलता है तो वे ईश्वर और डाक्टर दंपत्ति का कितना धन्यवाद करते होंगे? अब तो इस महान् कार्य में अन्य कई सेवा भावी लोग तथा संस्थाएं भी अपना सहयोग देने को तैयार होती जा रही है। क्यों न हो, यह काम कोई छोटा नहीं इस काम को तो करे जितना थोड़ा है बहन की कहानी भी एक ऐसी ही बदनसीब औरत की कहानी है जो ठीक हो चुकी है परंतु लाख कोशिश करने के बाद भी उसके घरवालों का पता नहीं चल सका है और अब वह श्रद्धा रिहेबिलिटेशन में ही रहती है। कलबा बहन अपने को

मारवाड़ी बताती है तथा बरोडा जिले के रहने वाली है। उसके पति का नाम रसिकलाल है तथा उसके बेटे का नाम बाबूसिंह है जिसकी छोटी सी चाय की दुकान है। इस औरत के पास दो बच्चे हैं। ये उसके पोते थे जिनमें से एक डेढ़ दो साल का था जो रास्ते पर ही गुजर गया वह लड़की तथा कलबा दोनों डाक्टर के साथ हैं। डाक्टर वटवानी ने बताया कि उन्होंने खुद बच्ची और उसकी दादी को लेकर बरोडा का हर गांव छान मारा पर उसके रिश्तेदारों का कोई पता नहीं चल पाया।

MUMBAI

News

HINDI

SANJHA JANSATTA

DECEMBER 1993

पेज ६

सरदार पटेल होते तो यह होता

पेज ७

असली जीत शेषन की हुई है

पेज १०

'ताक धिना-धिन' में 'फरार', 'प्रेमयुद्ध'

पेज १२

सड़कों पर भटकते स्काइजोफ्रेनिक

संझा जनसत्ता

पृष्ठ १६ | बंबई, मंगलवार २१ दिसंबर १९९३ | मूल्य १.५०

सड़कों पर भटकते स्काइजोफ्रेनिक

विनोद गोयल एक दिन अचानक घर से गायब हो गया। विनोद के मां-बाप ने जगह-जगह उसे छान मारा, नाते-रिश्तेदारों के घरों में चक्कर काटे, दरगाह-पीर, ओझा सबके पास गए। पुलिस स्टेशन में भी रपट दर्ज कराई। परंतु विनोद का कहीं पता नहीं चला।

दरअसल, विनोद अपना मानसिक संतुलन खो चुका था। वह एक दिन घर से निकल कर भटकते-भटकते बंबई आ गया। बंबई शहर में बोरिवली के आसपास सड़कों पर वह दिन भर भटकता रहता था। वह नाले का गंदा पानी पीता व कचरों से कुछ भी उठाकर खाता था। वह किसी से भी बातचीत नहीं करता था। वह सिर्फ खुद से बातें किया करता था। कभी-कभी खुद से रोता और कभी हंसता रहता।

एक दिन एक डाक्टर दंपति आए और उसे अपने सहयोगियों के सहयोग से उसे अपने अस्पताल ले गए। वहां उसका दो माह तक लगातार इलाज किया गया। इलाज से उसका मानसिक संतुलन सुधरने लगा। ठीक हो जाने पर उसने अपने बारे में जो कुछ बताया वह बड़ा चौंकाने योग्य था।

उसने बताया की वह एक मध्यम परिवार से है और राजस्थान के भरतपुर शहर का रहने वाला है। वह भरतपुर के कालेज से विज्ञान की पढ़ाई भी कर रहा था।

डा. भरत वाटवानी व स्मिता वाटवानी यह डाक्टर दंपति पिछले दो वर्ष से अपने बोरिवली स्थित शारदा रिहैबीलिटेशन फाउंडेशन अस्पताल में मानसिक रूप से असंतुलित, सड़कों पर भटक रहे लावारिस युवक-युवतियों का अपने अस्पताल में इलाज कर रहे हैं। यह सड़कों पर भटकते भिखारी सी अवस्था में दिखने वाले युवक, युवतियों, बच्चे दरअसल स्काइजोफ्रेनिया (खंडित मनस्कता) बीमारी के शिकार होते हैं। डाक्टर दंपति इन्हें सड़कों से उठाकर अपने अस्पताल लाते हैं। अस्पताल में उनको नहलाया जाता है। उनके बाल काटे जाते हैं और उन्हें नई टी शर्ट दी जाती है (ताकि वे अगर अस्पताल से भाग जाएं तो उन्हें टी शर्ट की पहचान के माध्यम से आसानी से खोजा जा सके) इसके बाद उनका इलाज शुरू होता है। दो या तीन माह तक वे बहुत हद तक ठीक हो जाते है और उनकी याददास्त वापस लौट आती है। वैसे पूरी तरह स्वस्थ होने के लिए उनका दो से तीन वर्ष तक इलाज करना पड़ता है। याददास्त वापस आने के पश्चात उनसे उनका घर का पता पूछा जाता है। पता प्राप्त हो जाने के बाद अभिभावकों को पत्र लिख दिया जाता है। पत्र पाते ही अभिभावक डाक्टरों से संपर्क करते है और डाक्टर दंपति को दुआ देकर अपने बच्चे को ले जाते हैं।

डा. भरत व स्मिता मानस रोग चिकित्सक हैं। उन्होंने बोरिवली में अपना अस्पताल खोला। अस्पताल कुछ ही वर्ष में चल निकला परंतु दोनों को इससे संतुष्टि नहीं मिली। वे कुछ अनोखा करना चाहते थे। उन्होंने पाया की शहर की सड़कों पर गंदे कपड़े पहने, बिखरे बाल किए, गटर व कचरों के ढेर से कुछ भी उठाकर खाने वाले, अजीबो-गरीब हरकत करने वाले ये गरीब इंसान दरअसल मामूली बीमारी का शिकार है जिन्हें आसानी से ठीक किया जा सकता है। उन्होंने कुछ ही दिनों में इन मरीजों को सड़कों से उठाकर अस्पताल में लाकर उनका इलाज करना शुरू कर दिया।

> **स्काइजोफ्रेनिया बीमारी के संदर्भ में डाक्टरों का कहना है कि स्काइजोफ्रेनिया बीमारी के शिकार होने के कई कारण हो सकते हैं- मानसिक संतुलन बिगड़ जाना, पर्यावरण तनाव, परिवार में दो या तीन सदस्यों की लगातार आकस्मिक मृत्यु, व्यापक धन हानि, परीक्षा में निष्फल, विवाह, तलाक, बेरोजगारी इन तमाम कारणों की वजह से मरीज वास्तविकता से संबंध तोड़ देता है।**

स्काइजोफ्रेनिया बीमारी के संदर्भ में डाक्टरों का कहना है कि स्काइजोफ्रेनिया बीमारी के शिकार होने के कई कारण हो सकते हैं- मानसिक संतुलन बिगड़ जाना, पर्यावरण तनाव, परिवार में दो या तीन सदस्यों की लगातार आकस्मिक मृत्यु, व्यापक धन हानि, परीक्षा में निष्फल, विवाह, तलाक, बेरोजगारी इन तमाम कारणों की वजह से मरीज वास्तविकता से संबंध तोड़ देता है। परिणाम स्वरूप व अजीब हरकतें करने लगता है। घर छोड़कर सड़कों पर भटकने लगता है। सड़कों पर भटकते-भटकते गंदी चीजें खाने से व साफ न रहने से इन मरीजों को कई अन्य बीमारियां हो जाती हैं। कई तो सड़कों, फुटपाथ में ही इन बीमारी की वजह से मर जाते हैं।

डा. स्मिता का कहना है कि अन्य मानसिक बीमारियों की तरह ही स्काइजोफ्रेनिया का भी इलाज किया जा सकता है। अगर मर्ज का पता शुरू में ही चल जाए तो मरीज को ठीक करना आसान हो जाता है। स्मिता ने बड़े ही गर्व से बताया कि उन्होंने पिछले दो वर्ष में तकरीबन ७० स्काइजोफ्रेनिया मरीजों को ठीक किया है।

यह पूछने पर कि वे किस प्रकार से मरीज को सड़कों से पकड़ते हैं व उन्हें किस प्रकार पहचानते हैं की मरीज स्काइजोफ्रेनिया का शिकार है? डा. स्मिता ने बताया कि, 'स्काइजोफ्रेनिया को पहचानना आसान होता है वे स्वयं से बातें करते हैं, हंसते हैं और मुस्कुराते हैं। कभी-कभी फूट-फूटकर रोते हैं। हम उनके पास जाते हैं और उन्हें बिस्कुट-पाव आदि खाने को देते हैं फिर उन्हें चाय या ठंडा पिलाने के बहाने उन्हें अपनी कार में बैठा कर अपने अस्पताल ले जाते हैं। यहां इन्हें नलहा कर, साफ कपड़े पहना कर इनके स्वास्थ्य की संपूर्ण जांच की जाती है। अगर वे स्काइजोफ्रेनिया के अलावा अगर किसी अन्य बीमारी के शिकार हैं जैसे टीबी, बुखार, त्वचा रोग इत्यादि तो पहले इन बीमारियों का इलाज किया जाता है। जरूरत पड़ने पर हम इन बीमारियों को ठीक करने के लिए स्पेशलिस्ट डाक्टरों की भी राय लेते हैं। इन बीमारी के ठीक हो जाने के बाद हम स्काइजोफ्रेनिया का इलाज करते हैं।

दोनों डाक्टरों का कहन है कि भारत में यह बीमारी एक प्रतिशत तक है। अंधविश्वास, दंत कथाएं, धन का अभाव यही सब कारणों की वजह से परिवार जन मरीज का ठीक से इलाज नहीं कराते और मर्ज दिन-ब-दिन बढ़ता ही जाता है। उदाहरण के तौर पर हम एक केस पर गौर करें। दिलीप नामक एक व्यक्ति सड़कों पर भटक रहा था। डा. वाटवानी उसे उठाकर अपने अस्पताल ले आए। कई हफ्तों बाद इलाज के बाद पता चला की दिलीप का परिवार नागालैंड में रहता है। यहां दिलीप कालेज की पढ़ाई कर रहा था।

डा. भरत का कहना है कि आम लोग यह समझते हैं कि सड़कों पर भिखारी से दिखने वाले ये पागल किस्म के लोग समाज के किसी भी अंग के भाग नहीं होते हैं। परंतु यह सोच एकदम गलत है। इन सड़कों में भटकने वालों में गरीब व मध्य दोनों वर्ग के युवक व युवतियां होते हैं। इन्हें अगर स्वस्थ कर दिया जाए तो ये वापस सामान्य होकर समाज में अपना योगदान दे सकते हैं। बंबई जेजे कालेज आफ आर्ट्स के लेक्चरर हेमंत ठाकुर भी स्काइजोफ्रेनिया का शिकार हो गए थे। वे जहांगिर आर्ट गैलरी के आसपास भटकते रहते थे। उनकी एक विद्यार्थी ने उन्हें शारदा रिहैबीलिटेशन में भरती किया। आज वे स्वस्थ होकर फिर से जेजे कालेज के लेक्चरर की नौकरी कर रहे हैं।

यह पूछने पर कि अगर मरीज की याददाश्त वापस न आए तो आप क्या करते हैं। डा. भरत का कहना है कि, 'यह कभी नहीं होता कि मरीज की याददाश्त वापस ना आए।' हां, समय जरूर ज्यादा लग सकता है पर याददाश्त वापस अवश्य आती है। कभी-कभी किसी वस्तु को देखकर या घटना के पूर्ण-स्मरण से याददाश्त वापस आ जाती है। याददाश्त के वापस आने के बावजूद सिर्फ समस्या यह होता है कि कईयों को अस्वस्थ दौर में क्या घटा व उन्होंने क्या-क्या किया यह उन्हें याद नहीं होता। कभी-कभी इसकी वजह से काफी हानि उठानी पड़ती है। उदाहरण के तौर पर २४ वर्षीय सरोज बोरिवली में भटक रही थी उसे जब अस्पताल में लाकर ठीक किया गया तो उसे याद आया की उसकी शादी हो चुकी है और वह चार बच्चों की मां है। वह आसनसोल में अपने मां के साथ रहती थी क्योंकि उसका पति उस पर बहुत अत्याचार करता था। एक दिन वह अपने मां के घर से अपने सबसे छोटे बच्चे को लेकर निकल पड़ी। उसे सिर्फ इतना याद है कि उसने बरोदा स्टेशन पर अपने बच्चे को किसी को दिया था। पर वह उस व्यक्ति के बारे में कुछ भी बता नहीं पाई।

डा. भरत व स्मिता चाहते हैं कि इस नेक कार्य में अन्य लोग भी हाथ बटाएं। उन्होंने लोगों को जागृत करने के लिए इन लोगों के बारे में वीडियो फिल्म भी तैयार की है। वे चाहते हैं कि इस नेक कार्य की और भी बढ़ोतरी की जाए। वे चाहते हैं इन मरीजों के लिए अस्पताल बनाने के लिए सरकार सस्ते दाम में जगह प्राप्त करके दे। उन्होंने कई हमदर्द लोगों से चंदा इकट्ठा करना भी शुरू किया है।

सुनील सहगल

भरत वाटवानी व स्मिता वाटवानी मरीज के साथ पूजो साऊ अस्वस्थ अवस्था में

NATIONAL
News

HINDI

JANSATTA SABRANG
- PART 1 & 2

MARCH 1998

श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन

सहज जीवन का आंगन

मानसिक रूप से विक्षिप्त और बेसहारा लोगों को नया जीवन प्रदान करता है श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन। अपनी पहचान, अपनी सामर्थ्यता और अपना व्यक्तित्व खो चुके लोगों को वापस सहज जीवन में लाने का बड़ा काम यह फाउंडेशन कर रहा है। इस फाउंडेशन के कार्यकलापों की जानकारी दे रही हैं **दिव्या जैन**।

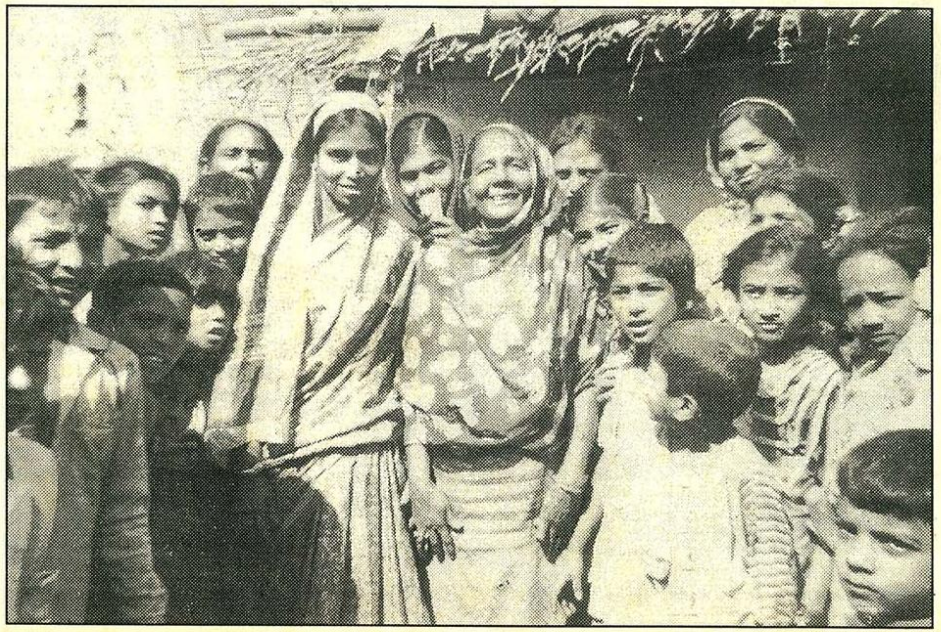

श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन, मानसिक रूप से विक्षिप्त और बेसहारा लोग, जो कि मुंबई की सड़कों पर पाए जाते हैं, उनसे प्रेरित और उनको समर्पित संस्था है। मुंबई के उपनगर दहिसर स्थित इस संस्था की स्थापना फरवरी १९९७ में हुई। इससे पहले १९८८ में बोरिवली में श्रद्धा नर्सिंग होम की स्थापना हुई थी। यहां सड़क से उठाकर लाए गए मानसिक रूप से विक्षिप्त (स्किझोफ्रेनिक) मरीजों के अलावा उन मरीजों को भी रखा जाता है, जो आर्थिक रूप से सक्षम होते हैं और अपनी मानसिक बीमारी का इलाज करवाने आते हैं।

इन लोगों की दुर्दशा के बावजूद जिंदा रहने की क्षमता तथा कष्टदाई वातावरण के बावजूद दृढ़ निश्चयी और तर्कसंगत होने की क्षमता ने हमें यह काम करने की प्रेरणा दी है। इन्हीं लोगों ने हममें आत्मविश्वास और शक्ति जगाई है। हमारा यह काम इन्हीं लोगों की उन्नति को समर्पित है।''

''पिछले कुछ सालों में हमें कई मर्तबा यह पूछा गया है कि हम यह सब क्यों कर रहे हैं! मुंबई की सड़कों पर ऐसे हजारों मानसिक रूप से विक्षिप्त लोग घूमते हैं। उनमें से कुछ लोगों का इलाज करने से क्या फर्क पड़ेगा? कब तक आप उनको खाना, दवाइयां, शरण स्थान और उन्हें उनके गांव तक पहुंचाने की तथा अन्य आर्थिक जिम्मेदारियों का बोझ उठाते रहेंगे।''

''सड़क पर जिन बेसहरा लोगों का अस्तित्व है और जिन्हें मदद की जरूरत है, वे हैं मानसिक रूप से विक्षिप्त लोग। उनकी व्यथा, उनके मिट्टी की परतों से लबालब चेहरों पर झलकती हैं। उनकी कहानी उनके गुत्थीवाले बालों में लिखी हुई दिखाई देती हैं। ऐसे मरीजों को समाज में फिर से जीने लायक बनाने का हमारा दृढ़ संकल्प है।'' बताते हैं डा. स्मिता वटवानी, डा. भरत वटवानी तथा डा. घनश्याम भिमानी जो कि मनोचिकित्सक हैं। पिछले कुछ सालों से वे इस काम में सक्रिय हैं।

स्कीझोफ्रेनिया एक गंभीर मानसिक बीमारी है। विश्व भर में स्वास्थ्य संबंधी एक बड़ी समस्या है। हर देश की लगभग दो प्रतिशत आबादी इस रोग से ग्रस्त हैं। इस बीमारी की तत्काल और उचित चिकित्सा बेहद जरूरी है।

इस बीमारी में मरीज का वास्तविकता से संबंध टूट जाता है। उनके विचार और भावनाएं विचित्र, तर्कहीन और अर्थहीन हो जाती हैं। उनके अजीब, अनोखे व्यवहार के कारण सामान्य लोग उन्हें पागल कहते हैं।

दुकान जाते समय मेरी कार का टायर फट गया। लगा कि यह किसी की साजिश थी। पेट्रोल पंप पर भी लोग मेरी तरफ देखकर हंस रहे थे और मुझे लगा कि अब मेरा अंत आ गया। ये लोग मुझे मार डालेंगे। तभी मुझे उनके चेहरे आकाश में दिखने लगे।''

इसी प्रकार के अनुभवों से गुजरते हैं स्कीझोफ्रेनिया के मरीज। इसी प्रकार की तर्कहीन बातें इनके दिमाग पर हावी होती चली जाती है। अपनों से इनका रिश्ता टूटता चला जाता है। ऐसे में कभी डर के मारे तो कभी कुछ बन दिखाने के चक्कर में ये मरीज घर छोड़ देते हैं। सड़क ही इनका स्थाई सहारा बन जाती है।

ऐसे ही कुछ मरीजों से रूबरू होते हैं, जिनका मानसिक संतुलन एकदम बिगड़ चुका था। सालों साल सड़क पर रहने से धूल- मिट्टी की परतों से लबालब चेहरे अपनी पहचान खो चुके थे। लेकिन श्रद्धा नर्सिंग होम के डा. वटवानी दंपत्ति ने उन्हें नई जिंदगी बख्शी है।

''बात उस समय की है जब मैं नवीं कक्षा में पढ़ता था। एक दिन पिताजी ने मुझे एक तरफ ले जाकर जिंदगी की कुछ सच्चाइयां बताई थीं। उन्होंने कहा था मृत्यु से कभी डरना नहीं। दूसरे दिन उन्होंने कहा अपनी मां और भाई का खयाल रखना। मैंने पूछा क्यों? कहा, उन्हें कैंसर है। मैं परेशान हो गया। ऐसे में मेरे सामने दो ही विकल्प थे। कोई नौकरी खोज लूं या अपनी शिक्षा को अंजाम दूं। मैंने दूसरा विकल्प चुना। जिस दिन मैंने बीए की डिग्री हासिल की, उसी दिन पिताजी की मृत्यु हो गई।'' बताते हैं सुधीर।

इस घटना से उबरने से पहले ही पता चला कि मां को स्तन का कैंसर है। मेरा हताश होना स्वाभाविक था। बड़ी कोशिश के बाद मुझे बीएससी में स्थाई नौकरी मिल गई। लिखने का भी शौक था। नौकरी के साथ-साथ पत्रकारिता भी करता था। उसी दौरान मैंने शादी भी कर ली। एक बेटी का पिता बना, जिसका नाम था नेहा। दस साल तक कैंसर जैसी बीमारी से जूझने के बाद मां चल बसी। मां-पिता के मरने का दुख तो था ही। इस बीच घटनाएं घटती चली गईं। मेरी शादी टूट गई। मैं टूट गया और नर्वस ब्रेक डाउन का शिकार हो गया। मैंने अपनी स्थाई नौकरी छोड़ दी। मैंने अपना फ्लैट लीव लाइसेंस के आधार पर मित्र को दे दिया। उसने भी मुझे धोखा दिया। उसने

रमेश म्हात्रे इलाज के पहले

रमेश म्हात्रे इलाज के बाद

मुझे अपने फ्लैट का किराया नहीं दिया। मैं सड़क पर आ गया। सड़क पर रहते-रहते मैं अपने होश खोने लगा था। उस समय मुझे लगता था कि मैं वाशिंग्टन पोस्ट का चीफ रिपोर्टर हूं। मुझे अजीब सी आवाजें सुनाई देती थीं। कोई गाली दे रहा है तो कोई मेरी तारीफ कर रहा है। दो साल तक सड़क पर ही रहा। श्रद्धा नर्सिंग होम के डा. वटवानी बताते हैं कि वो जब मुझे उठाकर अपने नर्सिंग होम में ले गए तब भी मैं इसी तरह बड़बड़ाता था। यही बातें बोलता था।

''बहरहाल, यहां इलाज होने पर मैं बहुत जल्दी अच्छा हो गया। श्रद्धा नर्सिंग होम के सभी लोगों ने मुझे भरपूर प्यार दिया। सही मायने में मुझे नई जिंदगी दी है। अब मैं यहीं रहता हूं और मेरे जैसे लोगों की मदद करना अपना दायित्व समझता हूं। वैसे तो मैं चालीस की दहलीज लांघ चुका हूं, लेकिन मुझे लगता है कि मैं जिंदगी भर एक छोटा बच्चा ही बना रहूं।'' बताते हैं सुधीर।

NATIONAL
News

HINDI

JANSATTA SABRANG
- PART 3 & 4

MARCH 1998

लगा कि ऐसी मदद करनी चाहिए

- डा. स्मिता वटवानी

डॉ. स्मिता वटवानी मनोचिकित्सक हैं। उन्होंने अपने पति डॉ. भरत वटवानी के साथ मिलकर स्कीजोफ्रेनिक यानी मानसिक रूप से विक्षिप्त और खासकर सड़क से उठाकर लाए गए मरीजों का इलाज करने का निश्चय किया है। इन मरीजों के लिए उन्होंने पुनर्वसन केंद्र भी शुरू किया है। मरीज के ठीक हो जाने पर वे उन्हें उनके निश्चित ठिकाने पर पहुंचाती भी हैं। उनसे हुई बातचीत के मुख्य अंश :

• मानसिक रूप से विक्षिप्त मरीजों को सड़क से उठाकर उनका इलाज करने की बात आपको कैसे सूझी ?

मनोचिकित्सा में एमडी करने के बाद कुछ समय तक मैं सायन अस्पताल में मनोचिकित्सा विभाग में रजिस्ट्रार थी। सायन अस्पताल में भी सड़क से उठाकर लाए गए मरीजों का इलाज करने का अनुभव तो था ही। शादी के बाद हम लोगों ने अपनी निजी प्रैक्टिस शुरू की। श्रद्धा नर्सिंग होम की शुरुआत की। यहां हमारे प्राइवेट मरीज तो थे ही, लेकिन सड़क से उठाकर लाए गए मरीजों का इलाज करने की बात हम दोनों के दिमाग में बैठ गई। उस समय हमें लगा कि अपंग वा अंधजनों के लिए तो कई संस्थाएं काम कर रही हैं। लेकिन मानसिक रोगियों के लिए, और खासकर जो सड़क पर पाए जाते हैं, उनके लिए कोई कुछ नहीं करता। लोग उन्हें भिखारी समझकर छोड़ देते हैं। उन्हें टाल देते हैं। लेकिन वास्तव में वे भिखारी नहीं होते। इन लोगों की मदद की जा सकती है, ऐसा हमें बड़ी शिद्दत से महसूस हुआ। इन लोगों में से कुछ तो बहुत बुद्धिमान होते हैं।

हमने जब निजी प्रैक्टिस शुरू की तब हम बोरीवली के एक होटल में नाश्ता किया करते थे। होटल के सामने कचरे का बड़ा सा ढेर था। वहां एक युवा लड़का बैठा रहता। कचरे के ढेर से उठाकर कुछ- कुछ खाता। बड़बड़ाता रहता। उसे देखकर हमें लगा क्यों न इसे ही उठाकर अपने नर्सिंग होम में ले जाया जाए। हम उसे उठाकर ले आए। उसका इलाज किया। दो सप्ताह के इलाज के बाद वह बातचीत करने लगा। उसका नाम विजयन था। पता चला वह आंध्रप्रदेश का था। अंग्रेजी जानता था। उसने डीएमएलटी पास किया था। पूरी तरह ठीक होने पर उसने अपना पता- ठिकाना बताया। हमने उसके पिताजी को संपर्क किया। एक महीने बाद उसके पिताजी आकर उसे ले गए। उस समय हमने जो एक पिता और बेटे का पुनर्मिलन देखा तो लगा कि बस यही काम करते रहना चाहिए। हमारा पहला मरीज था। हमारे लिए प्रेरणास्रोत भी वही मरीज था।

• नशाखोरी करने वाले, शराबी या मंदबुद्धि मरीजों को आप सड़क से क्यों नहीं उठाते ?

शराब या नशीले पदार्थ लोग जानबूझकर लेते हैं। उन्हें मालूम होता है कि ये नशीली चीजें नुकसान करती हैं, फिर भी वे लेते हैं। जबकि मंदबुद्धि लोगों की समस्या होती है कि वे अपना अता- पता नहीं बता पाते। ऐसे में उनको अपने निश्चित ठिकाने पर पहुंचाना मुश्किल होता है।

मानसिक रोग का जहां तक सवाल है, वह हो जाता है, जैसे रक्तचाप बढ़ जाता है। मनोरोग के कारण वे सड़कों पर भटकते हैं, गुम हो जाते हैं। काफी लोग सड़क पर ही मर जाते हैं।

• श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन बनाने के लिए आपने धनराशि कैसे इकट्ठा की ?

यहां बात श्रद्धा की है, विश्वास और पक्के इरादे की है। इस काम में हमारे प्रयास और समर्पण के कारण स्वैच्छिक तथा चैरिटेबल संगठनों से तो मदद मिलती ही थी, लेकिन इस पुनर्वसन केंद्र के बनने में हमारे एक मरीज का सुझाव काफी महत्वपूर्ण साबित हुआ। इस केंद्र को बनाने के लिए आवश्यक बड़ी रकम जुटाने का नायाब तरीका उन्होंने ही सुझाया था। उनका नाम है प्रो. हेमंत ठाकरे।

फिलहाल वे जेजे स्कूल आफ आर्ट्स में लेक्चरर हैं। वे भी स्कीजोफ्रेनिया के शिकार हुए थे। उनकी गलत हरकतों के कारण वे जेजे स्कूल आफ आर्ट्स से निकाल दिए गए थे। सड़कों पर भटकते थे। उनके एक विद्यार्थी ने हमें उनको सड़क से उठाने का सुझाव दिया। उन्हें हम श्रद्धा नर्सिंग होम में ले आए। उनका इलाज किया। तीन महीने में वे अच्छे हो गए। उस समय की शिक्षा सचिव मैडम कुसुम बंसल से ठाकरे की बीमारी का वास्ता देकर तथा जेजे के डीन से भी अनुरोध करके उन्हें फिर से वहां नौकरी पर रखवा दिया। आज वे वहां के सबसे ज्यादा कर्मनिष्ठ प्रोफेसर माने जाते हैं। उन्होंने शादी भी कर ली है।

श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन बनाने के लिए राशि जुटाने के लिए उन्होंने अच्छा सुझाव दिया। उनका सुझाव था कि देश-विदेश के प्रसिद्ध चित्रकारों के पेंटिंग्स मंगवाए जाएं और जहांगीर आर्ट गैलरी में एक बड़ी प्रदर्शनी लगाई जाए। उनके इस सुझाव के अनुसार हमने देश- विदेश के १४५ चित्रकारों से पत्र एवं फोन द्वारा संपर्क किया 'श्रद्धा समर्पण प्रदर्शनी' के लिए उन्होंने अपने चित्र भेजे। प्रदर्शनी कामयाब रही। चित्रों के बिकने पर करीब सात लाख रुपए इकट्ठे हुए। इन रुपयों से दहिसर में एक प्लॉट खरीदा गया। यह बात १९९३ की है। प्लॉट तो तुरंत खरीद लिया। भवन निर्माण में भी तो पैसा लगना ही था। हमने संस्थाओं से फंड इकट्ठा करना शुरू किया।

इस भवन निर्माण का पूरी खर्च लायंस क्लब आफ जुहू गुलमोहर वालों ने दिया। इसी प्रकार यह रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन बना। इस संस्था का उद्घाटन १० फरवरी १९९७ में हुआ। यहां २० मरीजों के लिए जगह है। मरीज को हम लाते हैं और वे अच्छे होकर चले जाते हैं। अब तक कुल मिलाकर ५०० मरीजों का हमने इलाज किया है।

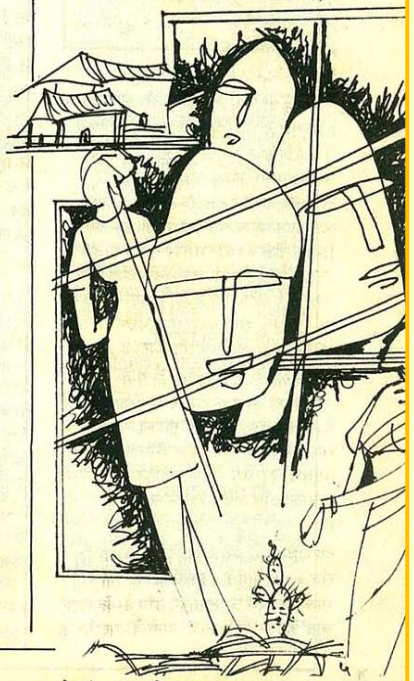

रेखांकन : मनोज नागरकर

देखभाल करना एक बड़ा दायित्व है

- सुप्रिया सिन्हा

सुप्रिया सिन्हा श्रद्धा नर्सिंग होम तथा श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन में बतौर परामर्शदाता तथा सामाजिक कार्यकर्ता काम कर रही हैं। सुप्रिया ने मनोविज्ञान में बीए किया है। बीए के अंतिम साल में छात्र-छात्राओं को ठाणे मेंटल हास्पिटल तथा मंदबुद्धि बच्चों के लिए विशेष स्कूल दिलखुश ले जाया गया था। तब सुप्रिया को लगा था कि अगर कुछ काम करना है तो इन्हीं लोगों के लिए करना है, वरना मनोविज्ञान पढ़ना बेकार साबित होता है।

बकौल सुप्रिया सिन्हा

१९९३ में मैंने श्रद्धा नर्सिंग होम जॉइन किया। इससे पहले जब भी मैं सड़क पर मरीजों को घूमते देखती तो लगता था कि इनके लिए कुछ करना चाहिए, यह समझ में नहीं आ रहा था। खैर... यहां आने पर सब कुछ समझ में आ गया। इस काम में मेरा मन लगा और रुचि बढ़ती गई।

शुरू में मेरा काम होता था मरीजों से बातचीत करना, उनके घर जाना, उनको समझाना। हर मरीज सबके सामने तो खुलकर बात नहीं करता। यदि कोई मरीज कम बोलता है तो उससे बातें निकलवानी पड़ती है। उनके रहने का पता-ठिकाना, घर वालों के बारे में जानना आदि।

दूसरी बात कि जब मरीज यहां आते हैं तो उनकी हालत बहुत खराब होती है। सड़क पर रहते-रहते उनके बदन पर मैल की परतें जम जाती हैं। सर में जूएं हो जाती हैं। गटर का पानी पीने से और सड़क से उठाकर कुछ भी खाने से वे अनेक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। उनके प्रति सहानुभूति होना और उनके फिर से समाज में जीने लायक बनाना आसान कम नहीं है।

तीसरी बात है समर्पण भाव की। इस काम में पूरी तरह लगना पड़ता है। कुछ घंटे ड्यूटी कर लेने से काम नहीं चलता। जब भी मरीज ठीक होने लगता है, अपना पता-ठिकाना बताता है तब हम उनके घर वालों को पत्र लिखते हैं। मरीज के घर वाले उसे लेने न आए तो उसे छोड़ने उसके गांव भी जाते हैं। मरीज को अगर गांव में कोई दवाई न मिलती हो तो उन्हें दवाइयां भेजने का काम भी हम करते हैं। मरीज को छोड़ने कभी डा. दंपति जाते हैं तो कभी मैं और स्टाफ नर्स जाती हैं।

जब हम मरीज को छोड़ने उनके गांव जाते हैं तो उनके घर वाले बहुत प्यार देते हैं, हमारी इज्जत करते हैं। एक महीला मरीज अपने घर से छह-सात साल से लापता थी। हमारे वहां से ठीक होने पर मैं उसे छोड़ने बीड़ गई थी। उसे देखकर उसके घर वाले बहुत खुश हो गए। बिछड़ी हुई उनको सालों बाद वापस मिल गई। उन्हें लग रहा था कि कोई चमत्कार हो गया। गांव वालों में भावनात्मक रिश्तों की प्रगाढ़ता आज भी मौजूद है। जब कभी हम मुंबई में ही किसी मरीज को छोड़ने जाते हैं तो ऐसा रिस्पान्स नहीं मिलता।

डिलीवरी के बाद पागलपन का शिकार हुई एक अन्य महिला नागपुर स्थित अपना गांव छोड़कर मुंबई चली आई थी। श्रद्धा नर्सिंग होम में उसका इलाज हुआ। ठीक होने पर हम उसे छोड़ने गांव गए। पता चला कि उसका पति नौटंकी में काम करता था। उसने दूसरी शादी कर ली थी। वह उसे रखना नहीं चाहता था। हमने उसे उसकी बीमारी के बारे में बताया। उसकी दूसरी पत्नी ने कहा कोई बात नहीं, मैं इसे रख लूंगी।

बहरहाल, आम तौर पर गांव के लोगों को मालूम नहीं होता कि यह मानसिक बीमारी होती क्या है ? गांव में जब किसी को इस बीमारी के लक्षण दिखाई देते हैं, जैसे मरीज खुद से बातें करने लगता है, तो उनको लगता है कि वह भूतप्रेत का शिकार है। किसी ने जादूटोना कर दिया है। ऐसे में ये लोग इलाज नहीं करवाते। इलाज न करवाने पर मरीज की हालत बिगड़ती है। वह घर से निकलकर भटकने लगता है। ऐसे में जरूरी होता है गांव वालों को इस बीमारी की सही जानकारी देना, उनको समझाना। लेक्चर, कार्यशाला द्वारा यह हो सकता है। इस काम को अभियान की तरह करने से निश्चित परिणाम सामने आएंगे।

सुधीर फडके इलाज के बाद

सुधीर फडके इलाज के पहले

स्कीझोफ्रेनिया अनेक कारणों से होता है। बायोकैमिकल अस्थिरता के कारण दिमाग अधिक मात्रा में 'डोपेमाइन'' नामक रसायन बनाता है। इसकी वजह से स्नायुओं की गति तेज हो जाती है, जो बाद में विचार और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। ऐसे में बिना किसी आघात की वजह से भी व्यक्ति को यह रोग हो सकता है।

परिवार में किसी की मृत्यु, भारी आर्थिक नुकसान, प्रेम में असफलता, परीक्षा में असफलता, नौकरी से निकाल दिया जाना, तलाक, गर्भावस्था आदि, इस रोग के कारण बन सकते हैं।

अखिल फिल्म स्टार बनने में असफल हुआ और स्कीझोफ्रेनिया का शिकार हो गया। अखिल कुरैशी, गोरा-चिट्टा सुंदर सा दिखने वाला नौजवान। उम्र २१ साल। शुरू से अपने ही व्यक्तित्व से काफी प्रभावित रहा। बचपन से ही फिल्में देखने का शौक। पढ़ाई- लिखाई के नाम पर शून्य। फिल्म स्टार बनने का भूत सर पर सवार हो गया।

NATIONAL
News

HINDI

JANSATTA SABRANG
- PART 5

MARCH 1998

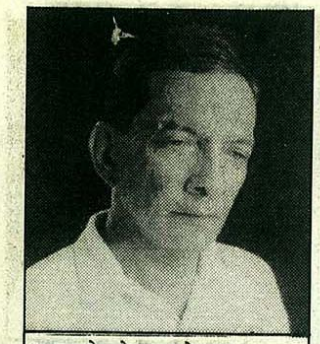

प्रकाश गोखले इलाज के बाद

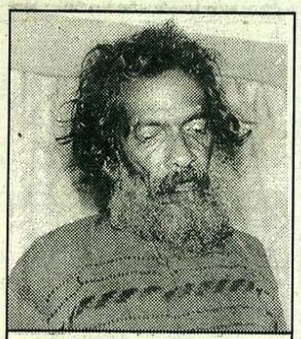

प्रकाश गोखले इलाज के पहले

दोस्तों के बीच बातें होतीं। दोस्त उसे चिढ़ाते रहते। ''चला है हीरो बनने, सब कुछ इतना आसान है क्या?''

अखिल, हर हाल में अपने सपनों को साकार होते हुए देखना चाहता था। मूल रूप से परभणी का रहने वाला। एक दिन अचानक घर छोड़कर मुंबई चला आया। यहां उसकी किसी से जान-पहचान नहीं थी। बस कुछ कर दिखाने के चक्कर में सुबह से शाम तक भटकता रहता।

दोस्तों के चिढ़ाने पर अखिल का मुंबई आना, दर-दर की ठोकरे खाना और अंतत: स्कीझोफ्रेनिया का शिकार हो जाना एक हादसा है। लेकिन तीन महीनों के छोटे से अंतराल में इस बीमारी से उबर पाना, एक बड़ी उपलब्धि भी है। इसका श्रेय रमेश नामक व्यक्ति को मिलता है, जो कि श्रद्धा नर्सिंग होम का सक्रिय कार्यकर्ता है। वह खुद इस पीड़ा से गुजर चुका है। रमेश अखिल को बोरिवली की किसी सड़क से उठाकर श्रद्धा में लाया था। इलाज के बाद अखिल अच्छा हो गया। उसके पिताजी को खबर करने पर वे उसे ले गए।

बाप-बेटे के पुनर्मिलन के क्षण आह्लादपूर्ण थे। लेकिन अखिल इस बीमारी का क्रानिक मरीज बन जाता तो? एक नहीं कई सारे 'तो' से अखिल अब उबर गया है।

अकेले में अपने विषय में बातें करती हुई आवाजों का सुनाई देना, दृष्टिभ्रम होना तथा बिना अस्तित्ववाली चीजों का दिखाई देना आदि स्कीझोफ्रेनिया के लक्षण हैं। रमेश ने जब घर छोड़ा था, तब उसे किसी पुरुष की आवाज सुनाई पड़ती। ''तुम सड़क पर ही घूमते रहना। घर मत जाना, वरना कोई तुम्हें मार डालेगा। घर की, घर के लोगों की दाद आने के बावजूद वह घर नहीं गया। रमेश के घर छोड़ने की वजह और आज श्रद्धा नर्सिंग होम का सक्रिय कार्यकर्ता बनने के दरमियान, किन-किन पड़ावों से वह गुजरा, उसी के शब्दों में।

''ऐसा कुछ होने के पीछे एक नहीं, अनेक कारण थे। शादी का टूटना पहला और अहम कारण था। निम्न मध्यम वर्गीय परिवार। परिवार में माता-पिता, बीवी और दो बच्चे थे। मैं किसी प्राइवेट कंपनी में काम करता था। मेरे सहयोगी कारीगर मुझ पर चोरी का इल्जाम लगाते। ईमानदारी से काम करने पर भी बास मुझे पैसा नहीं देता था। मैंने नौकरी छोड़ दी। तनाव बढ़ता गया। दिमाग पर इन बातों का गहरा असर हुआ मैं सनकी हो गया। मेरी शादी टूट गई। अपनी खराब मनोदशा में मैं लोगों को मार देता। लोग भी मुझे मारते। नौबत यहां तक आई कि मुझे एक दिन के लिए जेल में रहना पड़ा। मैं पूरी तरह मानसिक रोगी बन गया था। यहां-वहां भटकना। लोगों को इशारे करना। मुझे दृष्टिभ्रम भी होने लगा था। मैं कांदिवली, बोरिवली की सड़कों पर भटकता रहता। मां मुझे खोजते हुए आती, मेरे लिए खाना ले आती। कांदिवली के स्विमिंग पूल के पासवाली गली में मैं घंटों बैठा रहता। एक दिन डा. दंपत्ति मुझे लेने आए तो मैंने उन्हें भी भला-बुरा कहा। वे मुझे नर्सिंग होम में लाए, मेरा इलाज किया। लेकिन उस दौरान उन्होंने मेरी कितनी ही ज्यादतियों को झेला होगा? छह महीने में मैं ठीक हो गया।''

एक महिला मरीज थी, जिसे लगता था कि वह मदर मेरी है। मदर मेरी वर्जिन थीं। वह भी वर्जिन है, ऐसा उसे लगता था। इसी प्रकार के विचारों में खोए रहते हैं ये मरीज। ऐसी ही किसी सोच का गहरा असर उनके दिमाग पर हावी होने लगता है। तनाव और डिप्रेशन के कारण वे अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं। वे पूर्णतया मनोरोगी बन जाते हैं। दवाइयां लेने पर मानसिक स्थिति तो कुछ हद तक ठीक हो जाती है, लेकिन उनकी सोच में कभी-कभार कोई तब्दीली नहीं आती। श्रद्धा फाउंडेशन में श्री प्रकाश गोखले से बातचीत करके कुछ ऐसा ही महसूस हुआ। उन्हीं के शब्दों में।

''करीब छह-सात साल पहले बीमारी के कारण घर छोड़ दिया था। मुझे क्या हुआ था, ठीक से याद नहीं है। मैंने कलकत्ता से प्रबंधन में एमए की डिग्री प्राप्त की है। परिवार में भाई, बीवी और बच्चे हैं। फिलहाल तो यहां रहते हुए अच्छा महसूस हो रहा है। अच्छा हो जाने पर क्या करूंगा, कहां जाऊंगा कह नहीं सकता। घर छोड़ा था तब भी नहीं सोचा था। अब मेरी उम्र ५० साल की हो चुकी है। अब कोई महत्वकांक्षाएं नहीं बची हैं। यदि श्रद्धा पुनर्वसन केंद्र में आने वाले अन्य लोगों को लगता है कि उनका पुनर्वसन हो रहा है तो मेरा भी हो रहा है।

बहरहाल, प्रकाश गोखले के दिमाग पर किसी बात का गहरा असर हुआ हो ऐसा लगता है। शायद परिवार में अनबन रही हो। हो सकता है अपनी नौकरी को सही अंजाम न दे पाए हों।

दवाईयों के अलावा इन मरीजों को सही मार्गदर्शन देना, उन्हें समझाना, उनसे प्यार से बातें करना भी बहुत जरूरी होता है। इसमें व्यावसायिक चिकित्सक की भूमिका भी अहम होती है।

''एक्टीपीटी थेरापी महत्वपूर्ण होती है, जिसके अंतर्गत मनोरंजनात्मक गतिविधियां होती हैं जैसे गेम्स, पजल्स, ड्राइंग, पेंटिंग आदि। इन सबसे मरीजों की छिपी हुई प्रतिभा उजागर होती है। महिलाओं को सिलाई- बुनाई आदि सिखाया जाता है।'' बताती हैं व्यावसायिक चिकित्सक अमरप्रीत कौर।

इस प्रकार की गतिविधियों से इन मरीजों की एकाग्रता और सहनशीलता बढ़ती हैं। इससे इनकी भावनात्मक जरूरतों को पुष्टि मिलती है। उनके साथ साइको ड्रामा भी खेला जाता है। उनसे छोटे-छोटे संवाद बुलवाए जाते हैं। इससे उनके एक-दूसरे के साथ के संबंध सुधरते हैं।

सभी चित्र : दिव्या जैन

MUMBAI
News

HINDI

JANSATTA

OCTOBER 1999

जनसत्ता

सोमवार, ११ अक्तूबर १९९९

जनसत्ता • मुंबई

लावारिस पागलों का मसीहा

• मुलाकात •

'अब न दे हमें ये सुबह
ऐ मालिक
सितारों से टिमटिमाती एक रात दे दे
वीरान जिंदगी से एक बेबस को
आबाद कर दे
नापाक कदमों को दो गज जमीन के नीचे
एक आस दे दे
अब न दे हमें ये सुबह
ऐ मालिक
लाखों करोड़ों, सैकड़ों रातों से
हमें भी एक रात दे दे।'

ये पंक्तियां किसी कवि की नहीं बल्कि श्रद्धा नर्सिंग होम (मानसिक उपचार और पुनर्वसन केंद्र) चलाने वाले मनोचिकित्सक डाक्टर भरत वातवानी की हैं।

इन नर्सिंग होम में रास्ते पर घूमते-फिरते पागलों या मानसिक रोगियों को उठाकर लाया जाता है, उनका मानसिक उपचार और पुनर्वसन किया जाता है। श्रद्धा नर्सिंग होम, बोरीवली शांति आश्रम के पास है। प्रस्तुत है डॉक्टर भरत वातवानी से एक छोटी सी मुलाकात।

• आपके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना ?

मेरा विवाह, मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना है, क्योंकि मेरा विवाह यदि इतनी संवेदनशील स्त्री के साथ नहीं हुआ होता तो शायद मैं किसी भी चैरिटेबल गतिविधि में लंबे अर्से तक काम नहीं कर सकता था। किसी भी तरह की चैरिटेबल गतिविधि में लंबे समय तक काम करने के लिए समर्पण की भावना, रुपया, समय, कठिनश्रम, संवेदनशीलता तथा एक सही जीवनसाथी की आवश्यकता होती है।

• आपको इस व्यवसाय में आने की प्रेरणा कहां से मिली ?

मैं अपने बचपन में बहुत ही कठिन समय से गुजरा हूं और मुझे लगता है कि मुझमें दूसरे व्यक्ति की मन:स्थिति समझने की काबिलियत है और मैं ईश्वर का शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने मुझे दूसरों की भावनाएं समझने की शक्ति दी है।

मैंने यह क्षेत्र इसलिए भी चुना क्योंकि मुझे महसूस हुआ कि इसी पेशे के माध्यम से मैं ज्यादा से ज्यादा लोगों की मदद कर सकूंगा, जो मानसिक व्यथा से गुजर रहे हैं।

• आपको सबसे ज्यादा खुशी कब महसूस होती है ?

जब हम रास्ते से किसी मानसिक रोगी को उठाकर लाते हैं और वह ठीक होकर अपने घर वालों से मिलता है, उस क्षण रोगी और परिवार वालों के चेहरों पर जो खुशी होती है उसे देखकर।

• आप मरीजों को कैसे लाते हैं ?

ऐसे मानसिक रोगी जो रास्ते पर पड़े रहते हैं, अपने आप से हंसते-बात करते, लंबे-लंबे बाल, गंदे और फटे हुए कपड़ों में रहते हैं- ये लोग भिखारी नहीं होते। ऐसे २०-३० वर्ष की आयु के मानसिक रोगियों को हम रास्ते पर से उठाकर अपने नर्सिंग होम में लाते हैं। उनका मानसिक उपचार दवाइयां, खाना, कपड़ा सब कुछ अपने पास से देते हैं और जब वे ठीक हो जाते हैं तो उनका घर ढूंढ़कर उनके घर तक पहुंचाते हैं।

ये रोगी अक्सर मानसिक अस्वस्थता के कारण अपना घर-बार छोड़कर रास्ते पर भटकते रहते हैं। लोग इनकी तरफ ध्यान नहीं देते, क्योंकि लोगों को लगता है वह व्यक्ति जानबूझकर पागलपन का दिखावा कर रहा है या नशा लेकर घूम रहा है।

• आजकल मानसिक रोगों की दर ज्यादा बढ़ रही है। इसका क्या कारण है ?

समाज में उदासी ज्यादा है। लोग एक दूसरे की भावनाएं नहीं समझते। संयुक्त परिवार का प्रचलन खत्म होता जा रहा है। फिल्मों और टेलीविजन का प्रभाव ज्यादातर खराब ही है। लोग कम समय में बिना मेहनत के ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने की शिक्षा लेना चाहते हैं। बेकारी, बेरोजगारी भी कारण हैं।

• मानसिक रोगों पर किस तरह काबू पाया जा सकता है ?

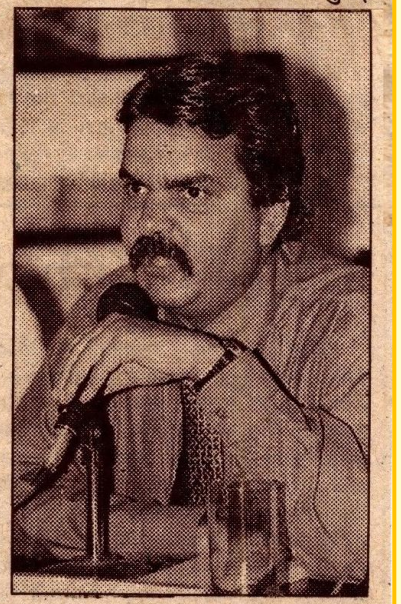

डा. भरत वातवानी

लोगों को जब यह महसूस हो कि हर किसी को एक दिन मरना है। मृत्यु और दुख का एक संबंध है। दुख हर किसी के साथ है। जो हम लोगों को एक साथ बांधता है, वह सुख नहीं दुख है। यह हम अपने आप के साथ ही दूसरों में भी महसूस करें, तो हम समाज में फैले हुए दुख को दूर कर एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकेंगे।

• हाल ही में आपका एक कविता संग्रह छपा है। तो आपने मनोचिकित्सा और कविता में किस तरह तालमेल बिठाया ?

अक्सर जब मैं किसी मानसिक रोगी का इलाज कर रहा होता हूं या ऐसे रोगियों को सड़क पर पड़ा देखता हूं, तो उनके लिए बहुत कुछ करने की मेरी इच्छा होती है पर दुर्भाग्यवश मैं हर किसी के लिए तो सब कुछ नहीं कर सकता। तब ऐसे समय में मेरा मन उदास हो जाता है। और यह उदासी मेरी कविताओं के रूप में बाहर आती है।

• डा. जयश्री शास्त्री

NATIONAL

News

HINDI

AANKHEN - PART 1 & 2

Maharashtra

APRIL 2006

मुंबई की सड़कों पर विक्षिप्तावस्था में मिलने वाले श्रद्धा में इलाज के बाद खुशगवार ज़िन्दगी जीते है.

आओ 'श्रद्धा' से संवारे ज़िन्दगी

भारत की सड़कों पर भटकने वाले ये हजारों मानसिक रोगी अकेले बदहाल, जो जीवित तो हैं पर ज़िंदा होने का एहसास नही है, न ही समाज के प्रति कोई सरोकार है. ये तो खुले आसमान के नीचे फुटपाथ या सड़क के किसी किनारे अस्त-व्यस्त अवस्था में अपनी ज़िन्दगी के बचे हुए दिन गुजार रहे होते है. जो मनुष्य तो हैं पर मनुष्य होने की गरिमा खो चुके है.

''एक पत्थर की भी तक़दीर संवर सकती है शर्त ये है कि उसे करीने से तराशा जाए''

जावेद ख़ानम
मुंबई.

ये पंक्तियां व्यक्ति के भीतर छुपी आस्था, श्रद्धा, आत्मविश्वास और उस कर्त्तव्यबोध को प्रमाणित करती है. जिसके बल पर एक साधारण व्यक्ति भी असाधारण कारनामों को अंजाम दे सकता है. शर्त यही है कि पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ कोशिश की जाये. जैसे रास्ते पर पड़ा हुआ एक पत्थर जिसे आने-जाने वाला हर व्यक्ति हिकारत की नज़र से देखता है और ठोकर मार जाता है. यदि यही पत्थर किसी संगतराश के हाथ लग जाऐ तो वे इस पत्थर को अपनी कलात्मकता व प्रतिभा के अनुरूप तराश कर एक ऐसी प्रतिमा बना सकता है जो देखने वालों के होश उड़ा दे. ठीक उस रास्ते के पत्थर जैसी ही स्थिति है हमारे देश के उन हज़ारों मानसिक रोगियों की जिन्हें ना तो वर्तमान की सुध है और न ही भविष्य की कोई चिंता है. भारत की सड़कों पर भटकने वाले ये हजारों मानसिक रोगी अकेले बदहाल, जो जीवित तो हैं पर ज़िंदा होने का एहसास नही है, न ही समाज के प्रति कोई सरोकार है. ये तो खुले आसमान के नीचे फ़ुटपाथ या सड़क के किसी किनारे अस्त-व्यस्त अवस्था में अपनी ज़िन्दगी के बचे हुए दिन गुज़ार रहे होते है. जो मनुष्य तो है पर मनुष्य होने की गरिमा खो चुके है. रास्ते से आते- जाते अकसर आपकी नज़र इन लोगों पर पड़ी होगी. जिसे देखकर शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो जिसका मन व्याकुल न हुआ हो. रास्ते पर भटकने वाले इन मानसिक रोगियों के जीवन को नई दिशा देने का प्रयास मुंबई की एक संस्था ''श्रद्धा पुनर्वसन संस्था'' द्वारा किया जा रहा है. प्रस्तुत है

मुंबई के उपनगर दहिसर (पश्चिम) में न्यू लिंक रोड के पास, कांदरपाडा में स्थित है ''श्रद्धा रिहॅबिलेटेशन फाउंडेशन'' का दो मंजिला अस्पताल, जिसमें देश भर की सड़कों पर भटकने वाले लावारिस मानसिक रोगियों का मुफ्त इलाज होता है और इलाज के पश्चात इनके पूनर्वसन का दायित्व भी संस्था द्वारा पूरा किया जाता है.''आँखे'' रिपोर्टर जब इन रोगियों से मिलने व इनके उपचार और रख- रखाव से संबंधित जानकारी के लिए श्रद्धा के संस्थापक डॉ. भरत वातवानी एम.डी. (मनोचिकित्सक) से मिलने अस्पताल पहुंची तो वहां का वातावरण बहुत शांत था. साफ- सुथरे इलाके में स्थित इस अस्पताल को देखकर रास्ते से गुज़रने वाले व्यक्तियों को शायद ही इस बात का आभास हो पाता हो, कि यहाँ मानसिक रोगियों की सुरक्षा के लिए गेट में अंदर से हमेशा ताला लगा रहता है.

ऊषा
आज- पहले

जैसे ही मैने अस्पताल में कदम रखा हॉल में बैठे तमाम लोगों का ध्यान भंग हो गया. और सब अपना काम छोड़कर अस्पताल में आने वाले इस नये मेहमान को असमंजस से देख रहे थे, लेकिन कोई प्रतिक्रिया उनकी तरफ से नहीं हुई थी. हॉल में दरवाज़े के पास तीन युवक़ कैरम बोर्ड खेल रहे थे. जबकि दो व्यक्ति इन पर निगरानी रखे हुए थे. दूसरी तरफ कुछ महिलाएं खिलौने और दिमागी कसरत वाले गेम लेकर उन्हें तरतीब देने का प्रयास कर रहीं थी, जबकि इनमें से कुछ महिलाऐं सुई- धागे की मदद से कपड़े पर कड़ाई कर रहीं थी और नर्स व महिला डॉक्टर इन्हें प्रशिक्षण दे रही थी. इन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानो बच्चे अपने परीक्षा की तैयारी में लीन हों. इनमें से एक महिला मुझे निरंतर देख रही थी. उसे देखकर लगता था कि वह कुछ कहना चाहती है परंतु कह नहीं पा रही है.

इसी कशमकश के बीच डॉ. भरत वातवानी वहां पहुंच गये और ठीक सामने वाले कैबिन में बैठकर हम बात करने लगे. 10 मिनट बाद एक औरत कैबिन में आ गई. नर्स व दूसरी डॉक्टर ने उसे बाहर ले जाने का काफी प्रयास किया लेकिन वह अपनी बात कहे बिना जाना नहीं चाहती थी. यह वही महिला थी जो मुझे लगातार देख रही थी. डॉ. भरत के पूछने पर उसने अपनी बात कही, तो डॉ. भरत उसे दिलासा देते हुए समझाने लगे कि जल्दी ही वे उसे अपनी गाड़ी से उसके घर छोड़ आयेंगे. उन्होंने बताया कि अनीता को दस दिन पहले पागलपन की अवस्था में श्रद्धा में लाया गया था. क्योंकि उसका रोग बहुत पुराना नहीं था इसीलिए जल्दी ही उसे सब कुछ याद आ गया और अब यह अपने घर जाने की रट लगाये हुए है जबकि डॉक्टर मानते है कि उसे अभी थोड़े आराम की जरूरत है और कमज़ोरी भी बहुत है.

''श्रद्धा रिहबिलेटेशन फाउँडेशन'' भारत की एक मात्र संस्था है जो 1988 से देश की सड़कों पर भटकने वाले युवा मानसिक रोगियों को समर्पित है. डॉ. भरत बताते है कि उन्हें बचपन से ही ऐसे लोगों से हमर्ददी थी इसलिए डॉक्टर बनने के पश्चात् उन्होंने ''श्रद्धा'' के निर्माण का सपना देखा था. जो 1991 में जाकर पूरा हुआ. डॉ. भरत बताते हैं कि शुरूआती दौर में वे और

प्रदेश-महाराष्ट्र

कब और कैसे होता है ये मानसिक रोग ?

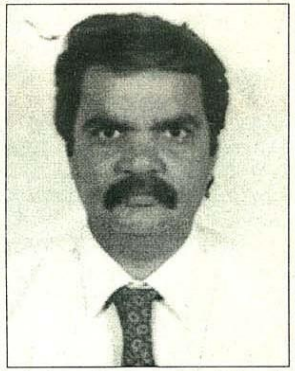

डॉ. भरत वातवानी बताते है कि सिज़ोफ्रेनिया नामक ये रोग किसी भी व्यक्ति को हो सकता है. अमूमन इस रोग का शिकार व्यक्ति निचले तबके के होते है. जो गरीबी- बेरोज़गारी और आर्थिक व पारिवारिक परिस्थितियों के कारण मानसिक रोग का शिकार होते है. ऐसा नहीं है कि यह रोग केवल गरीब को ही अपना निशाना बनाता है बल्कि सुशिक्षित व अमीर घराने के लोग भी इसकी चपेट में आ जाते है. ये मानसिक रोग 15 वर्ष की आयु से शुरू होता है. रोग का कारण बताते हुए वह कहते है कि ये रोग विचारों के कारण उत्पन्न होता है. दरअसल एक समय में एक से अधिक विचार दिमाग में आने से दिमाग में विचारों का दबाव बढ़ जाता है. यूँ कहें कि विचारों का ट्रैफिक जाम हो जाता है और व्यक्ति इन विचारों के चक्रव्यूह में कुछ इस तरह फंस जाता है कि अपने सोचने समझने की क्षमता ही खो बैठता है. और पागलपन की हरकते करने लगता है. रोग के लक्षण यही है कि व्यक्ति अकेले में खुद से बात करते है इशारे करते है खाने- पीने व रहने का सलीका खो देते हैं ऐसी अवस्था में परिवार के सदस्यों को लगता है, कि उन पर किसी भूत प्रेत का साया है. और रोग का सही इलाज नहीं करवाते बल्कि झाड़- फूंक और तंत्र- मंत्र के चक्कर में पड़ जाते है. ऐसे में रोग पुराना और गहरा होता जाता है और एक दिन ऐसा भी आता है कि बदहवासी की हालत में ये मानसिक रोगी अपना घर- द्वार छोड़कर सड़कों पर भटकना शुरू कर देते हैं एक गांव से दूसरे गांव तक घूमते- घूमते ये कब बड़े शहरों की सड़कों पर पहुंच जाते है. इन्हें खुद भी पता नहीं होता है. यही फुटपाथ इनका एकमात्र ठिकाना बन जाता है और एक दिन यही दम तोड़ देते हैं लावारिस होने की वजह से कभी आवारा कुत्ते इनकी लाश खींचते है और अंततः बी.एम.सी. की गाड़ी इन्हें उठाकर अंतिम यात्रा करती है.

डॉ. भरत बताते है कि श्रद्धा का एक आश्रम मुंबई के पास करजत में बनाने की योजना चल रही है. जगह तो खरीद ली गयी है लेकिन बजट अधिक होने के कारण दूसरे काम शुरू नहीं हुए है. वे इसे एक संपूर्ण आश्रम बनाना चाहते है. जिसमें खेती- बाड़ी, मुर्गीपालन व छोटे- मोटे व्यवसाय भी शुरू किया जा सके. ताकि जिन रोगियों के परिवार के सदस्य उन्हें अपने साथ नहीं रखना चाहते है या जिनका कोई दुनिया में नही है ऐसे रोगियों का पुनर्वास हो सके ताकि उन्हें अपनी जिन्दगी संवारने का मौका मिल सके. बता दें कि अधिक उम्र वाले व्यक्ति के माता- पिता नहीं होते. ऐसे में इन रोगियों के बहू- बेटे- बेटी वगैरा का पता तो चल जाता है परंतु ये लोग इनके पागल होने की बात सुनकर इन्हें अपने साथ नही रखना चाहते. जबकि वृद्धाश्रम वाले भी इन्हें अपने यहां आसरा देने से कतराते हैं. ऐसे में इन अधिक उम्र वाले लोगों का जीवन नर्क से बदतर हो जाता है और डॉक्टर होने के नाते एक बार किसी रोगी को ठीक करने के बाद उसे दोबारा पागल होने के लिए सड़क पर नहीं छोड़ा जा सकता. हमारे पास इनके पुनवर्सन की कोई व्यवस्था नही है. हाँ, कई युवकों को मैंने उपचार के उपरांत नौकरी दिलवाई है लेकिन यह सब इतना आसान नहीं है. इसलिए हम ये आश्रम बनाना चाहते है. डॉ. भरत के मुताबिक श्रद्धा में एक रोगी पर एक महीने में 3,000 तक का खर्च होता है. एक रोगी को ठीक होने में एक महीने से लेकर तीन महीने तक का समय लगता है. इसीलिए हम युवा रोगियों पर ज्यादा ध्यान देते हैं क्योंकि इनका रोग अधिक पुराना नहीं होता और दूसरे इनके माता- पिता के मिलने की संभावनाऐं भी अधिक होती हैं.

संस्था के केवल दो ट्रस्टी है देक्षश परिख (संपादक, प्रोजेक्ट मॉनिटर) और अशोक मोहनानी (निदेशक, एकता ग्रुप) इसके अलावा मार्क बोस्टन एच. गोल्डी और कं, लंडन का सहयोग भी श्रद्धा को मिला है. लेकिन महाराष्ट्र सरकार की तरफ से अब तक कोई आर्थिक सहायता नहीं मिली है.

डॉ. भरत तमाम देश वासियों से अपील करते है कि यदि एक व्यक्ति अपनी क्षमता व हैसियत के अनुसार किसी एक रोगी के इलाज व पूनर्वसन का जिम्मा उठायें तो इन तिरस्कृत लोगों की जिन्दगियों को सहज, सामान्य बनाया जा सकता है. ■

NATIONAL
News

HINDI

AANKHEN - PART 3
Maharashtra

APRIL 2006

उनकी पत्नी डॉ. स्मिता वातवानी जो अवैतनिक पुलिस मनोचिकित्सक है. दोनों सड़क से किसी एक मानसिक रोगी को उठाकर अपने क्लीनिक लाते थे. तथा उसके उपचार के उपरांत सही होने पर स्वयं उसे उसके घर तक पहुंचाते थे. जगह के अभाव के कारण ये सिलसिला कई वर्षों तक चला लेकिन वे पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे. कई बार जगह के अभाव के कारण चाहकर भी वह रोगी का उपचार नहीं कर पाते थे. इसीलिए डॉ. भरत ने अस्पताल की स्थापना के प्रयास तेज किए और इसी संदर्भ में 1991 में मुंबई की जहांगीर आर्ट गैलरी में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया. जिसमें बिकने वाली तमाम पेंटिंग्स से जमा की गयी राशि चित्रकारों ने श्रद्धा को डोनेट की, जिसकी सहायता से दहिसर पश्चिम के कांदरपाड़ा में 30 बिस्तरों वाली दो मंजिला इमारत की स्थापना की जा सकी.

यहां पर रोगियों के रहने -खाने व इलाज इत्यादि की पूर्ण व्यवस्था है. डॉ. भरत वातवानी, डॉ. स्मिता वातवानी व डॉ. घनश्याम भिमानी के अलावा नर्सें, वॉर्ड बॉय व अन्य कई समाज सेवक भी है जो अपने काम से समय निकाल कर रोगियों की देखभाल में अपना सहयोग देते है.

डॉ. भरत के अनुसार पिछले 17 वर्षों में वे 1000 से अधिक मानसिक रोगियों का उपचार करने के पश्चात उनके परिवारों से मिला चुके है. वे बताते है कि हमारे टारगेट युवा मानसिक रोगी है. अब तक श्रद्धा के माध्यम से जिन रोगियों का इलाज व पूनर्वसन किया गया वे श्री नगर, बैंगलोर, नेपाल, कोलकता, हैदराबाद, दिल्ली, केरल, उड़ीसा, नेपाल, यू.पी. जैसे दूर दराज़ के इलाकों के थे. श्रद्धा में अब भी 25 रोगियों का इलाज चल रहा है जो देश के अलग- अलग हिस्सों से संबंध रखते हैं.

40 वर्षीय रोज़ी से बात करने पर आपको ये

संजय धाकड़े
पहले-आज

एहसास तक नहीं होगा कि वे मानसिक रोगी हैं. रोज़ी पढ़ी- लिखी अच्छे परिवार की महिला है जो कुछ महीने पहले श्रद्धा के वॉर्ड बॉय द्वारा यहां लायी गयी थी. उस समय रोज़ी की हालत काफी गंभीर थी, लेकिन कई महीने के उपचार व डॉक्टर और नर्स की कोशिश सफल हो गयी. और अब रोज़ी 90% तक ठीक हो चुकी हैं. उसे अपनी बीती हुई ज़िन्दगी के बारे में काफी कुछ याद आ गया है. बात- चीत के दौरान रोज़ी ने अमेरिका जाने की इच्छा व्यक्त की. दरअसल रोज़ी पिछले कई वर्षों अमेरीका में नौकरी कर रही थी लेकिन उसके अचानक पागल होने के कारण उसे अमेरिका से भारत भेज दिया गया और रोज़ी पागलपन की हालत में मुंबई की सड़कों, फुटपाथों पर भटकने लगी. तभी वार्ड बॉय की नज़र रोज़ी पर पड़ी और वह उसे श्रद्धा ले आया. ठीक होने पर रोज़ी ने अपने भाई के विषय में बताया जो मुंबई के मलाड़ इलाके में रहता है. लेकिन उसने रोज़ी को अपने साथ रखने से इंकार कर दिया. रोज़ी की बहन गोवा में रहती हैं. डॉ. भरत रोज़ी को उससे मिलवाने गोवा गये थे. लेकिन मुलाकात नहीं हो पाई. इसलिए रोज़ी

नागो बाई
पहले-आज

अब तक श्रद्धा में है. भाई के व्यवहार से दुखी रोज़ी दोबारा अमेरिका जाना चाहती है. इसलिए रोजी जिस भी नये व्यक्ति से मिलती है अमेरिका जाने की इच्छा व्यक्त करती है. ये कहानी केवल रोज़ी की ही नही है बल्कि यहां पर इलाज करवाने वालों की अपनी- अपनी दर्दभरी दास्तान है. जिसे व्यक्त करने में उन्हें कोई संकोच नहीं है.

20 वर्षीय फुलवा यू.पी. की रहने वाली है वह भी इसी रोग का शिकार होकर अपने घर परिवार से अलग हो गयी और बदहवासी की हालत में कब मुंबई पहुंच गयी उसे कुछ याद नहीं. फुलवा अब स्वस्थ है और जल्दी ही अपने घर भी चली जाएगी. लेकिन यहां पर गुज़ारा हुआ समय व नये दोस्तों को वह हमेशा याद रखेगी. वे डॉक्टरों व अस्पताल के अन्य सदस्यों का आभार मानते नहीं थकती. यहां पर कई युवक है जो नौकरी की तलाश में आये थे लेकिन मुंबई की चकाचौंध वाली जिंदगी में कहीं अपना वजूद खो बैठे है. कुछ नौकरी न मिल पाने के सदमें को सहन नहीं कर पाये तो कुछ के होश केवल मुंबई दर्शन ने ही उड़ा दिए. जबकि इनमें से कुछ ऐसे भी है. जो बदहवासी की हालत में ही मुंबई की सड़कों तक पहुंच गये.

विडंबना तो यह है कि इनमें से कितनों के परिवार वाले तो ये मान चुके है कि वह हमेशा के लिए अपने जिगर के टुकड़े को खो चुके हैं. ऐसे में जब डॉक्टर इन व्यक्ति को साथ लेकर उनके परिवार के समक्ष पहुंचते है तो पूरा वातावरण खुशियों से सराबोर हो उठता है. इन लोगों को समझ में नही आता कि वे किन शब्दों मे इनका धन्यवाद करें.

डॉक्टर बताते है कि लंबे अरसे तक उपचार के दौरान एक लगाव इन रोगियों से हो जाता है. इसलिए इन्हें छोड़कर आते समय डॉक्टर भी रो देते है, बहुत ही मार्मिक होता है वो लम्हा. ■

NATIONAL

News

HINDI

NAVBHARAT

APRIL 2006

नवभारत

मुंबई, रविवार, 9 अप्रैल 2006

मनोरोगियों का जीवन संवारता है श्रद्धा फाउंडेशन

कार्यालय संवाददाता

मुंबई. आप रास्ते से गुजर रहे हों और आपको बदहाल अवस्था में मैले-कुचैले कपड़े पहने कोई दिख जाए जो आप पहली नजर में उसे भिखारी समझते होंगे. आपका सोचना कई बार गलत भी हो सकता है. सड़कों पर ऐसी हालत में घूमनेवाले अपने घर से बिछड़े मानसिक रूप से असंतुलित रोगी भी होते हैं. ऐसे ही मानसिक रोगियों का इलाज कर उन्हें उनके परिवार से मिलाने के कार्य में महानगर की श्रद्धा रिहॅबिलिटेशन फाउंडेशन संस्था जुटी है.

मध्यप्रदेश के सिमोनी जिले का आदिक (15 वर्षीय) अपने परिवार से पिछले 5 वर्षों से बिछड़कर रास्तों पर भटकता हुआ बदहाल अवस्था में अपना जीवन गुजार रहा था. जनवरी 2006 में कर्जत शहर के रिक्शा चालकों ने उसे दयनीय हालत में श्रद्धा रिहॅबिलिटेशन फाउंडेशन के हवाले किया. वहीं दूसरी तरफ आदिक के घरवालों ने 5 वर्षों से गायब अपने चिराग के जिंदा होने की आस लगभग छोड़ ही दी थी. दो माह तक आदिक का इलाज करने के बाद जब श्रद्धा फाउंडेशन के कार्यकर्ता कुछ दिनों पहले

जब उसे घर छोड़ने गए तो आदिक के परिवार वालों की आंखों से खुशी के आंसू बंद होने का नाम नहीं ले रहे थे. आदिक की तरह ही मध्यप्रदेश के सागर जिले का युवक पप्पू पिछले 2 वर्षों से अपने परिवार से जुदा होकर बदहाली में जीवन व्यतीत कर रहा था. श्रद्धा फाउंडेशन के कार्यकर्ता की नजर रास्ते पर घूमते हुए पप्पू पर पड़ी और करीब 2 माह तक उसका इलाज करने के बाद आदिक के साथ ही फाउंडेशन के कार्यकर्ता उसे उसके परिवार के पास लेकर गए. इस दौरान फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं ने गांववालों को पप्पू की मानसिक रूप से असंतुलित रहने की जानकारी दी, क्योंकि अक्सर गांवों व छोटे कस्बों में इस बीमारी को लोग भूत-प्रेत का साया समझने लगते हैं. फाउंडेशन ने इस संबंध में लोगों के बीच जागरूकता फैलाने का कार्य भी शुरू किया है. फाउंडेशन के संस्थापक ट्रस्टी मनोचिकित्सक डॉ. भरत वाटवाणी ने बताया कि वे यह कार्य वर्ष 1988 से कर रहे हैं और संस्था ने पिछले दो दशकों में 800 के करीब ऐसे लोगों को देश के विभिन्न राज्यों में रह रहे उनके परिवार से मिलाया है. डॉ. वाटवाणी ने बताया कि संस्था पहले दहिसर में ऐसे लोगों का इलाज करती थी, जहां 30 से 40 लोगों के रहने की व्यवस्था थी. संस्था ने हाल ही में ऐसे लोगों के इलाज करने व रहने की व्यवस्था कर्जत स्थित वानगांव में की है, जहां 100 लोग रह सकते हैं. संस्था द्वारा कर्जत में इस समय 43 लोगों का इलाज किया जा रहा है. संस्था ने जनता से आह्वान किया है कि अगर आपको ऐसी अवस्था में सड़कों पर घूमता कोई व्यक्ति या महिला मिले तो डॉ. वाटवाणी से मोबाईल नंबर 9820422204 पर संपर्क कर सकते है.

NATIONAL
News

HINDI

NAVBHARAT TIMES

JUNE 2008

नवभारत टाइम्स

मुम्बई, रविवार, 29 जून, 2008, मूल्य तीन रुपये

पंजीयन क्रमांक एमएच/एमआर/साउथ-108/2006-08, आर

लोग

हिसर स्थित श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन असहायों-उपेक्षितों-ठुकराये हुओं का दूसरा घर है। फाउंडेशन के डा. भरत वतवानी और डा. स्मिता वतवानी रेल और बस स्टेशनों, सड़कों और फुटपाथों से अर्धविक्षिप्त व मानसिक रूप से बीमार लोगों को ढूंढ कर लाते हैं, फिर उनके इलाज से लेकर खाने-ठहरने, पुनर्वास और उनके बिछड़े घरों का पता लगाकर वापस वहां भिजवाने की जिम्मेदारी तक सहर्ष निभाते हैं।

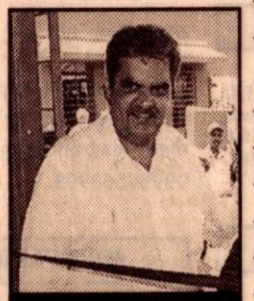

डा. भरत वतवानी

इस डाक्टर दम्पति के ऐसे मुफ्त मरीजों में एक बड़ी तादाद फिल्मी सितारे की ख्वाहिश पाले वे युवक हैं जिन्हें अक्सर रेल पुलिसवाले ही खुद उनके पास पकड़कर ले आते हैं।

'उन्हें दुरदुराइये नहीं। ये पागल और भिखारी नहीं, बस हालात के मारे हैं' अनुभवों की कड़वाहट भरत के स्वर में झलक आयी है-'हमारी ही तरह सेहतमंद और सेंटिमेंटल। कुदरत की नाइंसाफी के मारे। बस थोड़ा सा एबनार्मल हैं।' वे हर जगह बताते फिरते हैं, 'तनिक प्यार, थोड़ी समझ और मामूली सी मदद। उन्हें ठीक किया जा सकता है। क्या आप इतना भी हम नहीं कर सकते?' उनका कविता संग्रह 'अलोन, आइसोलेटेड एंड लोनली' इन्हीं अहसासों का बयान है। पिछले दो साल कर्जत से नौ किलोमीटर दूर इन बेघरबारों का आश्रय स्थल है पुनर्वास केंद्र 'श्रद्धा'। यहां वे उपचार पाते हैं और चंगा होकर जब अपना पता-ठिकाना बताने काबिल हो जाते हैं तो 'श्रद्धा' के कार्यकर्ता की मदद से घर भी पहुंच जाते हैं। जिन पांच फीसदी के परिजनों की 'श्रद्धा' के लोग खोज-खबर नहीं लगा पाते उन्हें आस-पास के गांवों में खेती-बाड़ी या दूसरे कामों में रोजगार देने की कोशिश की जाती है।

विमल मिश्र

MADHYA PRADESH
News

HINDI

DAINIK BHASKAR
Sagar

MAY 2012

डेढ़ दशक बाद अपनों के पास पहुंची संतोषी बाई

घर-वापसी

ससुराल पक्ष ने 15 साल पहले घर से निकाल दिया था, मायके में भी आसरा नहीं मिलने पर मानसिक स्थिति बिगड़ गई थी

नगर संवाददाता | सागर

15 साल पहले शहर से गायब हुई एक महिला को मुंबई के एक एनजीओ ने उसके परिवार से मिलवा दिया। इस महिला को उसके पति व अन्य परिजनों ने ठुकरा दिया था, जिसके बाद उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ गई थी। वापस आने पर पति व भाइयों ने एक बार फिर उसे अपनाने से इन्कार कर दिया, लेकिन उसकी बड़ी बहन उसे आसरा देने के लिए राजी हो गई। इस महिला का नाम संतोषी बाई रैकवार है और वह बंडा के नयाखेड़ा गांव की रहने वाली है।

केरल में पागलपन की स्थिति में मिली थी : मुंबई के 'श्रद्धा पुनर्वास केंद्र' नामक एनजीओ के कार्यकर्ता दास नागर के मुताबिक संतोषी बाई एक साल पहले उनके पास आई थी। उसे केरल की किसी संस्था ने पुलिस से छुड़वाकर यहां भेजा था। श्री नागर के मुताबिक 'सीजोफ्रेनिया' नाम की बीमारी की शिकार संतोषी बाई का हमारे पुनर्वास केंद्र में निःशुल्क इलाज किया गया। जब वह ठीक हो गई तो उसने खुद ही अपना पता बताया। उसका कहना था कि वह बंडा के नयाखेड़ा गांव की है।

सागर। संतोषी बाई (सलवार सूट पहने हुए) अपनी बहन मीरा व एनजीओ के कार्यकर्ता दास नागर के साथ।

पति ने घर से निकाला, मायके वालों ने ठुकराया : श्री नागर के अनुसार संतोषी को उसके पति व ससुराल पक्ष के लोगों ने घर से निकाल दिया था। इसके बाद वह अपने मायके गई तो वहां भी उसे सहारा नहीं मिला। इसी दौरान वह सीजोफ्रेनिया नाम की बीमारी की शिकार हो गई और एक दिन घर से गायब हो गई।

भाइयों ने कहा, हम नहीं पाल सकते : ठीक होने के बाद संतोषीबाई सागर आते समय एनजीओ कार्यकर्ताओं से कहती आ रही थी कि मुझे देखते ही मेरे भाई-बहन खुशी से उछल पड़ेंगे। लेकिन सागर पहुंचने पर उसे निराश होना पड़ा। उसके 5 भाइयों ने एनजीओ कार्यकर्ताओं से कहा कि वह संतोषी को नहीं अपना सकते। वह उसका खर्च नहीं उठा पाएंगे।

बहन ने दिया सहारा : डेढ़ दशक बाद लौटी संतोषी को भले ही उसके सगे भाइयों ने अपनाने से मना कर दिया, लेकिन उसकी बड़ी बहन मीरा ने उसे हाथों-हाथ लिया। मीरा नयाखेड़ा गांव में ही रहती है। उसने एनजीओ कार्यकर्ताओं को भरोसा दिलाया कि वह संतोषी बाई की ठीक तरह से देखभाल करेगी। उसकी जिम्मेदारी लेने पर कार्यकर्ताओं ने संतोषी को उसके हवाले कर दिया।

एनजीओ मुंबई से दवा भेजता रहेगा : एनजीओ कार्यकर्ता श्री दास के मुताबिक संतोषी अब मानसिक रूप से स्वस्थ है, लेकिन उसे सीजोफ्रेनिया से बचाव के लिए कुछ दवाएं लेना पड़ती हैं। चूंकि मीरा की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, इसलिए उसे हर महीने मुंबई से दवाएं भेजी जाएंगी।

1200 लोगों को पहुंचा चुका है घर

इस एनजीओ का संचालन मुंबई के जाने-माने मानसिक रोग विशेषज्ञ दंपती डॉ. भारत बाटवानी एवं डॉ. स्मृति बाटवानी द्वारा किया जा रहा है। 2006 में शुरू हुए इस एनजीओ ने अब तक 1200 ऐसे लोगों को उनके घरों तक पहुंचाया है, जो मानसिक रूप से बीमार होने के कारण अपने परिवार से बिछड़ गए थे। श्री दास के मुताबिक उनका एनजीओ को देश की विभिन्न व्यापारिक कंपनियों की आर्थिक मदद से संचालित हो रहा है।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

CHAUTHA SANSAR
Khandwa

MAY 2012

इंदौर से सर्वाधिक जिलों में प्रसारित

चौथा संसार

बुधवार 9 मई 2012

वर्ष 24 अंक 144 कीमत 2 रुपए 50 पैसे e-mail: cspress1@gmail.com, cspress@rediffmail.com Phone : 0731-3014444, 2575511-14 FAX : 0731-2575516 रजि. नं. आय.डी.सी./एम.पी./ 956/2012-2014

छोटे भाई के घर लौटने पर बड़े भाई का दिल भर आया, बिछड़े बेटे के मिलते ही मां ने उसे गले लगा लिया, परोपकारी संस्था के सदस्यों का धन्यवाद देकर उनका स्वागत करते समाजसेवी सुनील जैन।

सात माह से गुम युवक को परिवार से मिलाया

महाराष्ट्र की समाजसेवी संस्था खंडवा लेकर पहुंची खंडवा

खंडवा,(निप्र)। ईश्वरीय शक्तियां अपना कार्य निरंतर करती रहती है, प्रभु की भक्ति व पूजा-अर्चना कभी व्यर्थ नहीं जाती। यह इस बात का सूचक है कि माली कुंआ के समीप रहने वाली नर्मदाबाई यादव का २२ वर्षीय पुत्र गोपाल मानसिक रूप से कमजोर होने के कारण सात माह पूर्व २१ अक्टूबर को घर से लापता हो गया था। सात-आठ वर्ष पूर्व गोपाल अपने पिता हीरालाल यादव की मौत का सदमा बर्दाश्त नहीं कर पाया था और वह मानसिक रूप से तनाव में रहता था जिसके कारण उसने अपना घर छोड़ दिया था। परिजनों को गोपाल के चले जाने का काफी दुःख था और निरंतर मां हिंगलाज माता से यही प्रार्थना करते थे कि हमारा गोपाल ठीक हालत में हो और घर वापस आ जाए।

मंगलवार को करजत महाराष्ट्र की श्रद्धा पुनर्वासन संस्थान के समाजसेवी डॉ. पी.पाटिल एवं यशुदास स्टीफन प्रातः १०.३० बजे गोपाल यादव को लेकर माली कुंआ स्थित उनके निवास पहुंचे। अपने बालक गोपाल को देखकर मां नर्मदाबाई एवं भाई सचिन यादव ने उसे गले लगाया। परिवार में उसके आने से खुशी का माहौल बन गया। गुम हुए गोपाल के लिए उसके भाई सचिन ने मन्नत स्वरूप चप्पल छोड़कर दाढ़ी नहीं बनाने का फैसला लिया ईश्वर का चमत्कार ही रहा कि मानसिक रूप ग्रस्त गोपाल यादव परिजनों के बीच पहुंच गया। गोपाल को देखते ही नर्मदा बाई ने जो कि अपने बच्चे की लगभग आस छोड़ चुकी थी उसे पाकर गले लगा लिया और रोते हुए इतना ही कहा कि देवी मां ने एक मां को उसके बेटे से मिलाया।

समाज सेवी सुनील जैन ने बताया कि समाज सेवा ही ईश्वर सेवा है इसी के चलते बिछड़े लोगों को अपने संस्थान में परवरिश देकर उनके खाने-पीने ठहरने एवं उच्च इलाज की व्यवस्था करते हुए वर्ष २००६ से देश की पहली संस्था श्रद्धा पुनर्वासन जो मानसिक रूप से पीड़ित एवं घर से बिछड़े हुए लोगों की सेवा अपने संस्थान में करती है और जैसे ही परिजनों से बिछड़े हुए व्यक्तियों के परिवार की जानकारी प्राप्त होती है संस्था स्वयं अपने यहां कार्यरत समाजसेवी के माध्यम से उस द्वार तक पहुंचाती है। गोपाल यादव को भी डॉ. पी.पाटिल एवं यशुदास स्टीफन मुंबई से खंडवा लाए और परिजनों से मिलाया। इस अवसर पर इन समाजसेवियों का गोपाल के परिजनों के साथ ही समाजसेवी सुनील जैन, राजू यादव, पापन्ना यादव, रूपचंद यादव, दिलीप यादव, नितिन झंवर, टीनू राठौर, संतोष यादव, बबलू राठौर ने मुंबई से आए संस्था के समाजसेवियों का आत्मीय स्वागत करते हुए पुष्प माला पहनाई। गुमशुदा गोपाल यादव को खंडवा में छोड़ने के पश्चात माली कुंआ निवासी राजू यादव के द्वारा अपना वाहन उपलब्ध कराकर महिला संतोषी बाई एवं रेवाशंकर माहेश्वरी को खंडवा से रवाना किया गया। इसके पूर्व यह सभी दादाजी धाम भी पहुंचे जहां पूजा-अर्चना करने के पश्चात किशोर दा की समाधि व स्मारक देखने भी पहुंचे। वर्ष २००६ से सामजसेवी बाबा आमटे की प्रेरणा से भारत के रास्तों पर भटकने वाले मनोरोगियों की सेवा में डा. भारत वटवानी की देखरेख में मुंबई के समीप करजत महाराष्ट्र- में इस संस्थान का निर्माण किया जाकर अभी तक इस संस्था द्वारा बारह सौ बिछड़े लोगों को अपने परिजनों से मिलाने वाली इस संस्था के पास अभी भी ६० पुरूष एवं २० महिलाएं मौजूद होकर स्वास्थ लाभ ले रही है।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

RAJ EXPRESS
Khandwa

MAY 2012

सिटी express
राज एक्सप्रेस
खंडवा ■ बुरहानपुर
सात माह बाद वह लौटा घर 16

बुधवार ■ 9 मई 2012
www.raje

खंडवा एक्सप्रेस

महाराष्ट्र की समाजसेवी संस्था मानसिक कमजोर युवक को लेकर आई खंडवा

सात माह बाद वह लौटा घर

■ राज न्यूज नेटवर्क

खंडवा। मां भगवती के प्रति मां की अपार श्रद्धा, भाई की अपार भक्ति और स्वंयसेवी संस्था के सहयोग से विगत सात माह बाद युवक को आखिकार आशियाना फिर से मिल ही गया। माली कुंआ के समीप रहने वाली नर्मदाबाई यादव का 22 वर्षीय पुत्र गोपाल मानसिक रूप से कमजोर होने के कारण सात माह पूर्व 21 अक्टूबर को घर से लापता हो गया था। सात-आठ वर्ष पूर्व गोपाल अपने पिता हीरालाल यादव की मौत का सदमा बर्दाश्त नहीं कर पाया था और वह मानसिक रूप से तनाव में रहता था जिसके कारण उसने अपना घर छोड़ दिया था।

परिजनों को गोपाल के चले जाने का काफी दुःख था और निरंतर मां हिंगलाज माता से यही प्रार्थना करते थे कि हमारा गोपाल ठीक हालत में हो और घर वापस आ जाए।

खंडवा। गुम युवक के घर पहुंचने पर परिवार में खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

खुशी का रहा माहौल

मंगलवार को करजत महाराष्ट्र की श्रद्धा पुर्नवास संस्थान के समाज सेवी डा. पी.पाटिल एवं यशुदास स्टीफन प्रातः 10.30 बजे गोपाल यादव को लेकर माली कुंआ स्थित उनके निवास पहुंचे। अपने बालक गोपाल को देखकर मां नर्मदाबाई एवं भाई सचिन यादव ने उसे गले लगाया।

परिवार में उसके आने से खुशी का माहौल बन गया। गुम हुए गोपाल के लिए उसके भाई सचिन ने मन्नत स्वरूप चप्पल छोड़कर दाढ़ी नहीं बनाने का फैसला लिया ईश्वर का चमत्कार ही रहा कि मानसिक रूप से त्रस्त गोपाल यादव परिजनों के बीच पहुंच गया। गोपाल को देखते ही नर्मदा बाई ने जो कि अपने बच्चे की लगभग आस छोड़ चुकी थी उसे पाकर गले लगा लिया और रोते हुए इतना ही कहा कि देवी मां ने एक मां को उसके बेटे से मिलाया।

संस्था की पहल

समाज सेवी सुनील जैन ने बताया कि समाज सेवा ही ईश्वर सेवा है इसी के चलते बिछड़े लोगों को अपने संस्थान में परवरिश देकर उनके खाने-पीने ठहरनें एवं उच्च इलाज की व्यवस्था करते हुए वर्ष 2006 से देश की पहली संस्था श्रद्धा पुर्नवासन जो मानसिक रूप से पीड़ित एवं घर से बिछड़े हुए लोगों की सेवा अपने संस्थान में करती है और जैसे ही परिजनों से बिछड़े हुए व्यक्तियों के परिवार की जानकारी प्राप्त होती है संस्था स्वयं अपने यहां कार्यरत समाजसेवी के माध्यम से उस द्वार तक पहुंचाती है।

गोपाल यादव को भी डा. पी.पाटिल एवं यशुदास स्टीफन मुंबई से खंडवा लाए और परिजनों से मिलाया। इस अवसर पर इन समाजसेवियों का गोपाल के परिजनों के साथ ही समाजसेवी सुनील जैन, राजू यादव, पापन्ना यादव, रूपचंद यादव, दिलीप यादव, नितिन झंवर, टीनू राठौर, संतोष यादव, बबलू राठौर ने मुंबई से आए संस्था के समाजसेवियों का आत्मीय स्वागत करते हुए पुष्प माला पहनाई। साथ ही इनके साथ आए एक और बारह वर्ष से लापता मप्र के नरसुल्लागंज के शिक्षक रेवाशंकर माहेश्वरी इस संस्था को फरवरी में हैदराबाद में मिले थे संस्था द्वारा इनकी देखरेख के साथ इलाज किया गया। इलाज के दौरान उन्होंने अपने परिजनों की जानकारी दी। वहीं एक और बंडा सागर की महिला संतोषी बाई भी 20 वर्ष से घर से लापता थी उसे भी संस्थां द्वारा उच्च इलाज करते हुए उनके परिजनों को सौंपा जा रहा है।

दादाजीधाम के किए दर्शन

गुमशुदा गोपाल यादव को खंडवा में छोड़ने के पश्चात माली कुंआ निवासी राजू यादव के द्वारा अपना वाहन उपलब्ध कराकर महिला संतोषी बाई एवं रेवाशंकर माहेश्वरी को खंडवा से रवाना किया गया। इसके पूर्व यह सभी दादाजी धाम भी पहुंचे जहां पूजा-अर्चना करने के पश्चात किशोर दा की समाधि व स्मारक देखने भी पहुंचे।

है सफलता का लंबा इतिहास

वर्ष 2006 से समाजसेवी बाबा आमटे की प्रेरणा से भारत के रास्तों पर भटकने वाले मनोरोगियों की सेवा में डा. भारत वटवानी की देखरेख में मुंबई के समीप करजत महाराष्ट्र में इस संस्थान का निर्माण किया जाकर अभी तक इस संस्था द्वारा बारह सौ बिछड़े लोगों को अपने परिजनों से मिलाने वाली इस संस्था के पास अभी भी 60 पुरुष एवं 20 महिलाएं मौजूद होकर स्वास्थ लाभ ले रही है।

स्कीझोफ्रिनिया एक गंभीर मानसिक बीमारी है जो दुनिया भर में स्वास्थ्य संबंधी बड़ी समस्या है देश की लगभग एक प्रतिशत आबादी इस रोग से ग्रस्त है और इस बीमारी के चलते पीड़ित अपना घर बार छोड़ देते है और यह संस्था उन पीड़ितों को ढूंढकर अपने संस्था में मानव सेवा के नाते उनकी देखरेख उच्च इलाज कराकर जैसे ही परिजनों की जानकारी प्राप्त होती है उन्हें उनके घर तक पहुंचाने का दायित्व निभा रही है।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

KHANDWA PATRIKA
Khandwa

MAY 2012

हरसूद . ओंकारेश्वर खालबा. पंधाना. मूंदी पुनासा. छैगांवमाखन

खंडवा पत्रिका

khandwa patrika

इंदौर. बुधवार. 09 मई 2012

पहल

महाराष्ट्र की समाजसेवी संस्था खंडवा लेकर पहुंची

आठ माह बाद मिला बिछड़ा बेटा

खंडवा
khandwa@patrika.com

आठ माह बाद पुत्र को देखकर मां की आंखें छलछला उठी। मां-बेटे के मिलन को देख उपस्थित लोग भी भावुक हो गए। महाराष्ट्र की एक सामाजिक संस्था के प्रयासों से आठ माह पूर्व लापता हुआ बालक अपने परिवार के बीच पहुंच गया। मंगलवार सुबह 10.30 बजे सामाजिक संस्था पुनर्वासन के दो सदस्य मालीकुआं क्षेत्र से लापता हुए बालक को लेकर पहुंचे।

स्वागत

मां अपने बिछड़े बेटे के साथ।

पत्रिका

यह था मामला

मालीकुंआ क्षेत्र में रहने वाली नर्मदाबाई यादव का 22 वर्षीय पुत्र गोपाल मानसिक रूप से कमजोर होने के कारण आठ माह पूर्व 21 अक्टूबर को घर से लापता हो गया था। गोपाल अपने पिता हीरालाल यादव की मौत का सदमा बर्दाश्त नहीं कर पाया था। परिजनों को गोपाल के चले जाने का काफी दुःख था और वे मां हिंगलाज माता से यही प्रार्थना करते थे कि गोपाल घर वापस आ जाए। मंगलवार को करजत महाराष्ट्र के श्रद्धा पुनर्वासन संस्थान के समाजसेवी डॉ. पी पाटिल एवं यशुदास स्टीफन गोपाल यादव को लेकर मालीकुंआ स्थित उनके निवास पहुंचे। गोपाल को देखकर मां नर्मदाबाई एवं भाई सचिन ने गले लगाया। परिवार में उसके आने से खुशी का माहौल बन गया। गुम हुए गोपाल के लिए उसके भाई सचिन ने मन्नत स्वरूप चप्पल छोड़कर दाढ़ी नहीं बनाने का फैसला लिया था। गोपाल को देखते ही नर्मदा बाई ने जो कि अपने बच्चे के वापस आने की आस छोड़ चुकी थी उसे पाकर गले लगा लिया और रोते हुए इतना ही कहा कि देवी मां ने एक मां को उसके बेटे से मिलाया।

दो ओर बिछड़ों को मिलाने निकले

12 वर्ष से लापता मप्र नसरुल्लाह गंज के शिक्षक रेवाशंकर माहेश्वरी संस्था सदस्यों को फरवरी में हैदराबाद में मिले थे। संस्था द्वारा इनकी देख-रेख के साथ इलाज किया गया। इलाज के दौरान उन्होंने अपने परिजनों की जानकारी दी। वहीं बंडा जिला सागर की महिला संतोषीबाई भी 20 वर्ष से घर से लापता थी। उसे भी संस्था द्वारा उच्च इलाज करते हुए संस्था सदस्य उनके परिजनों को सौंपने जा रहे है। गुमशुदा गोपाल यादव को खंडवा में छोड़ने के पश्चात राजू यादव ने संस्था सदस्यों को अपना वाहन उपलब्ध कराकर संतोषीबाई व रेवाशंकर माहेश्वरी को खंडवा से रवाना किया।

1200 को मिला चुके

वर्ष 2006 से समाजसेवी बाबा आमटे की प्रेरणा से रास्तों पर भटकने वाले मनोरोगियों की सेवा में डॉ. भारत वटवानी की देखरेख में मुंबई के समीप कल्याण महाराष्ट्र में इस संस्थान का निर्माण किया था। अब तक 1200 बिछड़े लोगों को अपने परिजनों से मिलाने वाली इस संस्था के पास अभी भी 60 पुरुष व 20 महिलाएं स्वास्थ लाभ ले रही है।

GUJARAT
News

HINDI

PATRIKA
Ahmedabad

NOVEMBER 2013

पत्रिका

पत्रिका patrika.com सिटी CITY & SAURASHTRA-GUJRAT मध्य-उत्तर गुजरात 04 राजस्थान पत्रिका patrika.com

अहमदाबाद . गुरुवार . 28.11.2013

नौ जनों को भेजा अपने घर

मानसिक एवं लावारिस मिले थे

अहमदाबाद

ahmedabad@patrika.com

उन्हें यह तो नहीं पता है कि वे घर से क्यों और कब निकले थे? लेकिन इन्हीं चेहरों पर बुधवार को अपनों से मिलने की एक अलग ही खुशी थी। इन्हें अहसास है कि वे जल्द ही परिजनों के बीच में होंगे। पांच राज्यों के नौ जनों को सुबह अपनों से मिलने के लिए रवाना किया गया।

दरअसल बुधवार को शहर के दिल्ली दरवाजा के बाहर स्थित मानसिक स्वास्थ्य अस्पताल से पांच महिलाओं समेत नौ जनों को उनके घर के लिए भेजा गया। ये वे लोग हैं जो जनवरी 2012 से अप्रेल 2013 की अवधि में मानसिक रोग के चलते शहर के विविध इलाकों में घूमते मिले थे। पुलिस और अदालत के जरिए इन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया गया था उस दौरान इनकी हालत ऐसी थी कि वे अपने और परिजनों के बारे में कुछ भी बताने में असमर्थ थे। यहां इलाज के दौरान धीरे-धीरे इनकी याद ताजा होने लगी और फिर इन्होंने अपने नाम और परिजनों के बारे में बताया था। इनके बताए गए पते के आधार पर बुधवार को इन्हें एक साथ रवाना किया गया है। अस्पताल प्रशासन ने इन्हें भेजने के लिए श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउन्डेशन संस्था को सौंपा है।

अस्पताल के मनोचिकित्सक सामाजिक कार्यकर्ता अर्पण नायक और अशोक पांडव के अनुसार पिछले दिनों एक-एक कर शहर में मिले इन लोगों की हालत दयनीय थी। मानसिक अस्वस्थ होने के कारण ये लोग अपने बारे में कुछ भी नहीं जानते थे, लेकिन अस्पताल में इलाज के बाद इन्हें सब कुछ याद आ गया। अस्पताल से रवाना होते समय सभी लोग काफी भावुक भी हो गए थे। इन सभी को दवाइयों के साथ भेजा गया है।

श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउन्डेशन की वरिष्ठ कार्यकर्ता उपासना ने बताया कि इस अस्पताल से पिछले कुछ माह में 35 लोगों को अपनों के पास पहुंचाया गया है। यह संस्था ऐसे ही लोगों को अपनों के पास पहुंचाने के कार्य से जुटी हुई है। बुधवार को इन लोगों को संस्था के विशेष वाहन के माध्यम से मुंबई ले जाया गया है इसके बाद उन्हें उनके घरों तक छोड़ा जाएगा।

बुधवार को मध्यप्रदेश के राजू दीपक (38), उत्तरप्रदेश के करेल भागवत राठोड़ (50), झारखंड के गणेशराव (40), राजस्थान के गिरिराज (25), राजस्थान के जयपुर निवासी सुशीला बेन (50), वेस्ट बंगाल की लक्ष्मी शिवकुमार दास (55), छत्तीसगढ़ की रेखा प्रभू पटिल (35), झारखंड की सविता देवी संतूरदास (25) तथा झारखंड की ही सुनीता वीरू सरदार (45) को रवाना किया गया है। (का.सं.)

JHARKHAND
News

HINDI

DAINIK BHASKAR
Dhanbad

DECEMBER 2013

भारत का सबसे बड़ा समाचार पत्र समूह
दैनिक भास्कर
कुल पृष्ठ 16+8=24 | मूल्य ₹ 3.00 मधुरिमा सहित
धनबाद
बुधवार, 18 दिसंबर, 2013
पौष कृष्ण पक्ष प्रतिपदा, संवत: 2070
14 जस्टिस

चार साल पहले लापता हुई महिला परिजनों तक पहुंची

विक्षिप्तावस्था में मुंबई की सड़कों पर भटकती मिली

» एनजीओ श्रद्धा रिहैबिलिटेशन ने इलाज कराकर मायके वालों से मिलवाया

भास्कर न्यूज | गोमो

चार साल पहले अचानक गायब हो गई महिला बुधवार को अपने परिजनों के पास पहुंच गई।भागाबांध निवासी सुमिया देवी को मुंबई के एनजीओ श्रद्धा रिहैबिलिटेशन ने बोकारो के दहियारी में रहनेवाले उनके मायके वालों तक पहुंचाया।महावीर तुरी की पत्नी सुमिया देवी मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहने की वजह से चार साल पहले दहियारी से भागाबांध जाने के क्रम में लापता हो गई थीं। एनजीओ को वह मुंबई की सड़कों पर भटकती हुई मिलीं।

ऐसे पहुंची परिजनों तक

श्रद्धा रिहैबिलिटेशन की सदस्य फरजाना अंसारी और मोहम्मद यूसुफ फरास बुधवार को सुमिया देवी को लेकर गोमो के हरिहरपुर थाना पहुंचे। उन्होंने बताया कि सुमिया उन्हें विक्षिप्तावस्था में मुंबई में मिली थीं।उन्होंने उनका इलाज कराया। ठीक होने पर सुमिया ने अपना पता सिर्फ गोमो बताया। इसके आगे वह बता नहीं पाईं। इन दोनों ने हरिहरपुर पुलिस और विधायक प्रतिनिधि जगदीश चौधरी की मदद से सुमिया देवी के मायकेवालों से संपर्क किया। वे दहियारी से हरिहरपुर पहुंचे, तो सुमिया को देखकर उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था।

मिलने की उम्मीद छोड़ चुके थे परिजन

परिजनों ने बताया कि सुमिया देवी के लापता होने पर उन्होंने उनकी काफी तलाश की, लेकिन वह नहीं मिलीं। धीरे-धीरे आस टूटती गई और उन्होंने उनके मिलने की उम्मीद छोड़ दी। इधर, सुमिया देवी झारखंड से भटकती हुई गुजरात और फिर महाराष्ट्र के मुंबई पहुंच गईं। एनजीओ की सदस्य फरजाना ने बताया कि उनकी तरफ से आगे भी सुमिया देवी को दवाएं दी जाती रहेंगी। फरजाना और यूसुफ अपने साथ झारखंड और बिहार के पांच अन्य लोगों को भी लेकर आई हैं।ये सभी उन्हें मुंबई में भटकते हुए मिले थे। उन सभी का भी इलाज कराया गया है और अब उन्हें उनके घर पहुंचाना है।

JHARKHAND
News

HINDI

PRABHAT KHABAR
Dhanbad

DECEMBER 2013

धनबाद, बुधवार, 18 दिसंबर 2013 (पौष कृष्ण प्रतिपदा संवत 2070) ■ धनबाद । रांची । पटना । जमशेदपुर । देवघर । कोलकाता । सिलीगुड़ी । मुजफ्फरपुर । भागलपुर । गया से प्रकाशित ■ पृष्ठ

झारखंड का सर्वाधिक प्रसारित दैनिक

प्रभात खबर

अखबार नहीं आंदोलन

भिखारी ठाकुर की जयंती आज

चार साल बाद घर लौटी नावाडीह की महिला

■ भागाबांध जाने के दौरान भटक गयी थी
■ श्रद्धा रिहैबिलिटेशन ने पहुंचाया घर

गोमो. श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन संस्था की मदद से नावाडीह थाना क्षेत्र के दहियारी गांव की सुमिया देवी (46) चार साल बाद अपने घर लौट आयी. हरिहरपुर थाना प्रभारी सहदेव प्रसाद व अचर निरीक्षक आरके उपाध्याय के सहयोग से उसे दहियारी भेजा गया. जानकारी के अनुसार सुमिया देवी भागाबांध निवासी महावीर तुरी की पत्नी है. चार साल पहले भागाबांध जाने के क्रम में वे भटक गयी थी. काफी खोजबीन के बाद भी उनका पता नहीं चल रहा था. संस्था के सदस्य मो यूसुफ व फरजाना अंसारी मंगलवार को सुमिया को लेकर गोमो आये. मो यूसुफ ने बताया कि उनकी संस्था कई शहरों में संचालित है. बस स्टैंड, स्टेशन आदि जगहों से लाचार लोगों को संस्था में निःशुल्क इलाज कराने के बाद घर पहुंचाया जाता है. उसने बताया कि उक्त महिला को कुछ माह पहले संस्था के लोग मुंबई से ले गये थे. फिर उसे अहमदाबाद की शाखा में भेजा गया. जब वह अपना नाम आदि बताने लगी, तो उसे गोमो पुलिस के पास लाया गया. यहां से उसे सुरक्षित घर भेजा गया है.

UTTAR PRADESH
News

HINDI

HINDUSTAN
Bareilly

FEBRUARY 2014

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
वर्ष 5, अंक 41, 18 पेज, मूल्य 3.00 रुपए, फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया, वि.सं. 2070
मंगलवार, 18 फरवरी 2014, बरेली, पांच प्रदेश, 18 संस्करण, नगर
www.livehindustan.com

गुजरात के मानसिक अस्पताल से छूटकर आया बरेली का सुनील

20 वर्ष बाद 'मसीहा' ने पहुंचाया घर

बरेली | वरिष्ठ संवाददाता

20 वर्ष से लापता बरेली का नौजवान सुनील लौट आया है। बताया जा रहा है कि उसकी मानसिक हालत खराब होने पर वह आला हजरत एक्सप्रेस में बैठकर भुज (गुजरात) पहुंच गया। बरेली के ही शैलेश (एनजीओ के मनोवैज्ञानिक) ने उसकी वापसी में अहम भूमिका निभाई। पहली बार में तो यहां कोई नहीं मिला पर दूसरी बार में सुनील के फूफा-बुआ से भेंट हो गई। सुनील घर तो आ गया है पर यहां उसके पिता की मौत हो चुकी है और उसका मकान भी बिक गया है। अब यहां उसका कोई नहीं है। पीलीभीत में रह रहे फूफा-बुआ ने उसे शरण दी है।

सुनील का परिवार कभी कुतुबखाना के पास एक की तंग गली में रहता था। पता था मकान नंबर-181, बजरिया पूरनमल। मां बचपन में ही गुजर गई थी। पिता दामोदर प्रसाद और भाई छोटेलाल। पहले वह जगत टाकीज में चाय-समोसा बेचता था मगर बाद में उसकी मानसिक हालत गड़बड़ हो गई तो एक दिन वह लापता हो गया। आशंका है कि वह तब आला हजरत एक्सप्रेस से भुज पहुंच गया और अब 20 वर्ष बाद मुंबई के श्रद्धा फाउंडेशन के मनोवैज्ञानिक शैलेश कुमार शर्मा (निवासी बरेली) की मदद से उसकी वापसी हो पाई है। शैलेश ने 'हिन्दुस्तान' को बताया कि छह माह

सुनील के घर लौटने पर उसके बुआ-फूफा का खुशी का ठिकाना न रहा।

पहले वह भुज अस्पताल गए थे तो वहां सुनील ने खुद को बरेली का बताया तो उसे लेकर यहां आए मगर उसका घर नहीं मिला। छह जनवरी 2014 को श्रद्धा फाउंडेशन ने सुनील को भुज के मानसिक अस्पताल से रिलीज करा लिया।

काम आया टाकीज का स्टाफ

शैलेश पहली बार सुनील को ले आए तो किसी ने उसे नहीं पहचाना। इस कारण शैलेश उसे लेकर मुंबई लौट गए। वहां सुनील की हालत और बेहतर हुई तो उसने बताया कि वह कुतुबखाने के पास एक टाकीज की कैंटीन में काम करता था। शैलेश उसे लेकर फिर बरेली आए। जगत टाकीज पर जगदीश चाटवाले ने सुनील को पहचान लिया। जगदीश के साथ सभी बजरिया पूरनमल में सुनील के घर (मकान नंबर 181) पहुंचे। कुछ ही देर में पता चला कि यह घर सुनील का नहीं रहा। यह बेचा जा चुका है।

इस कहानी में छिपे दर्द ही दर्द

बेटे के इंतजार में तीन वर्ष पहले सुनील के पिता दामोदर चल बसे। वे लीचीबाग की एक ट्रांसपोर्ट कंपनी में चौकीदार थे। मां का निधन तो बचपन में ही हो गया था। पड़ोसियों ने बताया कि सुनील के छोटे भाई छोटेलाल की भी 18 साल पहले पीलिया से मौत हो गई। फिर किसी ने सुनील को नन्हीं बुआ का जिक्र किया। वही बुआ जिन्होंने मां की मौत के बाद वर्षों तक सुनील की परवरिश की थी। वह अपने परिवार (पति नत्थू लाल चंचल) के साथ पीलीभीत में रहती हैं। इस पर शैलेश 15 फरवरी को पीलीभीत गए।

शैलेश कुमार, मनोवैज्ञानिक

घर लौटने की खुशी

फूफा-बुआ ने सुनील को देखा तो एकबारगी विश्वास ही नहीं हुआ। श्रीवास्तव परिवार का चिराग जो लौट आया था। 45 साल के हो चुके सुनील को बच्चों की तरह लाड़ दिया जा रहा था। बुआ को तो सुनील में ही अपना भाई दिखने लगा था।

ऐसे मामले बरेली मानसिक अस्पताल में भी

श्रद्धा फाउंडेशन ऐसे ही लोगों को मानसिक अस्पतालों से घर पहुंचाने काम करती है। शैलेश बताते हैं, मानसिक अस्पतालों में तमाम ऐसे मरीज भर्ती हैं, जिन्हें घर भेजा जा सकता है। बरेली के मानसिक अस्पताल में भी ऐसे कई मरीज भर्ती बताए जाते हैं। मैंने अस्पताल प्रबंधन से ऐसे मरीजों की जिम्मेदारी दिए जाने की बात की है।

BIHAR
News

HINDI

DAINIK JAGRAN
Muzaffarpur

FEBRUARY 2014

वर्ष 2 अंक 218
पृष्ठ 16+8=24
मुजफ्फरपुर, शनिवार
8 फरवरी 2014
नगर संस्करण ***
मूल्य ₹ 5.00

दैनिक जागरण
विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

15 साल बाद लौटा 'लाल'

अपने माता-पिता के साथ संजय जागरण

दलसिंहसराय, संस : अपने परिजनों से जुदा 'लाल' शुक्रवार को जब घर पहुंचा तो इस परिवार में ही नहीं। बल्कि पूरे मुहल्लों में जश्न का माहौल रहा। 15 वर्ष पूर्व लापता पुत्र को अचानक देख परिजनों के आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े। मुहल्लेवासी भी उससे मिलने को उतावले रहे। देखते ही देखते लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। मुंबई के श्रद्धा री-हैबिलिटेशन फाउंडेशन के प्रयास से घर वालों को उनका लाल मिला।

बताते चलें कि शहर के वार्ड नंबर छह निवासी लक्ष्मी साह का चौथा पुत्र संजय कुमार उर्फ बौआ दस वर्ष की आयु में लगभग 15 वर्ष पूर्व घर से फरार हो गया था। परिजनों ने अपने स्तर से काफी खोज खबर की थी। मगर उसका पता नहीं चल सका। शुक्रवार को फाउंडेशन के सदस्य रेहान राजा ने उसे अपने साथ लेकर जैसे ही मुहल्ले पहुंचे। आग की तरह बात पूरे में फैल गई। मौके पर रेहान राजा ने बताया कि 2009 में सूरत के एक एनजीओ द्वारा इसे सौंपा गया था। उस वक्त इसके पैर की हड्डी एक ट्रक द्वारा पुल के नीचे सोए अवस्था में कुचल दिए जाने से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी। साथ ही मानसिक रूप से कमजोर था और अपने माता पिता का नाम नहीं बताया पा रहा था। जिसके बाद इसे चिकित्सा हेतु श्रद्धा फाउंडेशन के चिकित्सक के यहां भर्ती कराया गया जहां वह ठीक होने पर उसकी याद वापस आ गई और अपने माता-पिता का नाम एवं पता बताया तो आज उसे परिजनों से मिला दिया गया।

UTTAR PRADESH
News

HINDI

AMAR UJALA
Aligarh

APRIL 2014

अलीगढ़ | मंगलवार | 8 अप्रैल 2014

अमर उजाला

7 राज्य
19 संस्करण

हरियाणा | दिल्ली | चंडीगढ़ | पंजाब | उत्तर प्रदेश | उत्तराखंड | हिमाचल | जम्मू-कश्मीर

महानगर ●● वर्ष 8 अंक 73 पृष्ठ : 16 मूल्य : दो रुपये

मृत समझ कर परिजन छोड़ चुके थे उम्मीद

8 साल बाद घर लौटा रामवती का 'सुहाग'

कौशल कुमार ओझा

अलीगढ़। बलवीर की कहानी किसी हिट फिल्म से कम दिलचस्प नहीं है। मृत समझकर परिजन भी बलवीर के आने की उम्मीद छोड़ चुके थे। 8 साल बाद अचानक लौटने पर बलवीर की बुजुर्ग मां एवं पत्नी की आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े।

हाथरस जनपद के मुरसान (आर्य समाज रोड इमली वाला मोहल्ला) निवासी बलवीर सिंह पुत्र स्व. अमर सिंह (करीब 40 वर्ष) 8 वर्ष पूर्व अचानक गायब हो गया था। बुजुर्ग मां गुलाबो देवी, पत्नी रामवती, दो छोटे-छोटे बच्चे और भाई-बहन वर्षों तक बलवीर का इंतजार करते रहे। जब काफी समय बीत गया तो परिजनों ने भी उम्मीद छोड़ दी और मान लिया कि बलवीर अब इस दुनिया में नहीं है। शुक्रवार का दिन बुजुर्ग गुलाबो देवी एवं बलवीर की पत्नी रामवती के साथ-साथ 10 वर्षीय पुत्र मयंक एवं 8 वर्ष की बेटी नीतू के लिए किसी करिश्मा से कम नहीं था। श्रद्धा रीहेबिलिटेशन फाउंडेशन मुंबई के मनोवैज्ञानिक

परिवार के साथ बलवीर (बाएं)। शैलेश कुमार शर्मा।

कलेजे के टुकड़ों को सीने से लगाकर फफक पड़ी गुलाबो

शैलेश कुमार शर्मा (निवासी बरेली) के साथ जब बलवीर मुरसान पहुंचा तो बुजुर्ग मां गुलाबो देवी ने अपने 'लाल' को पहचानने में एक मिनट भी देरी नहीं की। मां अपने जिगर के टुकड़े को सीने से लगाकर फफक-फफक कर रोती रही। गम का पहाड़ पिघलकर आंसू के रूप में निकल रहे थे। काफी समय तक बुजुर्ग मां के गले से शब्द नहीं निकले।

यह सूचना मुरसान में जंगल की आग की तरह फैल गई और बलवीर को देखने के लिए लोगों का तांता

भगवान की कृपा एवं करिश्मा समझ रहे लोग

लग गया। बलवीर की पत्नी रामवती कहती है कि मेरे भगवान लौट आए हैं। मेरी तो जिंदगी ही खराब हो गई थी। मेहनत-मजदूरी कर एवं परिजनों के सहयोग से बेटा मयंक को कक्षा 7 एवं बिटिया नीतू को कक्षा 4 में पढ़ा रही हूं। रामवती अपने सुहाग को पहुंचाने के लिए श्रद्धा फाउंडेशन को बार-बार धन्यवाद दे रही है। बलवीर के भाई दुर्जन ने बताया कि ईश्वर की कृपा एवं करिश्मा से मेरा भाई 8 साल बाद वापस घर लौट आया है।

गुजरात के भुज से मुरसान पहुंचे बलवीर

हमलोग रास्तों पर भटकने वाले मनोरोगी (स्कीझोफ्रिनिया) के लिए काम करते हैं। अक्सर ये सड़कों पर गंदे, थके, लंबे-उलझे बाल और स्वयं में खोए मिलते हैं। हमलोग देश के मानसिक चिकित्सालयों के भी संपर्क में रहते हैं और उपचार के बाद ठीक हुए लोगों को उनके घर तक पहुंचाते हैं। बलवीर हमें गुजरात के भुज के मानसिक चिकित्सालय में मिले थे। उनका प्रोपर इलाज के बाद उनके घरवालों को सौंप दिया गया है। बलवीर की दवा की व्यवस्था हमलोग आगे भी करते रहेंगे। फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. भरत वाटवानी का इसमें विशेष योगदान होता है।

- शैलेश कुमार शर्मा,
मनोवैज्ञानिक श्रद्धा
रीहेबिलिटेशन फाउंडेशन

CHHATTISGARH
News

HINDI

AANCHALIK BHASKAR
Raipur

JUNE 2014

आंचलिक भास्कर

बलौदाबाजार | भाटापारा | गरियाबंद

तिल्दा-नेवरा • बिलाईगढ़ • सिमगा • नवापारा राजिम • अर्जुनी | रायपुर, शनिवार 14 जून, 2014 | फिंगेश्वर • पलारी • कसडोल • खरोरा • अमनपुर

कसडोल. गौरीबाई को पहुंचाने श्रद्धा पुनर्वास केंद्र मुंबई से आए लोग।

लापता युवती को पुनर्वास केंद्र के लोग लेकर आए

श्रद्धा पुनर्वास केंद्र मुंबई के समाज सेवक उसे पहुंचाने आए,

भटकती हुई मुंबई में मिली थी, युवती का उपचार भी कराया

1998 से चल रही संस्था

भास्कर न्यूज | कसडोल

ग्राम बोरसी से 8 वर्ष पूर्व लापता हुई युवती गौरीबाई गोड़ को गुरुवार को श्रद्धा पुनर्वास केंद्र मुंबई के समाज सेवक उसके घर पहुंचाने आए। इतने दिन के बाद अपनी पुत्री को पाकर रो पड़े और उसे गले से लगा लिया। वे लोग अपनी पुत्री को खोजते-खोजते परेशान हो गए थे और उसके मिलने की आशा छोड़ चुके थे।

ग्राम बोरसी के रनसिंह गोड़ व गायत्री बाई की पुत्री गौरीबाई जिसकी दिमागी हालत ठीक नहीं थी। वह आठ वर्ष पूर्व 2006 में लापता हो गई थी। उसको पहुंचाने आये श्रद्धा पुनर्वास केंद्र मुंबई के जेसुदास स्टीफन मानसिक समाज सेवक एवं रितु वर्मा समाज सेविका ने बताया कि गौरी उन्हें 2006 विक्षिप्त हालत में भटकते हुए मुंबई में मिली थी। उसे इंस्टीट्यूट आफ मेंटल हेल्थ चेन्नई ने अपने यहां ले जाकर उसका इलाज कराया। दो माह पूर्व उसे श्रद्धा पुनर्वास केंद्र मुंबई के सदस्यों ने अपने पास रखकर उसका और मानसिक विकास किया। उन्होंने उसे उसके घर पहुंचाने का जिम्मा लिया। संस्था के सदस्य गौरी के स्वस्थ होने पर उसके बताए पते पर उन्हें पहुंचाने आज पहुंचे और उसके माता पिता को बेटी को सौंपा।

उन्होंने अपनी संस्था श्रद्धा पुनर्वास केंद्र मुंबई के बारे बताया कि संस्था 1998 से चल रही है। संस्था के प्रमुख डा. भारत वाटवानी एमडी मनोरोग एवं डा. समिता वाटवानी हैं। उनकी संस्था अब तक 3000 हजार मरीजों को ठीक कर उनके घर पहुंचा चुकी है। उन्होंने बताया कि अभी हम लोग कुल 7 मरीजों को लेकर उनके घर पहुंचाने आए हैं। इसमें 2 महाराष्ट्र के, 3 मध्यप्रदेश व 2 छत्तीसगढ़ के हैं, जिसमें से एक गौरीबाई है। हमारी संस्था का मुख्य उद्देश्य रास्ते में भटकते हुए मरीज जिनकी दिमागी हालत ठीक नहीं होती उनको ले जाना और उसे ठीक करके उनके बताए पते पर वापस पहुंचाना है।

BIHAR
News

HINDI

HINDUSTAN
Bhagalpur

OCTOBER 2015

हिन्दुस्तान
www.livehindustan.com
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
बुधवार, 28 अक्टूबर, 2015, भागलपुर
बिहार का नं. 1 अखबार

मानसिक रूप से बीमार जुबैर भटक कर मुंबई पहुंच गया था, एक संस्था की पहल पर हुई घर वापसी

दो साल से गायब रौटा का जुबैर घर वापस लौटा

पूर्णिया | प्रमुख संवाददाता

करीब दो साल पूर्व अचानक गायब हुए 22 साल का जुबैर अपने घर लौट आया है। मुंबई स्थित श्रद्धा रिहैबिलिटेशन नामक संस्था ने उसे रौटा थाना क्षेत्र के सहरिया गांव तक पहुंचाया। जुबैर को देख घरवालों को सहसा विश्वास नहीं हुआ। लेकिन सामने बेटा को देख मां लिपट गई और बहन की आंखों से खुशी के आंसू गिरने लगे। थोड़ी देर में पूरे गांव के लोग पहुंच गये।

मानसिक रूप से बीमार जुबैर भटकते-भटकते मुंबई पहुंच गया जहां इन एनजीओ के सदस्यों की नजर पड़ गई। यह एनजीओ सड़क पर लावारिश लोगों को न केवल पनाह देता है बल्कि इलाज कर उसे घर तक पहुंचाता है। उसकी मानसिक हालत उस समय ठीक नहीं थी। उसकी यादाश्त खत्म हो गई थी।

ऐसे पहुंचे घर तक

श्रद्धा रिहैबिलिटेशन के सदस्य राशीद रजा ने बताया कि जुबैर दो माह पूर्व मुंबई की सड़कों पर घुमते हुए मिला था। उसे संस्था के पनाह गाह में रखा गया और उसका इलाज कराया गया। वह सीजोफ्रिनिया रोग से ग्रसित था। जब वह ठीक हो गया तो उसका नाम व ठिकाना जानने का प्रयास किया गया। उसे सिर्फ पूर्णिया याद था। धीरे-धीरे कौंसिलिंग करने पर उसके घर तक पहुंचे।

दो साल बाद घर वापस हुए जुबेर का स्वागत करते परिजन । • फोटो : हिन्दुस्तान

मिलने की उम्मीद छोड़ चुके थे परिजन

परिजनों ने बताया कि जुबैर के लापता होने के बाद उसकी काफी खोजबीन की गई लेकिन कहीं कोई पता नहीं चला। अंततः उनलोगों ने मिलने की उम्मीद छोड़ दी थी। परिजनों ने घर तक आये श्रद्धा के सदस्यों को शुक्रिया अदा की और कहा कि आप मेरे लिए खुदा से कम नहीं। मां ने कहा- मेरा बेटा नहीं मेरा बुढ़ापे का सहारा मिला गया। जुबैर अपनी मां का इकलौता बेटा है। उसके पिता गुजर गये हैं। घर में उससे छोटी एक बहन है। जुबेर के घर पहुंचते ही पूरे परिवार में खुशियों की लहर फैल गई। जुबेर भी मां के कलेजे से लग गया और फिर न जाने का भरोसा दिलाया।

PUNJAB
News

HINDI

DAINIK BHASKAR
Jalandhar

JUNE 2016

दैनिक भास्कर
आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार
Jalandhar 17.06.2016

कब के बिछड़े आज मिले | 1971 और 1988 में परिवार से संपर्क हुआ, लेकिन मुलाकात नहीं, मुंबई की संस्था श्रद्धा पुनर्वास ने कराया मिलन

मां की डांट पर घर से भागे इंद्रजीत को 54 साल बाद परिवार से मिलाया

रवि रौणखर | जालंधर

बात मार्च 1962 की है। तब भारत चीन युद्ध भी नहीं हुआ था जब साढ़े 13 साल का इंद्रजीत घई मां इंद्रावती की डांट के बाद घर से भाग गया था। घरवालों ने बहुत ढूंढा लेकिन उसका कोई पता नहीं चला। 16 जून 2016 को 54 साल बाद वह घर लौटा है। 12 मार्च 2016 को मुंबई की एक संस्था श्रद्धा पुनर्वास में पुलिस एक वृद्ध को लेकर आई। वह सड़क किनारे बदहाल हालत में मिला था। याददाश्त जा चुकी थी।

संस्था के मनोवैज्ञानिकों ने उसका इलाज किया और याददाश्त वापस आने लगी। नोवैज्ञानिक शैलेश कुमार शर्मा ने बताया कि इन्होंने पहले अपना नाम बताया। फिर पिता और तीन भाइयों का। कुछ दिनों बाद बताया कि घर जालंधर के बस्ती शेख में हैं। इंद्र का मानसिक स्वास्थ ठीक नहीं है। उसकी दवाएं चल रही हैं।

इंद्र को शैलेश जब बस्ती शेख लेकर पहुंचे तो एक दुकान पर उसके पिता करमचंद घई के बारे में पूछा। दुकानदार ने कहा वह तो 1972 में ही गुजर गए। उनके बेटे कोट मोहल्ले में रहते हैं। पता पूछते-पूछते घर पहुंचे तो शैलेश ने घर का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा इंद्र के बड़े भाई भीम सेन की पत्नी ऊषा घई ने खोला। शैलेश ने कहा इनका नाम इंद्र घई है क्या आप इन्हें जानती हैं।

ऊषा ने बताया कि 'मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि सामने खड़ा शख्स इंद्र ही है। मेरी शादी के कुछ साल पहले ही तो इंद्र गायब हुआ था।' भाई भीम सेन ने देखा तो वह फूट फूट कर रोने लगे। कहा-माता पिता इंद्र के गम में ही जल्दी चल बसे।' दूसरे भाई सुंदर सेन ने बताया कि इंद्र बचपन से बहुत लड़ाका था। इसे सब अस्त्र कहते थे। पढ़ाई में ध्यान नहीं लगा तो पिताजी ने चाय की दुकान पर नौकरी पर लगवा दिया। आए दिन उसकी मारपीट की शिकायतें आने लगीं और माता पिता से डांट खाने लगा। फिर एक दिन वह चला गया। 9 साल बाद 1971 में भारत पाक युद्ध में इसकी एक चिट्ठी आई थी। जिसमें उसने लिखा था कि उसने एक क्रिश्चियन लड़की से शादी कर ली है और दो बच्चे भी हैं। हम तुरंत मुंबई भाग गए लेकिन उस पते पर वह नहीं मिला। फिर 1988 में हमें एक चिट्ठी मिली। जिसके बीच इंद्र का पासपोर्ट था जो 29 दिसंबर 1983 को इशू हुआ था। पासपोर्ट पर पक्का पता जालंधर का ही लिखा था। हमने पासपोर्ट भेजने वाले से संपर्क किया तो उसने कहा कि उसे यह गिरा हुआ मिला था। हम फिर मुंबई गए। उसका पता मिल गया लेकिन एक बार फिर हमें निराशा हुई। वह वहां से जा चुका था।' हम उसके पते पर अपना टेलीफोन नंबर छोड़ गए थे। उसका थोड़े दिनों बाद फोन आया।

उसने बताया कि वह एक सेठ के वहां ड्राइवर है। हमने कहा वापस जालंधर आ जाओ तो उसने फोन काट दिया। उसके बाद हमें न कोई चिट्ठी आई न टेलीफोन। पिछले महीने मैं सोच रहा था कि दोबारा मुंबई होकर आता हूं शायद जीते जी उससे एक बार मुलाकात हो जाए। भगवान ने हमारी सुन ली और वह आज खुद हमारे पास आ गया है।'

इंद्र घई बताते हैं कि मुंबई में ही शादी की पर दंगों में परिवार बिछुड़ गया

बड़े भाई भीम सेन, सुंदर सेन और भाभी ऊषा घई व परिवार के अन्य सदस्यों के साथ पीली टी शर्ट में इंद्रसेन घई। -भास्कर

पत्नी के बारे में पूछा तो कहा उसकी शादी एलिजाबेथ से हुई है। 'मुंबई में झगड़ा हुआ था। हिंदू मुस्लिम में। उसमें बिछुड़ गए। इससे ज्यादा वह उनके बारे में नहीं जानता। इंद्र ठीक से चल फिर नहीं सकता।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

DAINIK BHASKAR
Bhind

FEBRUARY 2017

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

दैनिक भास्कर

Bhind 15.02.2017

मार्मिक | भटककर मुंबई पहुंचे विक्षिप्त युवक का श्रद्धा संस्था ने पहले इलाज कराया, आज उसके गांव मानपुर में लेकर पहुंचे

विक्षिप्त को 13 साल बाद बिछड़े परिजन से मिलाया

भास्कर संवाददाता | भिंड

वह मानसिक रूप से विक्षिप्त है। तेरह साल पहले वह घर से चला गया था। दो माह पहले वह मुंबई में सड़क पर घूमते हुए श्रद्धा पुनर्वास केन्द्र के संचालक रमाकांत इड्डो को मिला तो दो माह तक इलाज कराने के बाद गोहद के मानपुरा में परिजनों के बीच पहुंचा दिया। घर वाले उसे पाकर खुश हो उठे।

रमेश पुत्र राजपाल ठाकुर (38) ने अपना घर मानपुरा में बताया तो रमाकांत उसे लेकर बुधवार की शाम चार बजे भिंड ब्लाक के मानपुरा पहुंच गए। कई ग्रामीणों से पूछताछ की लेकिन रमेश की पहचान करने वाला कोई नहीं था। इन्हीं ग्रामीणों में मानपुरा गोहद बताया तो उन्होंने एक ऑटो किराए पर किया और गोहद के लिए निकल पड़े। यहां उन्हें रमेश का घर और परिजन सभी मिल गए। गांव वालों ने उसे देखा तो दंग थे। क्योंकि वह तेरह साल से घर छोड़कर चला गया था। राजपाल ने उम्मीद ही छोड़ दी थी कि अब रमेश मिलेगा भी कि नहीं। लेकिन मुंबई के रमाकांत इड्डो इनके लिए देवदूत बनकर आए और परिजन को अपने खोए हुए रमेश से मिला दिया।

अपने परिजन के साथ मौजूद रमेश (पीली टी-शर्ट में)

इसलिए पहले नहीं ली मदद

रमाकांत कहते हैं कि हम तो यही समझ रहे थे कि रमेश ने जो पता बताया है कि उस आधार पर भिंड ब्लॉक के मानपुरा गांव में जाकर घर तलाश लेंगे। इसलिए स्थानीय स्तर पर किसी की मदद नहीं ली।

घर पहुंचाने से पहले दो माह तक इलाज भी कराया

समाजसेवी रमाकांत इड्डे ने मुंबई में ही रमेश का अच्छे डॉक्टर्स से परामर्श कर इलाज भी कराया। रमाकांत कहते हैं तो थोड़ा लाभ होने के बाद उसे लेकर वे बुधवार को ही भिंड पहुंचे थे। घर पहुंचने के बाद इनका आगे भी मुफ्त इलाज इसी संस्था द्वारा कराया जाएगा। रमाकांत कहते हैं कि ऐसे भूले-बिछड़े और मानसिक रूप से विक्षिप्त लोगों को उनके घर तक पहुंचाना ही उनकी संस्था का काम है। संस्था के आर्थिक पक्ष की चिंता सरकार करती है।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

VIDISHA-G BHASKAR
Bhopal

JULY 2017

विदिशा-गंजबासौदा भास्कर

भोपाल, रविवार 23 जुलाई, 2017 श्रावण कृष्ण पक्ष-15, 2074

13 साल पहले गुम बेटे के लिए मां हर साल सिलवाती थी कपड़े, लौटा तो पहनाए

मंदबुद्धि अलीम खान 22 साल की उम्र में अपनी बहन के घर से हो गया था लापता

प्रमोद साहू | विदिशा

कहते हैं उम्मीद पर आसमान टिका है। यह कहावत नगर के नयापुरा में रहने वाली भूरी बी के जीवन में सौ फीसदी सच साबित हो गई। भूरी बी का मंदबुद्धि बेटा अलीम खान 13 साल पहले गुम हो गया था। बेटा वापस आएगा इस उम्मीद के साथ उसने उसके लिए कपड़े सिलवाए थे। 13 साल बाद उसकी यह उम्मीद पूरी हो गई। उनके लिए फरिश्ता बन कर आए। वे अपने साथ अलीम को लेकर आए थे, वह भी पहले से काफी अच्छी अवस्था में।

पिता रफीक सहित पांचों भाई बहिनों ने छोड़ दी थी अलीम के लौटने की उम्मीद

कपड़े सिलवाकर पेटी में रख दिए थे

नगर के नयापुरा में रहने वाली 68 वर्षीय भूरी बी का बेटा अलीम खान 13 साल पहले अपनी बड़ी बहन शाहो बी के यहां बसौदा गया था। उस समय अलीम की उम्र 22 साल थी तथा कुछ समय पहले ही उसकी दिमागी हालत खराब हो गई थी। बहन के यहां से अलीम कहां गया किसी को नहीं पता। परिजनों ने ढूंढा लेकिन कहीं पता नहीं चला। पिता रफीक खान के साथ ही अलीम के पांच भाई-बहन हैं सभी ने उम्मीद छोड़ दी थी लेकिन उसकी मां भूरी बी को उम्मीद थी कि ईद पर बेटा वापस लौटेगा। इसी वजह से उसने उसी समय अलीम के लिए कपड़े सिलवाकर पेटी में रख दिए लेकिन वह नहीं आया। तीन बेटियों और एक बेटे की शादी हो गई। पांच साल पहले पति रफीक खान का इंतकाल हो गया। वे मकान बदल कर नयापुरा में ही दूसरी जगह रहने लगीं।

सब को पहचान रहा था

शुक्रवार का दिन भूरी बी की जिंदगी का सबसे बड़ा दिन हो गया। संतोष कुमार उनके लिए फरिश्ता बन कर आए। उन्होंने संतोष के साथ जब अपने बेटे अलीम को देखा तो आंखों पर यकीन नहीं हुआ। अलीम न केवल सभी को पहचान रहा था बल्कि उनके नाम भी ले रहा था। 13 साल बाद बेटे के पहले से भी अच्छी हालत में मिलने से भूरी बी की खुशी का ठिकाना नहीं था। 10 घंटे तक विदिशा में रुकने के बाद रात में ही संतोष कुमार वापस मुंबई लौट गए। शनिवार को घर पर मेहमानों का तांता लगा रहा।

विदिशा में अपने परिवार के साथ बैठा अलीम खान (लाल घेरे में)।

अलीम का दो साल तक चलेगा इलाज

नयापुरा में रहने वाले परवेज गौरी ने बताया कि अलीम और संतोष शुक्रवार दोपहर में उनके पुराने घर पर पहुंचे थे। वहां पर मौजूद लोगों ने उनके वर्तमान घर का पता बताया। भूरी बी ने बताया कि मैंने अलीम के लिए 13 साल पहले कपड़े सिलवाए थे। आज उसने वो कपड़े ही पहने हैं।

रेलवे पुलिस ने सौंपा था श्रद्धा फाउंडेशन को जिसने पहुंचाया घर

अलीम को लेकर आए संतोष मुंबई के श्रद्धा फाउंडेशन से जुड़े हैं। भास्कर से मोबाइल पर हुई चर्चा में संतोष ने बताया कि अलीम पांच महीने पहले रेलवे पुलिस को ठाणे रेलवे स्टेशन पर मिला था। हमारा फाउंडेशन इस तरह के मानसिक विकलांग लोगों का इलाज कर उन्हें उनके घर तक पहुंचाता है। पुलिस ने अलीम को हमें सौंपा। श्रद्धा पुनर्वास केन्द्र में उसका इलाज चला। जब अलीम सही हो गया तो उसने खुद अपना पता बताया। इलाज के बाद हम एमपी के 7 लोगों को लेकर आए हैं। आज भी वाकानी में हूं। श्रद्धा फाउंडेशन के ऑनर भरत वाटवानी हैं। 1996 में स्थापित फाउंडेशन का कार्यक्षेत्र साल 2006 से सारा देश हो गया है।

UTTAR PRADESH
News

HINDI

DAINIK JAGRAN
Maharajganj

APRIL 2018

दैनिक जागरण

हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

पांच साल बाद परिजनों से मिल निहाल हुए सुरेंद्र

दैनिक जागरण निचलौल
तहसील कार्यालय दिनांक
09/04/2018

जागरण संवाददाता, निचलौल, महराजगंज:पाच वर्ष पूर्व रोजी रोजगार के लिए घर से निकले सुरेंद्र साहनी भटकते हुए सितारों की नगरी मुंबई पहुंच गए। लेकिन मानसिक स्थिति ठीक न होने से वह काम की तलाश के बजाय सड़क पर घूमते एक पुनर्वास संस्था के वालंटियर से मिले जो उन्हें श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन में रखकर देखभाल के साथ इलाज भी कराया । बता दें कि निचलौल थाना क्षेत्र के ग्राम मदनपुर कुटी निवासी किशुन के पांच लड़कों में सबसे छोटे सुरेंद्र साहनी के घर की माली हालत ठीक नहीं थी । शादी के बाद औरतों व बच्चों की परवरिश के लिए अनपढ़ सुरेंद्र करीब पांच वर्ष पूर्व बाहर कमाने के लिए सिसवा रेलवे स्टेशन पहुंचे। लेकिन मानसिक स्थिति ठीक न होने से वे भटकते हुए मुंबई की सड़कों पर घूमने लगे। एक वर्ष बाद मुंबई स्थित रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन पुनर्वास केंद्र में वालंटियर द्वारा ले जाकर लगातार चार वर्षों के इलाज के बाद सुरेंद्र साहनी की मानसिक स्थिति ठीक हुई तो उसने अपना नाम पता तथा विवाहित होने बच्चों के बारे में संस्था को पूरी जानकारी दिया। पते के आधार पर संस्था के सोशल वर्कर मंसूर रिजवी रविवार पूर्वान्ह सुरेंद्र को लेकर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर सर्वेश कुमार सिंह से मिले । थाना प्रभारी ने सूचना भेजकर सुरेंद्र के परिजनों को थाने बुलाया तथा आवश्यक कार्रवाई के बाद उसे परिजनों को सुपुर्द कर दिया ।

बिछड़े सुरेंद्र साहनी के साथ पत्नी व बच्चे ● जागरण

खुशी

- विक्षिप्तता की हालत में लाया गया पुनर्वास केंद्र
- सोशल वर्कर ने थाना प्रभारी की उपस्थिति में परिजनों को सौंपा

गांव में जश्न का माहौल: निचलौल, महाराजगंज: पांच वर्षों के लंबे अंतराल के बाद परिजनों से मिले सुरेंद्र साहनी के घर रविवार को जश्न का माहौल है। घर परिवार सहित पूरे गांव के लोग भी आज इस खुशी में शामिल हैं। सुरेंद्र की पत्नी के आंखों में खुशियों के आंसू बह रहे थे। सुरेंद्र की पत्नी उषा देवी ने बताया कि उनके देवर जेठ और जेठानी सहित बच्चों ने भी पति के जीवित होने की आशा छोड़ दिया था लेकिन दिल की मजबूत उषा को विश्वास था कि उसके पति अभी जिंदा हैं तथा वे एक न एक दिन जरूर आएंगे।

NATIONAL
News

HINDI

NAVBHARAT TIMES
Mumbai

JULY 2018

www.navbharattimes.com › महानगर › मुंबई › शुक्रवार, 27 जुलाई 2018 › मूल्य 4.00 रु. । पेज 14* । YOUNG INDIA > YOUNG PAPER आर. एन. आई. पंजीयन नंबर 1613/57

NBT
नवभारत टाइम्स

गुरु पूर्णिमा आज

दूसरों की दुनिया बदलने वाले दो भारतीयों को मैगसायसाय

मुंबई के डॉ. वटवानी और लद्दाख के वांगचुक को मिलेगा एशिया का 'नोबेल'

■ प्रेट्र, मनीला: एशिया के नोबेल पुरस्कार माने जाने वाले रैमन मैगसायसाय पुरस्कार के लिए छह लोगों को चुना गया है, जिनमें दो भारतीय भी हैं। मुंबई के भरत वटवानी को सड़क पर भीख मांगने वाले हजारों मानसिक रोगियों का इलाज कराने और उन्हें उनके परिवार से मिलवाने के लिए पुरस्कार दिया गया है। वहीं, लद्दाख के सोनम वांगचुक को प्रकृति, संस्कृति और शिक्षा के जरिए सामुदायिक प्रगति के लिए काम करने को लेकर यह पुरस्कार मिला है। वांगचुक 2009 में तब मशहूर हुए थे, जब आमिर खान की फिल्म 'थ्री इडियट्स' में उनके ही जीवन से प्रेरित होकर फुनसुक वांगड़ू का किरदार बनाया गया। उन्हें रियल लाइफ फुनसुक वांगड़ू भी कहा जाता है। इस तरह, इन दोनों का मुंबई कनेक्शन है। वटवानी मुंबई में जन-कल्याण का काम करते हैं, जबकि वांगचुक का व्यक्तित्व बॉलिवुड की एक सुपर हिट फिल्म में रहा है।

1957 में फिलिपींस के राष्ट्रपति की एक विमान हादसे में मौत के बाद रैमन मैगसायसाय पुरस्कार शुरू हुआ था

31 अगस्त को मनीला में दिए जाएंगे यह पुरस्कार

इलाज के साथ आश्रय भी

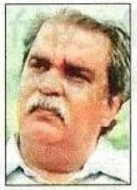

डॉक्टर भरत वटवानी और उनकी पत्नी डॉक्टर स्मिता वटवानी ने पहले छोटे स्तर पर ही दिमागी तौर पर बीमार सड़कों पर रहने वाले लोगों का निजी क्लिनिक में इलाज करवाना शुरू किया था। इसके बाद उन्होंने सड़कों पर रह रहे मानसिक रोगियों को आश्रय देने, खाना मुहैया कराने, दिमागी इलाज कराने और परिवार से मिलवाने के मकसद से 1988 में श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन की स्थापना की। इस काम में वटवानी परिवार की मदद पुलिस, सामाजिक कार्यकर्ता और कई अन्य लोग भी करते थे।

ऐसे लिया सेवा का व्रत

- डॉ भरत वटवानी और उनकी पत्नी स्मिता मनोचिकित्सक हैं
- एक बार डॉ. वटवानी ने एक ऐसे लड़के का इलाज किया था, जिसने बीएससी के बाद लैबोरेट्री टेक्नॉलजी में डिप्लोमा किया था और उसके पिता आंध्र प्रदेश में उच्च अधिकारी थे
- इसी के बाद उन्होंने सड़कों पर भटकते मानसिक रोगियों की सेवा का व्रत ले लिया
- 1989 में पति-पत्नी ने दिमागी तौर पर बीमार और बेसहारा लोगों के लिए कर्जत में पुनर्वास केंद्र खोला
- पिछले 14 सालों में यह केंद्र 5,500 बेसहारा लोगों का सहारा बना है ▸▸ पेज 3

पढ़ाई को बनाया आंदोलन

सोनम वांगचुक ने इंजिनियरिंग करने के बाद स्टूडेंट्स एजुकेशन ऐंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख (SECMOL) की स्थापना करके कोचिंग शुरू की। 1994 में वांगचुक ने 'ऑपरेशन न्यू होप' शुरू किया। इससे पढ़ने वाले छात्रों के मैट्रिकुलेशन एग्जाम्स में सफलता दर में तेजी से वृद्धि देखी गई। जहां, 1996 में सिर्फ 5 प्रतिशत छात्र ही पास हो पाते थे 2015 में बढ़कर 75 प्रतिशत हो गए थे। जहां 1996 में सिर्फ 5 प्रतिशत विद्यार्थी ही पास हो पाते थे, वहीं 2015 में यह बढ़कर 75 प्रतिशत हो गया था।

ये भी हैं विजेता

यह वार्षिक सम्मान पाने वाले अन्य विजेताओं में कंबोडिया के यौक चैंग, पूर्वी तिमोर के मारिया द लॉर्डेस मार्टिंस क्रूज, फिलीपींस के हॉवर्ड डी और वियतनाम के वो थी हांग येन शामिल हैं। यौक चैंग को इलाज और न्याय के लिए ऐतिहासिक स्मृति को संरक्षित करने, मार्टिंस क्रूज को ईंट दर ईंट एक सरोकारी समाज का निर्माण करने, हॉवर्ड डी को शांति, न्याय और आर्थिक विकास के मानवीय चेहरे का विजेता बनने और हांग येन को दिव्यांगों के लिए अवसरों का निर्माण करने के लिए यह पुरस्कार देने की घोषणा की गई है।

मानसिक पीड़ितों की सेवा में जुटे मन का मान

Vimal.Mishra
@timesgroup.com

■ मुंबई : 'इतने साल कोल्हू के बैल की तरह खटना पड़ा है, तब जाकर जो काम कर रहा हूं उसे मान्यता मिली है', मरीजों के अनवरत तांत के साथ बधाई के लिए निरंतर आ रहे फोन कॉल्स और इंटरव्यूज के तकाजों के बीच डॉ. भरत वटवानी ने 'नवभारत टाइम्स' से आए फोन कॉल के बारे में सुना, तो फौरन लाइन पर आए। इस उद्गार के साथ कि 'नवभारत टाइम्स' उन पहले अखबारों में से है, जिन्होंने मानसिक रोगियों के लिए मेरे काम का नोटिस लिया।' डॉ. वटवानी उस रैमन मैगसायसाय अवॉर्ड के विजेता हैं, जो एशिया के नोबेल पुरस्कार जैसा दर्जा रखता है। उनके साथ यह पुरस्कार लद्दाख के सोनम वांगचुक को भी मिला है। पुरस्कार के लिए वटवानी के नाम की घोषणा करते हुए मैगसायसाय अवार्ड फाउंडेशन ने इसके लिए 'भारत के मानसिक रूप से पीड़ित निराश्रितों को सहयोग एवं उपचार मुहैया कराने में उनके साहस और करुणा तथा समाज द्वारा नजरंदाज किये गए व्यक्तियों की गरिमा को बहाल करने के कार्य के प्रति उनके दृढ़ और उदार समर्पण' को श्रेय दिया है।

'मानसिक रोगियों पर बढ़ेगा फोकस' : 'सवाल मेरे व्यक्तिगत सम्मान का नहीं है', डॉ. वटवानी का कहना है, 'इस पुरस्कार का महत्व इस बात में है कि इससे मानसिक रोगियों पर लोगों का फोकस बढ़ेगा। उनका शिकार होकर दर-दर भटक रहे गरीब-गुरबों, बेघरबारों, अनाथों और बेसहारों की पीड़ा के बारे में जागरूकता बढ़ेगी।' अपनी बात को विस्तार देते हुए उन्होंने कहा, 'निश्चित रूप से भारत में मानसिक रोगों के प्रति जागरूकता बढ़ी है, पर अब भी यह जिस स्तर पर होनी चाहिए वह नहीं है। ऐसे रोगियों को अब भी हिकारत से देखा जाता है। यहां तक कि परिवार के सदस्य भी उन्हें वह सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार नहीं देते, जिसकी उन्हें अपेक्षा है।'

कैसे शुरू की सेवा यात्रा: डॉ. वटवानी ने अपनी मनोचिकित्सक पत्नी स्मिता के साथ मानसिक रूप से पीड़ित बेसहारा लोगों को इलाज के लिए बोरीवली में अपने निजी क्लीनिक से शुरुआत की। उन्होंने 1988 में श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन की स्थापना जो सड़कों पर बेसहारा फिरने वाले मानसिक रूप से बीमार लोगों को मुफ्त आश्रय, भोजन और मनोरोग उपचार मुहैया कराता है। 1989 में उन्होंने ऐसे लोगों के लिए कर्जत में पुनर्वास केंद्र भी खोला। पिछले 14 सालों में यह केंद्र 5,500 बेसहारा लोगों का सहारा बन चुका है और ऐसे बहुत से लोगों को उनके परिवारों से मिला चुका है।

जिनकी की मदद, उनके परिजन कृतज्ञ: श्रद्धा फाउंडेशन की वेबसाइट पर तेलंगाना के रामबाबू नामक डिमेन्शिया प्रभावित एक ऐसे व्यक्ति की कहानी अंकित है, जो कर्जत रेलवे स्टेशन पर बेसहारा मिले थे और उन्हें घर के बारे में भी कुछ याद नहीं था। श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन, कर्जत में एक महीने के इलाज के बाद संस्था के कार्यकर्ताओं ने उन्हें उनके घर पहुंचा दिया था। बहुत बुरी हालत में कार्यकर्ताओं द्वारा यहां इलाज के लिए लाई गईं आशा आज पूरी तरह चंगी हैं। बिहार के राजीव को तो उनके घरवाले मृत ही मान चुके थे। आज इन लोगों और उनके परिवारों को डॉ. वटवानी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं मिलते। डॉ. वटवानी बताते हैं, 'मैं यह पुरस्कार देश के उन लाखों लोगों की ओर से स्वीकार कर रहा हूं जिन्हें उचित चिकित्सा और पुनर्वास के साथ अपने ही समाज से बेहतर व्यवहार की अपेक्षा है।'

मैगसायसाय पुरस्कार विजेता डॉ. भरत वटवानी से एनबीटी की खास बातचीत

UTTAR PRADESH

News

HINDI

HINDUSTAN

Bareilly

JULY 2018

बरेली, रविवार
29 जुलाई 2018
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 6.00
पृष्ठ 22+6=28

दैनिक जागरण

www.jagran.com

उत्तरप्रदेश, दिल्ली, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

कर्तव्य समझ बढ़ते चले गए : डॉ. भरत वतवानी

मुंबई के श्रद्धा पुनर्वसन केंद्र में सामान्य हो चुके लोगों संग डॉ. भरत वतवानी एवं डॉ. स्मिता (दाएं)

डॉ. भरत वतवानी के प्रयासों को मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया जाना न केवल भारत बल्कि विश्व में मानसिक स्वास्थ्य की गंभीर होती चुनौती और इसके सापेक्ष अपेक्षित समाधान को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने का सबब है। डॉ. वतवानी ने अपने सार्थक प्रयास से एक राह दिखाई है। दैनिक जागरण से डॉ. वतवानी ने अपनी बातें साझा कीं। प्रस्तुत है मुंबई से ओमप्रकाश तिवारी की रिपोर्ट:

समाजसेवा तो दिल से ही हो सकती है। जब तक दिल में समाज के प्रति संवेदना न हो, किसी से जबरन कुछ नहीं करवाया जा सकता। ऐसी ही एक संवेदना जगी थी डॉ. भरत वतवानी के हृदय में, जब उन्होंने उलझे बालों एवं गंदे-फटे कपड़ोंवाले एक नौजवान को मुंबई में एक रेस्टोरेंट के बाहर नारियल के खोपरे में नाली का पानी पीते देखा।

डॉक्टरी के शुरुआती दिन थे। पत्नी स्मिता भी उन्हीं की तरह मानसिक चिकित्सक ही थीं। दोनों मिलकर पांच बेड का एक छोटा सा क्लीनिक चलाते थे। उस युवक को लाकर उसी क्लीनिक के एक बेड पर भर्ती कर लिया। इलाज शुरू हुआ। कुछ दिन में युवक ठीक हुआ तो पता चला कि वह पैथोलॉजिस्ट है। उसके पिता आंध्रप्रदेश में जिला परिषद के सुपरिनटेंडेंट थे। तब डॉ. वतवानी को अहसास हुआ कि सड़कों पर घूमते ऐसे मानसिक रोगी भिखारी नहीं होते। इनका इलाज करके इन्हें एक ठीकठाक जिंदगी दी जा सकती है। इन्हें इनके परिवार से मिलवाया जा सकता है। और यहीं से शुरू हुआ डॉ.भरत वतवानी एवं डॉ. स्मिता वतवानी के सड़कों पर घूमते मानसिक रोगियों का इलाज कर उन्हें उनके घरवालों से मिलवाने का सफर, जो आज डॉ. वतवानी को रेमन मैग्सेसे अवार्ड तक ले आया।

आज भी डॉ.वतवानी मुंबई की सड़कों पर चलते हुए अचानक ड्राइवर को गाड़ी रोकने और यूटर्न लेने को कहते हैं। क्योंकि सड़क चलते उनकी निगाहें किसी न किसी विक्षिप्त पर पड़ जाती हैं।

UTTAR PRADESH
News

HINDI

HINDUSTAN
Bareilly

AUGUST 2018

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
सोमवार, 20 अगस्त 2018, बरेली, पांच प्रदेश, 21 संस्करण
www.livehindustan.com

दो साल बाद मिले रमेश, लौटने पर आंखें हुई नम

शाहजहांपुर | हिन्दुस्तान संवाद

दो साल से लापता रमेश केरल में मिल गए। बरेली के शैलेश ने रमेश को अपनों तक पहुंचाया। रविवार को रमेश के वापस आने पर परिवार वालों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

निगोही के गांव बलेली निवासी रमेश दो साल पहले कहीं चले गए थे। भटकते हुए वह केरल में पहुचं गए। इस बीच मुंबई की श्रद्धा पुनर्वास केंद्र के लिए काम करने वाले शैलेश कुमार को केरल के कसारागोद में रमेश मिले। श्रद्धा संस्था ने उनका इलाज कराया। ठीक होने पर उसने नाम और

मिली खुशी

- बरेली के शैलेश ने रमेश को अपनों से मिलवाया
- परिजनों में खुशी, रमेश के वापस लौटने पर गांव वाले भी उमड़े

बताया। तब संस्था से जुड़े बरेली के मनोवैज्ञानिक शैलेश कुमार शर्मा रमेश को लेकर गांव पहुंचे। दो साल बाद रमेश के लौटने पर परिवार वाले खुश हो गए। परिजनों के मुताबिक, रमेश की शादी नीरज से हुई थी। उसकी तीन बेटियां नीशू, शीलू और श्रीदेवी है। शैलेश ने बताया कि उनकी संस्था सड़कों पर भटकने वाले लावारिस व्यक्तियों के लिए काम करती है।

रमेश की कई जगह पर तलाश की: रमेश की मां सत्यवती ने बताया कि उन्होंने कई जगह पर तलाश किया, लेकिन कोई पता नहीं चला। उम्मीद थी कि मेरा बेटा जल्दी ही आएगा। इस उम्मीद में दो साल गुजर गए। बरेली के रहने वाले शैलेश शर्मा ने बताया कि सड़कों पर भटकने वाले मानसिक बीमार लोगों के मदद के लिए समाज को आगे बढ़कर मदद करनी चाहिए, ताकि समाज द्वारा तिरस्कार किए गए इन व्यक्तियों को अपने अधिकार मिल सके।

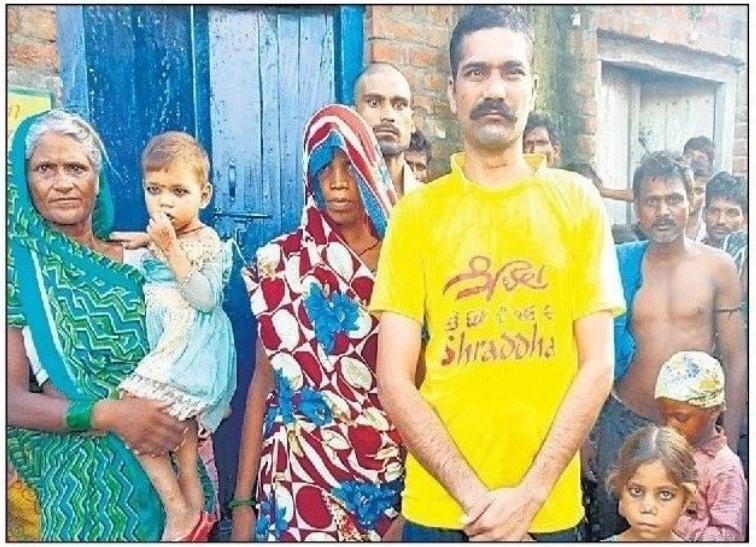

शाहजहांपुर में रमेश की अपने घर पर वापसी दो साल के बाद हो पाई। ● हिन्दुस्तान

MAHARASHTRA
News

HINDI

DAINIK BHASKAR
Nagpur

FEBRUARY 2019

city भास्कर
दैनिक भास्कर bhaskarhindi.com नागपुर, सोमवार, 4 फरवरी 2019

भारत की सड़कों पर 4 लाख मनोरोगी

- एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंस की वार्षिक कार्यशाला में डॉ.वाटवाणी ने कहा

नगर प्रतिनिधि | नागपुर

हमें अपने लक्ष्य को बदलने की आवश्यकता है। एक सर्वे के अनुसार, वर्तमान में भारत की सड़कों पर 4 लाख से अधिक मानसिक रोगी हैं, जबकि मैं 7 हजार रोगियों तक ही पहुंचा हूं। लोग कहते हैं कि मैंने बड़ा काम किया, लेकिन वर्तमान की सच्चाई तो यह है कि मैंने नाममात्र का काम किया है। इसलिए हम सभी को मनोरोगियों के लिए काम करना चाहिए। यह बात वरिष्ठ मनारोग चिकित्सक डॉ.भरत वाटवानी ने कही। वह एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंसेस की वार्षिक कार्यशाला में रविवार 3 फरवरी को सेंटर प्वाइंट होटल में बोल रहे थे। मंच पर एएमएस के अध्यक्ष डॉ. हरिश वरभे, सचिव अजय अंबाडे, परिषद के अध्यक्ष डॉ. राजू खंडेलवाल, यंग अचीवर्स अवार्ड के अध्यक्ष डॉ. रमेश मुंडले, डॉ. नरेंद्र मोहता, डॉ. एस.एन. देशमुख उपस्थित थे।

उन्होंने कहा कि वर्ष 1998 में मैं कैलाश मानसरोवर की यात्रा पर जाने वाला था, लेकिन अस्पताल में दो मनोरोगी होने से यात्रा रद्द हो गई। बाद में पता चला कि सभी श्रद्धालुओं की दुर्घटना में मृत्यु हो गई, यदि मैं मरीजों को छोड़कर जाता तो मैं भी जिंदा नहीं बचता। उस घटना से जीवन का दृष्टिकोण बदला। बाबा आमटे से मुलाकात ने मेरा दृष्टिकोण बदला। मनोरोगियों के लिए श्रद्धा रिहेबलेशन सेंटर चालू करने की प्रेरणा मिली। बाबा आमटे से मिलने जाते समय एक स्क्रिझोफ्रेनिक मरीज मिला, परिजनों ने उसे बांधकर रखा था। उसे देखकर बाबा आमटे रोने लगे और वहीं सड़क पर उसकी मदद करने लगे, यह दृश्य मेरे लिए काफी प्रेरणादायक रहा। इसी तरह एक बार सड़क पर एक मनोरोगी गटर का पानी पी रहा था, यह देख मुझे पहली बार मनोरोगियों के लिए कार्य करने की प्रेरणा मिली। डॉ. कृष्णा कांबले को 'प्रोफेशनल एक्सेलंस पुरस्कार' और कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. अमोल डोंगरे को यंग अचीवर्स पुरस्कार दिया गया।

इस अवसर पर डॉ. सुधीर भावे ने मार्गदर्शन किया। डॉ.हरीश वरभे, डॉ. राजू खंडेलवाल, डॉ. अशोक अरबट, डॉ. चंद्रशेखर मेश्राम ने अपना मनोगत व्यक्त किया। संचालन डॉ. कल्पता दाते, डॉ. वर्तिका पाटील व आभार डॉ. अजय आंबाडे ने व्यक्त किया।

PUNJAB
News

HINDI

DAINIK SAVERA TIMES
Jalandhar

JULY 2019

दैनिक सवेरा टाइम्स
www.dainiksaveratimes.com
अंधेरे से उजाले की ओर...
पंजाब, चंडीगढ़, दिल्ली, हिमाचल, जम्मू, हरियाणा से प्रकाशित
DAINIK SAVERA TIMES, JALANDHAR >> पृष्ठ 10+4=14 >> वर्ष : 10 >> अंक : 156 जालंधर, Mon, 29 July 2019

एक साल पहले घर से गए मनोरोगी को परिजनों से मिलवाया

मुकेरियां, 28 जुलाई (सुभाष): आज के समय जहां इंसान-इंसान का ही दुश्मन बना हुआ है। वहीं ऐसे लोग व संस्थान भी है जो गरीब व बेसहारा लोगों की मदद करते हैं। ऐसा ही एक संस्थान है श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन। यह भटके हुए अज्ञात मनोरोगियों की निशुल्क मदद कर रहा है।

इसी संस्था के लिए काम करने वाला समाज सेवक राकेश कुमार ने एक साल पहले घर से भटके युवक सोनू पुरी को उसके भाई को सौंपते हुए बताया कि उनकी संस्था द्वारा पूरे देश से रोड पर भटकने

सोनू को उसके भाई हरि ओम को सौंपते समाज सेवी राकेश कुमार व डा. जतिंदर सिंह।

पूर्वक उनके घरों में पहुंचाया जाता महीने पहले चनई रोड पर मिला। शहर मुकेरियां बताया। इस के चलते उसे मुकेरियां थाना में लाया गया। छानबीन के बाद उसके घर का पता ट्रेस ना हो पाया तो उसी वक्त वहां पहुंचे क्षेत्र के प्रसिद्ध वैद्य व शहीद भगत सिंह वेलफेयर संस्था के प्रधान डा. जतिंदर सिंह अत्तर ने भटके हुए सोनू पुरी की फोटो खींच सोशल मीडिया पर डाली दी। चंद मिनटों में उन्हें सोनू के मौसी के लड़के हरि ओम का फोन आया। उसके बाद वह तुरंत थाने पुहंचा। हरि ओम ने बताया कि उसकी माता व घर वालों को बता दिया है कि सोनू मिल गया है। हरि ओम व सोनू दोनों ने एक-दूसरे को पहचान लिया। हरि ओम

HARYANA
News

HINDI

DAINIK JAGRAN
Hissar

NOVEMBER 2019

हिसार, बुधवार
6 नवंबर 2019
हरियाणा
मूल्य ₹ 4.50
पृष्ठ 18
www.jagran.com

दैनिक जागरण

हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

सिटी हलचल

20 साल बाद परिजनों से मिला रोहनात का रामचंद्र

भिवानी : रोहनात के रामचंद्र 20 साल बाद परिजनों से मिले तो मां बेटे को गले लगा कर खुशी में रोने लगी। श्रद्धारिहेबिलेशन फाउंडेशन मुंबई के शकील अहमद ने बताया कि चार नवंबर को किसी तरह ढूंढ कर रामचंद्र को उसके परिजनों से मिलवाया गया। उन्होंने बताया कि रामचंद्र मानसिक रूप से बीमार था और वह घर से निकल गया था। यह मानव ज्योति गुजरात में था। उसका इलाज करवाया गया। जब वह सामान्य हो गया तो उसे पूछताछ कर हरियाणा के जिला भिवानी के गांव रोहनात लाया गया। उन्होंने बताया कि पूरा परिवार रामचंद्र को पाकर खुश है।

अपने परिजनों के साथ रोहनात का रामचंद्र।

धनबाद, बुधवार
18 दिसंबर 2019
धनबाद
मूल्य ₹ 4.00
पृष्ठ 20

दैनिक जागरण

www.jagran.com
झारखंड, बिहार, प. बंगाल, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर और हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित

20 साल पूर्व लापता सोहनी पहुंची बालीचिरका गांव, परिजनों में खुशी

संस बलियापुर : बलियापुर स्थित बाली चिरका गांव से 20 साल पूर्व लापता हुई 38 वर्षीय सोहनी हेंब्रम को सामने देखकर उनके परिजनों में मंगलवार को खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। 20 साल बाद अपनी बेटी व बहन को देख सोहनी व परिजनों की आंखों में खुशी के आंसू आ गए। महाराष्ट्र स्थित करजात में कार्यरत सामाजिक संस्था श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन की कार्यकर्त्ता पोली दास की पहल से सोहनी दुबारा अपने परिवार के लोगों से मिली। परिजनों ने बताया कि सोहनी की 18 साल में शादी हो जाने के बाद उनकी मानसिक स्थिति खराब हो गई थी।

वह घर से बाहर इधर-उधर भटकती रहती थी। 20 साल पूर्व वह अचानक गायब हो गई। परिवार के लोगों ने कई सालों तक उसकी काफी खोजबीन की। उनका कोई पता नहीं चल सका। थक हारकर परिजन उन्हें खोजना छोड़कर अपने दैनिक काम में जुट गए। समय बीतता गया। मानसिक रोगी सोहनी

बलियापुर के बालीचिरका स्थित अपने घर में 20 साल बाद पहुंची सोहनी। साथ में सामाजिक कार्यकर्त्ता पोली दास व परिवार के लोग। सोहनी को देख सभी खुश नजर आए● जागरण

भटकते हुए शिमला पहुंच गई। शिमला पुलिस ने उसे शिमला मेंटल हॉस्पिटल में भर्ती कराया। करीब एक महीना पूर्व सामाजिक गतिविधि में अपनी सक्रिय भूमिका निभानेवाली सामाजिक संस्था श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन करजात महाराष्ट्र को मानसिक रोगी सोहनी के बारे में जानकारी मिली। संस्था ने सोहनी को शिमला से रेस्क्यू कर महाराष्ट्र ले आई। संस्था के संस्थापक सह मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉ. भरत भटवाणी की ओर से उनका इलाज किया जाने लगा। जब इनकी स्थिति में सुधार हुआ तो उसने बलियापुर बाली चिरका गांव का पता के साथ अपने माता-पिता का नाम भी बताया। इसके बाद संस्था ने महिला सामाजिक कार्यकर्ता पोली दास के साथ सोहनी को बलियापुर स्थित उनके परिजनों को सौंपने के लिए भेजा। पोली सोहनी को लेकर मंगलवार को बलियापुर पहुंची।

JHARKHAND
News

HINDI

DAINIK JAGRAN
Dhanbad

DECEMBER 2019

JHARKHAND
News

HINDI

DAINIK BHASKAR
Dhanbad

DECEMBER 2019

दैनिक भास्कर

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

चुनाव फ्रंट पेज

कुल पेज 16+8 =24| मूल्य ₹ 4.00 | मधुरिमा सहित| वर्ष 9, अंक 239 | महानगर

धनबाद, बुधवार, 18 दिसंबर, 2019 | पौष कृष्ण पक्ष-6, 2076

एनजीओ की पहल पर बालिचीरका की मंदबुद्धि युवती 10 साल बाद पहुंची घर

सिन्दरी स्टेशन में ट्रेन से गलती से चढ़कर चली गई थी मुंबई

भास्कर न्यूज | बलियापुर

बलियापुर के बालिचीरका आदिवासी गांव की मंदबुद्धि लापता युवती सोहनी हेंब्रम 10 साल बाद अपने घर पहुंची। मुंबई की श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन नामक एनजीओ की पहल पर युवती बालिचीरका गांव सुरक्षित पहुंची। एनजीओ के प्रतिनिधि पोली दास ने बलियापुर पुलिस की मदद से युवती को परिजनों के हवाले कर दिया गया। सोहनी को देखते ही परिजनों ने गले लगा लिया। पिता मोतीलाल हेंब्रम का कहना है कि मंदबुद्धि होने के कारण वह घर से लापता हो गई थी। सिंदरी स्टेशन से ट्रेन पर चढ़कर धनबाद चली गई थी। इसके बाद अन्य ट्रेन से मुंबई पहुंच गई। परिजनों ने रिश्तेदारों के यहां भी

सिंदरी में अपने परिजनों से मिलते सोहनी हेंब्रम।

काफी खोजबीन की, पर कोई पता नहीं चल पाया था। मुंबई में किसी सज्जन ने उक्त युवती से मिलने पर शिमला मानसिक रोग अस्पताल में भर्ती कराया, जहां 9 वर्षों तक उसका इलाज चला। वह मानसिक रूप से स्वस्थ होने पर अस्पताल के कर्मचारी ने एनजीओ के प्रतिनिधि को सोनी के संबंध में अवगत कराया। एनजीओ प्रतिनिधि ने अस्पताल प्रबंधन से संपर्क कर लड़की को अपने जिम्मे में ले लिया। युवती पूर्ण रूप से ठीक होने पर नाम व पता के सहारे घर तक पहुंची।

UTTAR PRADESH
News

HINDI

AMAR UJALA
Meerut

DECEMBER 2019

वर्ष 34 | अंक 14 | पृष्ठ : 18 | मूल्य : 4.00 रुपये या 5.00 रुपये उड़ान सहित

अमर उजाला

6 राज्य • 2 केंद्रशासित प्रदेश • 21 संस्करण

मेरठ बुधवार, 25 दिसंबर 2019

15 साल बाद घर लौटा सलूनी का प्रदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

सरसावा (सहारनपुर)। सरसावा थाना क्षेत्र के ग्राम सलूनी का निवासी युवक प्रदीप 15 साल बाद परिजनों के पास पहुंचा। महाराष्ट्र राज्य की एक पुनर्वास संस्था के प्रयास के कारण युवक घर पहुंच सका।

मंगलवार को सलूनी के निवासी मेन पाल ने बताया कि उसके स्वर्गीय चाचा मेहर चंद का अविवाहित पुत्र प्रदीप करीब 20 वर्ष की आयु में साल 2004 में काम की तलाश में घर से गया, लेकिन लौटकर नहीं आया। लापता होने के बाद परिजनों ने हरसंभव स्थान पर उसे खोजा, लेकिन उनकी तलाश अधूरी रही। मंगलवार को मेनपाल सुबह आठ बजे तैयार होकर सरसावा जाने की तैयारी कर रहे थे। घर के मुख्य द्वार पर उन्हें एक व्यक्ति के साथ प्रदीप नजर आया तो वह दंग रह गए। उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि सामने खड़ा व्यक्ति उनका वर्षों पहले लापता चचेरा भाई प्रदीप ही है। मेन पाल ने बताया कि उसने सारे परिजनो को फौरन घर के बरामदे में बुलाया तथा एक-एक कर परिजनो को सामने बैठे व्यक्ति को पहचानने को कहा। बचपन में अपनी मां को खो देने वाले प्रदीप का लालन पालन करने वाली सौतेली मां मिथिलेस ने किया। उसने प्रदीप को फौरन पहचान लिया।

मनोरोगी होने के कारण नहीं कर पाया संपर्क

प्रदीप।

प्रदीप को लेकर सलूनी पहुंचे श्रद्धा पुनर्वास केंद्र में मनोरोग चिकित्सक शैलेश कुमार ने बताया कि प्रदीप उन्हें शिमला के क्षेत्र में मनोरोगी की अवस्था में मिला । इसके बाद उसे हिमाचल के मानसिक रोग अस्पताल में भर्ती कराया। वहां से कुछ समय पश्चात उन्हें महाराष्ट्र राज्य में रायगढ़ जिले के कर्जत क्षेत्र में स्थित श्रद्धा पुनर्वास केंद्र लाया गया। शैलेश ने बताया कि केंद्र में संस्था के ट्रस्टी और वरिष्ठ मनो चिकित्सक डॉ. भरत वाटवानी की निगरानी में प्रदीप का मनोपचार किया। प्रदीप की भाषा और बोलचाल के आधार पर वह उसे यहां लेकर पहुंचा।

प्रदीप का लालन-पालन सौतेली मां मिथिलेश की देखरेख में हुआ था

BIHAR NEWS - HINDUSTAN - PATNA - 25th FEB 2020

हिन्दुस्तान
www.livehindustan.com
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
मंगलवार, 25 फरवरी 2020, पटना, फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया, विक्रम संवत 2076, पांच प्रदेश, 21 संस्करण
बिहार का नं. 1 अखबार

बिछड़े विजय को परिजनों की तलाश

छपरा | निज प्रतिनिधि

मानसिक स्थिति खराब होने की वजह से घर से बेघर हुए विजय को अब अपने परिजनों की तलाश है। मुम्बई की एक संस्था द्वारा उसका उपचार कराने के बाद जब उसकी मानसिक स्थिति ठीक हुई तो उसने अपना घर छपरा बताया है। अभी वह मुम्बई में है। बताया जाता है कि पिछले वर्ष 16 अगस्त 2019 का गाजियाबाद रेलवे स्टेशन पर बदहवास स्थिति में एक युवक को कुछ लोगों ने पाया था।

उस समय उसकी मानसिक स्थिति काफी खराब थी। उसके बाद उसे लोगों ने अपना घर आश्रम, दिल्ली में शिफ्ट किया। उसकी मानसिक स्थिति खराब देख उसे श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन, मुंबई में शिफ्ट किया गया। वहां मनोचिकित्सक डॉ. भरत वटवानी की देखरेख में युवक का मानसिक उपचार किया गया। जब उसकी स्थिति सही हुई तो मनोवैज्ञानिक शैलेश कुमार शर्मा ने युवक की काउंसिलिंग की। तब उसने अपना नाम विजय, पिता का नाम बाबू, जाति पंडित व घर छपरा बताया। विजय ने अपने दो भाइयों का नाम छोटन व राजू बताया है, लेकिन छपरा में कहां का रहने वाला है ।

BIHAR NEWS - HINDUSTAN - PATNA - 29th FEB 2020

हिन्दुस्तान
www.livehindustan.com
तरक्की को –
शनिवार, 29 फरवरी 2020, पटना, फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्ठी, विक्रम संवत 2076, पांच प्रदेश, 21 संस्करण
बिहार का नं. 1 अखबार

बिछड़े विजय को 'हिन्दुस्तान' ने परिजनों से मिलाया

अपनी माता व परिजनों के साथ खड़े विजय। • हिन्दुस्तान

छपरा | निज प्रतिनिधि

घर से बिछड़े विजय को 'हिन्दुस्तान' ने परिजनों से मिलाने की अहम भूमिका निभायी। 25 फरवरी को हिन्दुस्तान में 'बिछड़े विजय को परिजनों की तलाश' शीर्षक से खबर प्रकाशित की। इसके बाद परिजनों ने उसे पाने के लिए खोज शुरू कर दी। दो दिनों तक काफी प्रयास करने के बाद इस युवक के माता-पिता व सभी परिजन तीन साल बाद मिल गए।

विदित हो कि पिछले वर्ष 16 अगस्त 2019 का गाजियाबाद रेलवे स्टेशन पर बदहवास स्थिति में एक युवक को कुछ लोगों ने पाया था। उस समय उसकी मानसिक स्थिति काफी खराब थी। उसके बाद उसे लोगों ने अपना घर आश्रम, दिल्ली में शिफ्ट किया। मानसिक स्थिति खराब होने पर कराया गया उपचार उसकी मानसिक स्थिति खराब देख उसे श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन, मुंबई में शिफ्ट किया गया। वहां मनोचिकित्सक डॉ. भरत वटवानी की देखरेख में युवक का मानसिक उपचार किया गया। जब उसकी स्थिति सही हुई तो मनोवैज्ञानिक शैलेश कुमार शर्मा ने युवक की काउंसिलिंग की। उसने अपना नाम विजय, पिता का नाम बाबू, जाति पंडित व घर छपरा बताया था। विजय ने अपने दो भाइयों का नाम छोटन व राजू बताया था, लेकिन छपरा में कहां का रहने वाला था, इसके बारे में वह जानकारी नहीं दे पा रहा था। इसके बाद ही विजय को उसके परिजनों से मिलाने के लिए हिन्दुस्तान ने 25 फरवरी को खबर प्रकाशित की। जिस संस्था में उसका उपचार किया गया था, उस संस्था के उक्त मनोवैज्ञानिक गुरुवार को उसे लेकर छपरा पहुंचे।

आधार कार्ड से विजय का बायोमेट्रिक से हुआ मिलान : विजय को पाने के लिए कई दावेदार हो गए। दो दिनों तक काफी प्रयास करने के बाद शुक्रवार को उसके परिजन अवतार नगर थाना क्षेत्र में मिले।

धन्यवाद हिन्दुस्तान

- तीन वर्षों पहले परिजनों से बिछड़ गया था
- हिन्दुस्तान ने 25 फरवरी को खबर की थी प्रकाशित

NATIONAL
News

HINDI

PUNJAB KESARI
Jammu

MARCH 2020

भारत में 1.22 करोड़ से अधिक पाठक (IRS 2017)
PUNJAB KESARI JAMMU
पंजाब केसरी
जम्मू, रविवार • 8 मार्च, 2020
वीर संवत 2545
वर्ष 13, अंक 141
पृष्ठ 16+4+4(रविवारीय)=24
मूल्य ₹ 4.00

अपमान मत करना नारियों का, इनके बल पर जग चलता है, each for equal पुरुष जन्म लेकर तो... इन्हीं की गोद में पलता है !!!

श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन संस्था मुंबई द्वारा खोए हुए बेटे को मिलाने पर परिवार के सदस्यों ने संस्था का जताया आभार

उधमपुर(विनय शर्मा): गुमशुदा हुए युवक को उसके परिवार के साथ श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन संस्था सदस्यों द्वारा मिलाया।

गुमशुदा हुए युवक के पिता चरण दास ने बताया कि उनका बेटा मानसिक तौर पर बीमार था तथा 2013 में वह अचानक घर से गायब हो गया गुमशुदगी उधमपुर थाने में भी करवाई गई थी उसे ढूंढ के कई कत्थक प्रयास भी किए का कोई पता नहीं चला परंतु अचानक उन्हें फोन पर किसी ने उनके बेटे ई मिलने की जानकारी दी तथा उसे उसके घर तक पहुंचा कर उसके परिवार के साथ मिलाया इस पर उन्होंने श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन संस्था का आभार प्रकट किया तथा उन्होंने ने बताया कि उनके बेटे की ओ संस्था द्वारा इलाज भी करवाया। तथा उनके खोए हुए बेटे को भी उनके परिवार के साथ मिलाया।

BIHAR
News

HINDI

DAINIK JAGRAN
Gaya

JANUARY 2021

गया, मंगलवार
12 जनवरी, 2021
नगर संस्करण
मूल्य ` 3.50
पृष्ठ 18

दैनिक जागरण

www.jagran.com

बिहार, झारखंड, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

पांच वर्ष से भटकी लड़की को मिले स्वजन

संवाद सूत्र, खिजरसराय : मुंबई के रायगढ़ में श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन जो एक युवा समाजसेवी वर्ग ने मंद बुद्धि, मानसिक बीमार जैसे सड़कों पर घूमने वाले लोगों को उनके परिजनों से मिलवाने का मिशन बनाया है। रविवार को फिर इस समाजसेवी ने गया जिले के खिजरसराय थाना क्षेत्र अंतर्गत जमुआवां गांव के रहने वाले मानसिक बीमार सोनी, जो 5 साल पहले अपने घर से निकले और रास्ता भटक कर परिजनों से बिछड़ गई थी। मुंबई के रायगढ़ की सड़क पर घूमते देख सोशल मीडिया के माध्यम से इनके स्वजनों को खोज निकाला।

5 सालों से अपने परिवार से दूर रहने वाला मानसिक बीमार व्यक्ति की भाई अपने बहन को पाकर और बेटी अपने पिता को पाकर खुश हैं। सोनी, 5 साल पहले अपने घर से निकले और रास्ता भटक कर परिजनों से बिछड़ गई थी। इसके बाद से ही सोनी विक्षिप्त की तरह शहर-शहर घूमते मुम्बई के रायगढ़ में पहुंच गई। जहां यह सड़को पर घूम कर अपनी जिंदगी गुजार रही थी। तभी एक दिन श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के संस्थापक डॉ नीलेश म्हात्रे की नजर इन पर पड़ गई। डॉ म्हात्रे ने सोनी पर निगरानी करते हुए सोशल मीडिया के माध्यम से इसका फ़ोटो पोस्ट कर खोजना शुरू किया। डॉ म्हात्रे ने सोशल मीडिया के माध्यम से खिजरसराय के केनी के रहने वाले गौरव कुमार सिंह से दूरभाष पर संपर्क किया और सोनी के बारे में बताई। जिसके बाद गौरव

मानसिक रूप से विकलांग को परिवार के हवाले करते संस्था के लोग • जागरण

ने अपने मित्र रजनीश सिंह दांगी के साथ लड़की के परिवार से पता कर डॉ म्हात्रे को जानकारी दी। लड़की के परिवार वालों ने मुंबई से लाने में असमर्थता जताई। जिसके बाद गौरव कुमार सिंह के कहने पर श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन की एम्बुलेंस मुंबई से बिहार पहुंची। सोनी के घर वालों ने डॉ म्हात्रे से संपर्क किया। बिहार राज्य के गया जिला के खिजरसराय के रहने वाले सोनी के भाई वसंत ने पटना पहुंच कर बहन के मिल जाने के बाद खुश होकर सोनी को अपने साथ घर लेकर चले गए।

UTTAR PRADESH
News

HINDI

AMAR UJALA
Kanpur

JANUARY 2021

अमर उजाला

Kanpur, Sunday, 10.01.2021

जिसे समझे मृत, 11 साल बाद लौटा

मुंबई के एक एनजीओ की टीम कर्नलगंज स्थित घर लेकर आई

माई सिटी रिपोर्टर

एनजीओ की टीम नईम को लेकर उसके घर पहुंची। संवाद न्यूज एजेंसी

कानपुर। कई बार छोटे-छोटे प्रयास किसी के लिए बड़ी खुशियों का रूप ले लेते हैं। शनिवार को ऐसा ही उदाहरण कर्नलगंज स्थित छोटे मियां के हाते में देखने को मिला। 11 साल से लापता मानसिक रूप से बीमार जिस शख्स को परिजन मृत समझ बैठे थे, मुंबई के एक एनजीओ की टीम उसे लेकर अचानक घर पहुंच गई। उसे देखकर घर वालों के आंसू बह निकले।

छोटे मियां हाता निवासी नईम (45) अपने आठ भाइयों, मां व तीन बहनों के साथ रहते थे। 2003 में घर की जर्जर छत गिरने से तीन भाइयों, मां रशीदा बेगम व एक बहन की मौत हो गई थी। नईम के सिर पर भी चोट आने से याददाश्त चली गई थी। भाई मो. नसीम ने बताया कि तब उनके बड़े भाई का छह साल तक इलाज कराया। 2009 में सुधार होने पर वे हैदराबाद एक चप्पल कारखाने में काम करने चले गए। तब उनकी उम्र 34 साल रही होगी। इसके बाद से उनका कुछ पता नहीं चला। वे तो भाई के जिंदा होने की उम्मीद भी खो चुके थे। वहीं, मार्च 2020 में नईम सायन एरिया में भटकते हुए मुंबई की श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन की टीम को मिले। श्रद्धा संस्था के फाउंडर ट्रस्टी डॉ. भरत वाटवानी ने उनका 11 महीनों तक इलाज किया। हालत में सुधार हुआ तो उन्होंने घर का पता व अपना नाम बताया। शनिवार को संस्था से जुड़े मनोवैज्ञानिक शैलेश शर्मा टीम के साथ एंबुलेंस से नईम को लेकर घर पहुंच गए। संस्था के शैलेश शर्मा ने बताया कि नईम को निशुल्क दवाएं आगे भी भेजी जाती रहेंगी।

JHARKHAND
News

HINDI

PRABHAT KHABAR
Deoghar

JANUARY 2021

झारखंड का सर्वाधिक प्रसारित दैनिक

अखबार नहीं आंदोलन

प्रभात खबर

देवघर । रांची । पटना । जमशेदपुर । धनबाद । कोलकाता । मुजफ्फरपुर । भागलपुर । गया से प्रकाशित

फाउंडेशन ने मंदबुद्धि युवती का मुंबई में इलाज करा कर परिजन को सौंपा

प्रभात खबर एक्सक्लूसिव

युवती एवं परिजनों के साथ संस्थान कर्मी.

बोरियो. मददगार हो कोई तो राह मिल ही जाती है. आज यह कथन भी सत्य साबित हुआ है. आज भी समाज में ऐसे संस्थान व कर्मी हैं जो लोगों की दर्द बांट रहे हैं. उनकी जरुरतों की पूर्ति कर नयी राह दिखाते हुए नयी जिंदगी दे रहे हैं. एक वर्ष पूर्व मुंबई के सड़कों पर भटकती मंदबुद्धि युवती को श्रद्धा रिहॅबिलिटेशन फाउंडेशन मुंबई ने समुचित उपचार कर गुरुवार को बोरियो थाना पहुंचाया. थाना प्रभारी को मामले की जानकारी उपलब्ध कराते हुए संस्थानकर्मी ने उक्त युवती को बांझी संथाली पंचायता के मड़वा गांव पहुंच उनके परिजनों को सौंपा. युवती के परिजनों ने संस्थान के कर्मियों को साधुवाद दिया. बेटी के स्वस्थ होकर घर लौटने पर खुशी जाहिर की. संस्थान के शाहनिर अख्तर ने बताया कि एक वर्ष पूर्व युवती सुमाती सोरेन (25 वर्ष) भटकती हुई बडाला (मुम्बई) में पुलिस को मिली थी. इसके बाद बडाला पुलिस ने उक्त युवती के उपचार के लिए श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन मुंबई को प्रक्रिया के बाद सौंप दिया था. मरीज को ठीक कर घर पहुंचना हमारा कर्तव्य है. संस्थान के अदिति शेजल ने बताई श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन मुंबई, कोलकाता, श्रीनगर, हैदराबाद, दिल्ली, केरल, ओडिशा, तमिलनाडु और असम में है. संस्थान के संस्थापक डॉ भारत वाटवानी को रमोन मगसेस पुरस्कार 2018 से सम्मानित भी किया जा चुका है. मौके पर थाना प्रभारी जगन्नाथ पान, एसआइ बाजिद अली, एएसआ मो जमील सहित अन्य उपस्थित थे.

MOTHER & CHILD
REUNITED IN
PATHARIA
MADHYA PRADESH
5th MARCH 2021

MADHYA PRADESH
News

HINDI

NAVBHARAT
Jabalpur

MARCH 2021

नव भारत

जबलपुर | मंगलवार | 9 मार्च, 2021 | वर्ष 72 | अंक 22 | पृष्ठ 12 | मूल्य रु. 4.00 | www.navabharat.com

विधानसभा चुनाव में दिये वोट ने मिलाया बिछड़ा हुआ परिवार

नवभारत, पथरिया वार्ड 05 में निवासरत एक परिवार की महिला 12 मार्च से पहले घर से बिना बताये कहीं चली गई थी महिला मानसिक रूप से कमजोर है घर की माली हालत बहुत खराब होने के कारण पति ज्यादा खोज परख भी नहीं कर पाया .यह महिला मुंबई में सड़क किनारे अपने बच्चे के साथ श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन स्वयंसेवी संस्था के सदस्यों को मिली और संस्था की मदद से महिला अपने घर तक पहुंच पाने में सफल हुई। संस्था के सदस्य पोलीदास और विकास रजक ने बताया कि जब महिला से पूछताछ की जा रही थी तब वह केवल दमोह और बीना का नाम बता पा रही थी महिला ने बताया कि उसने रामबाई को वोट दिया था और पथरिया विधायक रामबाई सिंह परिहार तो पूरे मध्यप्रदेश में मशहूर जो ठहरीं संस्था के सदस्यों ने तत्काल यह अंदाजा लगा लिया कि महिला पथरिया विधानसभा क्षेत्र की है और उसके बाद संस्था के सदस्य उस महिला को लेकर पथरिया थाने पहुंची। जहां पर पुलिस थाने में महिला के संबंध में दी की गई। महिला की पहचान रूपा पति परसोत्तम अहिरवार के रूप में हुई।

दैनिक भास्कर

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

विस चुनाव में दिए वोट ने मिलाया बिछड़ा हुआ परिवार

पथरिया। नगर वार्ड क्रमांक 5 में निवासरत एक परिवार की महिला 12 मार्च माह पहले घर से बिना बताए कहीं चली गई थी। महिला मानसिक रूप से कमजोर होने एवं घर की माली हालत खराब होने के कारण पति ज्यादा खोज परख भी नहीं कर पाया।यह महिला मुंबई में सड़क किनारे अपने बच्चे के साथ श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन स्वयंसेवी संस्था के सदस्यों को मिली और संस्था की मदद से महिला अपने घर तक पहुंचने में सफल हुई।

संस्था के सदस्य पोलीदास, विकास रजक ने बताया कि जब महिला से पूछताछ की जा रही थी, तब वह केवल दमोह और बीना का नाम बता पा रही थी। महिला ने बताया कि उसने रामबाई को वोट दिया था। संस्था के सदस्यों ने यह अंदाजा लगा लिया कि महिला पथरिया विधानसभा क्षेत्र की है और उसके बाद संस्था के सदस्य उस महिला को लेकर पथरिया थाने पहुंचे।

जहां पर पुलिस थाने में महिला के संबंध में पतासाजी की गई तो महिला की पहचान रूपा पति परसोत्तम अहिरवार के रूप में हुई। पुलिस द्वारा उक्त महिला के पति को थाने बुलाकर महिला की पहचान कराई गई और बाद में थाना प्रभारी बृजेश पांडे ने महिला और बच्चे को सकुशल उसके पति को सौंप दिया।

ODISHA
News

HINDI

SANMARG
Bhubaneshwar

JUNE 2021

किसानों के उपज की खरीद की गारंटी सुनिश्चित की जाए - प्रियंका गांधि

॥ श्रीहरिः ॥

ओडिशा

सन्मार्ग

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै नमोऽस्तुरुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तुचन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः

ओडिशा, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड व अंडमान निकोबार से प्रकाशित

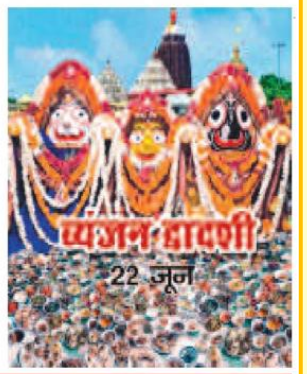

Year 12	Vol. 262	Bhubaneswar	Tuesday	22 June 2021	12 Page	Rs. 6.00	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वादशी 12, वि. सं. 2078	वर्ष 12	अंक 262	भुवनेश्वर	मंगलवार	22 जून, 2021	12 पेज	मूल्य 6.00 रुपये

छह साल से लापता बच्चा अपने परिवार से मिला

मुंबई स्थित श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन ने मिलाया

बड़बिल : यह एक फिल्मी कहानी से कम नहीं ! छह साल पहले एक बेटा मानसिक रोग के कारण घर से निकल कर कहीं चल गया। परिवार के सदस्यों ने कई दिनों तक ढूंढने पर भी पता न चलने पर मां ने अपनी मासूम बेटे की मिलने की आश ही छोड़ दी थी। पर छह साल बाद फेसबुक पर बेटे की वीडियो वायरल होने के बाद मां ने अपने बेटे को पहचान लिया और मां को अपना बेटा मिल गया। सूचनानुसार बडबिल वार्ड नंबर 10 अन्तर्गत गाड़ा हाटिंग निवासी स्वर्गीय डाडु तामुडीआ का बेटा राजा (16) आज से लगभग छह साल पहले मानसिक रोग के कारण घर से निकल कर कहीं चले गया था। राजा के घर में मां सोनी तामुडीआ, तीन भाई और एक बहन रहते हैं। राजा लापता होने से परिवार के सदस्यों ने काफी ढूंढने पर भी राजाका कोई पता चल ना सका जिसके कारण बेटे की मिलने की उम्मीद मां ने खो चुकी थी। इसी

क्योंझर के संजीव कुमार साहु व सुनील दास ने निभाया अहम दायित्व

दौरान लापता राजा गुजरात के भुज ने अति दयनीय हालत में घूमता देख एक संस्था ने उसे उद्धार कर मुंबई स्थित श्रृद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन संस्था को भेज दिया था। उक्त संस्था ऐसे ही उद्धार हुए मानसिक तौर पर कमजोर मरीजों की देखरेख करता है। जिसके संस्थापक डा. भरत वटवानी होने कि जानकारी मिली है। उक्त संस्था ने तीन चार साल तक राजा की अच्छी तरह चिकित्सा तथा देखरेख करने के कारण राजा का मानसिक अवस्था ठीक होने लगा। उसके बाद संस्था के ओडिशा प्रभारी सुनील दास ने क्योंझर के जाने-माने समाजसेवी संजीव कुमार साहू को राजा का एक वीडियो भेजा। वीडियो मिलते ही श्री साहू ने उसे फेसबुक पर अपलोड करने के बाद बड़बिल के कुछ लोगों ने राजा के परिवार को वीडियो दिखाने बाद मां सोनी तामुडीआ ने अपने बेटे को पहचान लिया। मां बेटे के संपर्क होने के बाद पिछले शनिवार श्रद्धा ट्रस्ट के प्रतिनिधि मंडल ओड़ीसा के और तीन गुमशुदा लड़कों के सोमवार भुवनेश्वर पहुंची। सारी कागजी कार्रवाई के बाद राजा को सकुशल उसके परिवार को सौंपा गया। छह साल से बिछड़े अपने परिवार को देख राजा भावुक होता दिखाई पड़ रहा था। उक्त संस्था ने राजा के लिए निशुल्क साल के लिए दवा देने का भी व्यवस्था किया है। अपने बेटे को पाकर राजा के परिवार उक्त संस्था, समाज सेवी संजीव कुमार साहू और संस्था के ओडिशा प्रभारी सुनील दास को धन्यवाद देते नहीं थक रहे थे। सोमवार शाम राजा और उसके परिवार बड़बिल स्थित अपने घर पहुंचने की सूचना मिली है।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

GUNA BHASKAR
Bhopal

JUNE 2021

गुना भास्कर

भोपाल, मंगलवार 29 जून, 2021 आषाढ़ कृष्ण पक्ष- 6, 2078

बच्चे खुश • मुंबई की श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन ने इलाज से ठीक किया और फिर परिजनों से मिलवाया

30 साल से लापता घर लौटा... मानसिक स्थिति बिगड़ने से 25 साल दिल्ली की सड़कों पर बिताए, 5 साल पहले आश्रम ने सहारा देकर इलाज किया, याददाश्त लौटी तो घर आया

भास्कर संवाददाता | बमोरी

30 साल पहले लापता हुआ एक व्यक्ति वापस अपने घर लौट आया है। परिजन उसे तलाशते-तलाशते थक चुके थे। कई देवी-देवता के यहां भी मन्नत मांगी लेकिन अब जाकर उनकी तलाश पूरी हुई। बमोरी से लापता हुआ गंगाराम प्रजापति सोमवार को घर वापस आ गया। इसमें एक सामाजिक संगठन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सड़कों पर घूमने वाले मानसिक बीमारों के लिए मुंबई में यह संस्था काम कर रही है। जैसे ही यह व्यक्ति उनके आश्रम में पहुंचा तो इलाज शुरू किया, इससे संबंधित व्यक्ति की धीरे-धीरे याददाश्त वापस आ गई, उसने बमोरी का नाम जैसे ही लिया तो संगठन के सदस्यों ने गूगल पर इस गांव को तलाशा तो गुना की लोकेशन मिली। इसी आधार पर उसे लेकर संगठन के पदाधिकारी बमोरी पहुंचे।

दिल्ली से मुंबई भेजा वहां हुआ इलाज : गंगाराम दिल्ली के अपना घर आश्रम में 5 साल से रह रहा था। इससे पहले वह सड़कों पर ही सोता था। मार्च में इसे आश्रम से श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन के आश्रम मुंबई भेजा। यह संगठन सड़कों पर घूमने वाले मानसिक अस्वस्थ लोगों को अपने पास रखती है, ठीक होने पर उनके परिजनों से मिलती है। राजस्थान के एंटी करप्शन ब्यूरो से शमशाद खान रंगीला, सुरेश मिस्त्री, श्रद्धा फाउंडेशन से राकेश आदि बमोरी पहुंचे। इस व्यक्ति को परिजनों को सौंप दिया है। संस्था के सामाजिक कार्यकर्ता राकेश ने बताया कि गंगाराम का 2 साल का इलाज निशुल्क किया जाएगा।

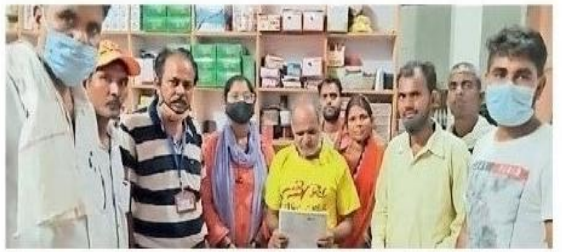

गंगाराम प्रजापति को अपने परिवार से मिलवाते संस्था के सदस्य।

मानसिक स्थिति सही नहीं थी

गंगाराम प्रजापति 30 साल पहले मानसिक संतुलन खो बैठा था, इससे वह गांव छोड़कर चला गया। पत्नी ने उसे तलाशा, नहीं मिला। उस समय उसके बड़े बेटे की उम्र 5 साल, बेटी की 4 और छोटे बेटे की उम्र 3 साल थी। इन बच्चों ने तो अपने पिता को ठीक से देखा भी नहीं था। जब बड़े हुए तो मां के साथ यह भी तलाशने लगे। कोई जानकारी नहीं मिली। इसलिए भगवान पर भरोसा कर बैठ गए थे। अब वे बहुत खुश हैं।

HIMACHAL PRADESH
News

HINDI

DAINIK JAGRAN
Dharamshala

AUGUST 2021

धर्मशाला, रविवार
22 अगस्त, 2021
हिमाचल
मूल्य ₹ 5.00
पृष्ठ 14+4=18

दैनिक जागरण

www.jagran.com
हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर और पं. बंगाल से प्रकाशित

18 साल बाद घर लौटा, खुशी से नम हुई स्वजन की आंखें

लाहड़ गांव का है मामला, अब 48 साल का हो गया है जगदीश

संवाद सहयोगी, जवसिंहपुर : उपमंडल की हारसी पंचायत के तहत लाहड़ गांव का जगदीश 18 वर्ष बाद वीरवार को जब घर पहुंचा तो स्वजन की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि 18 वर्ष पहले घर से बिना बताए गया जगदीश एकाएक उनकी आंखों के सामने खड़ा हो जाएगा। जगदीश अब 48 वर्ष का हो चुका है।

18 साल बाद घर लौटा जगदीश स्वजन के साथ ● जागरण

जगदीश के पिता जंबाराम सेना में थे और उनकी बहुत समय पहले निधन हो गया है। पिता के गुजरने पर मां ने ही सभी बच्चों का पालन पोषण किया। जगदीश की माता डिट्टो देवी भी बेटे के लौटने की आशा में ही लगभग तीन माह चल बसी। चाची सावित्री देवी ने बताया कि जगदीश की मां हमेशा बेटे को याद करती थी। जगदीश की दो बहनें व एक बड़ा भाई है। भाई विक्रम ने बताया कि उन्होंने जगदीश की हर जगह तलाश की, लेकिन वह नहीं मिला। उन्हें विश्वास था कि एक न एक दिन उनका भाई जरूर आएगा। जगदीश को घर महाराष्ट्र की श्रद्धा संस्था ने पहुंचाया। संस्था की बरेली शाखा के मनोविज्ञानी शैलेश शर्मा ने बताया कि जगदीश जुलाई 2019 में जोधपुर की सड़क पर उन्हें भटकता हुआ मिला। सड़क से रेस्क्यू कर जगदीश को जोधपुर में भर्ती कराया था। मानसिक स्थिति ठीक न होने के कारण जगदीश को श्रद्धा पुनर्वास केंद्र, मुंबई (महाराष्ट्र) में स्थानांतरित किया गया गया जहां श्रद्धा संस्था के फाउंडर ट्रस्टी और मनोचिकित्सक डा. भरत वाटवानी की देखरेख में उनका इलाज चला। जब जगदीश ठीक हुआ तो उसने अपना नाम व पता बताया। इसके बाद संस्था ने जगदीश को घर पहुंचाने का निर्णय किया। संस्था से जुड़े बरेली के मनोवैज्ञानिक शैलेश कुमार शर्मा ने बताया कि जब वह जगदीश को घर लेकर पहुंचे तो गांव वालों का हुजूम उमड़ पड़ा। जगदीश अठारह वर्ष पूर्व अपने घर से निकला था। इसके बाद वह अब लौटा है।

कांगड़ा जिले की खबरें
www.jagran.com पर पढ़ें

MOTHER & CHILD
REUNITED IN
RANCHI
JHARKHAND
23rd DECEMBER 2021

JHARKHAND
News

HINDI

AAJ & AZAD SIPAHI
Ranchi

DECEMBER 2021

www.epaper.azadsipahi.com

23 दिसंबर, 2021

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची

रांची जिला के चामा पंचायत का मामला

संस्था के प्रयास से दो साल से लापता युवती पहुंची अपने घर

श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन संस्था के प्रयास से रोशनी पहुंची घर

मनोज ठाकुर

चामा। रांची जिला के चामा पँचायत के रहने वाली रोशनी देवी उर्फ बुधनी देवी बीते दो साल से गुम हो चुकी थी वह घर वापस सही सलामत आ गयी।लड़की की माँ पार्वती देवी ने बताया की मैं और मेरे साथ बेटी रोशनी कुमारी के साथ ईंटा भट्ठा गयी थी तब वहा पर काम करने वाला लड़का कार्तिक लोहरा से शादी तय हुआ।तब दोनो का ईट भट्ठा पर ही शादी किया गया।वहाँ से ही विदाई किया गया।लड़का का घर भुरकुंडा बताया जा रहा है।फिर वहाँ से कार्तिक लोहरा और रोशनी देवी दूसरे भट्ठा जाने लगा तभी ट्रैन में बैठ के दोनो पति पत्नी जा रहे थे।तभी कुछ दूर पर अपने पत्नी और बच्चे को छोड़ कर फरार हो गया। तभी शोभनी देवी बच्चा अकेले हो गया और भटक कर मुम्बई चली गई।वह रास्ते पर अपने बच्चे को लेकर जा ही रही थी कि वहाँ के पुलिस पर नजर गयी और पूछ ताछ पर पर सही सलामत बता नही पाई तो उसे मुंबई चाइल्ड वेलफेयर के द्वारा 29 सितम्बर को मुंबई की संस्था श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन को बच्चा सहित सौंप दिया गया और वहाँ पर उसका ईलाज करना चालू किया गया, जब वह ठीक होने लगी तब उसके बताने पर वे लोग पता अनुसार और थाना के मदद से खोजने लगे और खोजते हुए बिहार पहुँच गए। सोशल वर्कर लक्ष्मीप्रिया बिसोई और अदिति सैजुल ने कहा कि बहुत मुश्किल से पता बताई और केवल खलारी कहती थी उसके बाद पुलिस से संपर्क कर पता चला कि यह चामा की रहने वाली है।उसके बाद उसको ट्रैन से सही सलामत उसके निवास स्थान घर पर इसके माँ पार्वती देवी को बच्चा और शोभनी देवी को सौंपा गया।तभी अपने बच्चों बेटी को देख खुशी से रोने लगी और घर तक पहुँचाने वाले को धन्यवाद दिया और गाँव के लोगो ने भी लक्ष्मीप्रिया बिसोई और आदिसि सैजुल को धन्यवाद दिया।

आज

एक जनवरी से ऑनलाइन खाना मंगाना हो जायेगा महंगा

बर्फबारी ने एलओसी पर मचायी भारी तबाही, कई स्थानों पर टूटी तारबंदी

www.ajhindidaily.com

रांची, शुक्रवार २४ दिसम्बर २०२१

संस्था के प्रयास से दो साल से लापता युवती पहुंची अपने घर

श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन ने रोशनी को पहुंचाया घर

खलारी। राँची जिला के चामा पँचायत की रहने वाली रोशनी देवी उर्फ बुधनी देवी बीते दो साल से लापता थी। जो अब घर वापस सही सलामत आ गयी। लड़की की माँ पार्वती देवी ने बताया की मैं और मेरे साथ बेटी रोशनी कुमारी के साथ ईंटा भट्ठा गयी थी तब वहा पर काम करने वाला लड़का कार्तिक लोहरा से शादी तय हुआ। जिसके बाद दोनो का ईट भट्ठा पर ही शादी किया गया। वहाँ से ही बेटी की विदाई किया गया। उन्होने बताया कि लड़का का घर भुरकुंडा बताया जा रहा है। फिर वहाँ से कार्तिक लोहरा और रोशनी देवी दूसरे भट्ठा जाने लगा तभी ट्रैन में बैठ के दोनो पति पत्नी बाहर काम के लिए निकले थे। इस बीच कुछ दूर जाने पर कार्तिक लोहरा अपनी पत्नी और बच्चे को छोड़ कर फरार हो गया। जिसके बाद रोशनी देवी और उसका बच्चा अकेले हो गए जो भटक कर मुम्बई चली गई। जहां वह रास्ते पर अपने बच्चे को लेकर जा ही रही थी कि वहाँ की पुलिस की नज़र पड़ने पर उससे पूछ ताछ की गयी। जिस पर वह अपना सही पता नही पाई तो उसे मुंबई चाइल्ड वेलफेयर के द्वारा 29 सितम्बर को मुंबई की संस्था श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन को बच्चा सहित सौंप दिया गया। जहाँ पर उसका ईलाज भी शुरू किया गया, जब वह ठीक होने लगी तब उसके बताने पर वे लोग पता अनुसार और थाना के मदद से खोजने लगे और खोजते हुए बिहार पहुँच गए। सोशल वर्कर लक्ष्मीप्रिया बिसोई और अदिति सैजुल ने कहा कि बहुत मुश्किल से पता बताई और केवल खलारी कहती थी। उसके बाद खलारी पुलिस से संपर्क कर पता चला कि यह चामा की रहने वाली है। संस्था के द्वारा उसको ट्रैन से सही सलामत उसके घर पर उसकी माँ पार्वती देवी को बच्चा और रोशनी देवी को सौंपा गया। परिजन अपनी बेटी और छोटे बच्चे को देखकर काफी खुश हुए और घर तक पहुँचाने वाले को संस्था के लोगों को धन्यवाद दिया। वहीं गाँव के लोगो ने भी श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन से आयी लक्ष्मीप्रिया बिसोई और आदिसि सैजुल को धन्यवाद दिया।

BIHAR
News

HINDI

KHIZERSARAI
Gaya

DECEMBER 2021

KTN
Khizersarai Town News
हर पल आपके साथ...

Home Special Report KTN : गौरव की मेहनत ने 5 वर्ष पूर्व भटकी लड़की को स्वजनों से मिलाया

KTN: गौरव की मेहनत ने 5 वर्ष पूर्व भटकी लड़की को स्वजनों से मिलाया

Khizersarai Town News 1/12/2021 12:06:00 PM

मानसिक बीमार लड़की को भाई (बीच में) को सौंपते संस्था के सदस्य

खिजरसराय। मुंबई के रायगढ़ में श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन जो एक युवा समाजसेवी वर्ग ने मंद बुद्धि, मानसिक बीमार जैसे सड़को पर घूमने वाले लोगों को उनके परिजनों से मिलवाने का मिशन बनाया है। अब तक कई ऐसे लोगों को सोशल मीडिया के माध्यम से उनके परिजनों को खोज कर उनके घर भिजवा चुके हैं।

रविवार को फिर इस समाजसेवी वर्ग ने गया जिले के खिजरसराय थाना क्षेत्र अंतर्गत जमुआवां गांव के रहने वाले मानसिक बीमार सोनी, जो 5 साल पहले अपने घर से निकले और रास्ता भटक कर परिजनों से बिछड़ गए थे और मुंबई के रायगढ़ की सड़क पर घूमते देख सोशल मीडिया के माध्यम से इनके परिजनों को खोज निकाला। वजह से 5 सालों से अपने परिवार से दूर रहने वाला मानसिक बीमार व्यक्ति की भाई अपने बहन को पाकर और बेटी अपने पिता को पाकर खुश हैं। सोनी, 5 साल पहले अपने घर से निकले और रास्ता भटक कर परिजनों से बिछड़ गए थे।

इसके बाद से ही सोनी विक्षिप्त की तरह शहर - शहर घूमते मुम्बई के रायगढ़ में पहुंच गई। जहां यह सड़को पर घूम कर अपनी जिंदगी गुजार रही थी। तभी एक दिन श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के सदस्य डॉ नीलेश म्हात्रे की नजर इन पर पड़ गई जो विगत कई सालों से सड़कों पर लावारिस घूम रहे लोगों को खोज कर उन्हें उनके परिजनों के पास पहुचाने के काम को अपना मिशन बना लिया है।

डॉ म्हात्रे ने सोनी पर निगरानी करते हुए सोशल मीडिया के माध्यम से इसका फ़ोटो पोस्ट कर खोजना शुरू किया। अंततः डॉ म्हात्रे की मेहनत रंग लाई। डॉ म्हात्रे ने सोशल मीडिया के माध्यम से खिजरसराय के स्थानीय सोशल मीडिया न्यूज प्लेटफार्म "खिजरसराय टाउन न्यूज" के संस्थापक गौरव कुमार सिंह से दूरभाष पर संपर्क किया और सोनी के बारे में बताई। जिसके बाद गौरव कुमार सिंह ने अपने मित्र रजनीश सिंह दांगी के सहयोग से लड़की के परिवार से पता कर डॉ म्हात्रे को जानकारी दी। लड़की के परिवार वालों ने मुंबई से लाने में असमर्थता जताई। जिसके बाद गौरव कुमार सिंह के कहने पर श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन की एम्बुलेंस मुंबई से बिहार पहुंची। सोनी के घर वालों ने डॉ म्हात्रे से संपर्क किया। बिहार राज्य के गया जिला के खिजरसराय के रहने वाले सोनी के भाई वसंत ने पटना पहुंच कर बहन मिल जाने के बाद खुश होकर सोनी को अपने साथ घर लेकर चले गए।

अब तक हज़ारों लोगों को परिवार से मिलवा चुकी है संस्था

युवा समाजसेवी डॉ म्हात्रे का कहना है कि इस संस्था के संस्थापक डॉ भरत वट्टाणी है, उन्हें मैग्रेसे अवार्ड मिला है। सन 1988 ई० में संस्था की शुरुआत की थी। अब तक हम 7367 ऐसे लोगों को खोज कर उनके परिवार को सौप चुके है। डॉ म्हात्रे का यह भी कहना है कि हम यह काम इसलिए करते हैं कि हमलोगों के पास छत है तो गर्मी, सर्दी और बरसात से हम लोगों को एक छत मिल जाता है और ये लोग खुले आसमान के नीचे अपना जीवन बिताते है तो मेरे एक छोटे प्रयास से इनको भी अपना आशियाना मिल जाय अपना घर मिल जाये तो ये अपने परिवार के साथ रहेंगे।

UTTAR PRADESH
News

HINDI

DHARA NEWS
Meerut

DECEMBER 2021

दैनिक

धारा न्यूज़

मेरठ
दिसम्बर, 2021
342
3 रुपया

दैनिक ● उत्तर प्रदेश, दिल्ली-एनसीआर, उत्तराखण्ड, हरियाणा में एक साथ प्रसारित ● आर.एन.आई.: UPHIN/2010/37685 ● डाक पंजीकरण संख्या: 186-2016-2018 (dharanews@gmail.com) www.d

चार वर्ष पूर्व बिछड़ी महिला को संस्था ने परिजनों से मिलवाया

धारा न्यूज संवाददाता

खरखौदा। धीरखेडा क्षेत्र के नया गांव से मंदबुद्धि महिला चार वर्ष पूर्व घर से निकलने के बाद बैंगलोर फहुंच गई जहां से उसे श्रद्धा फाउंडेशन के लोगों ने अपने पास रख लिया महिला का उपचार कराया और चार वर्ष बाद जानकारी हासिल कर खरखौदा लाकर उसके परिजनों से मिलवाया परिजनों से मिल महिला खुश दिखाई दी ।धीरखेडा के नयागांव निवासी अधेड़ महिला दिमागी रूप से कमजोर है जो कि चार वर्ष पूर्व घर संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई थी।परिजनों ने काफी तलाश किया था परन्तु कोई सुराग नहीं लगा। महिला किसी तरह बैंगलोर पहुंच गई। जहां सड़क किनारे घुमते हुए श्रद्धा रीहॅबिलेटेशन फाउंडेशन के सदस्य आर वी एम को मिले जो उसे अपनी संस्था ले गए और मानसिक रोग चिकित्सक को दिखा उसका उपचार कराया दिमागी हालत में सुधार होने पर महिला ने अपने परिजनों का पता बताया जिस पर संस्था की काउंसलर अंजनी चोरसिया पत्नी अजय चोरसिया को महिला के परिजनों को सौंपने का जिम्मा दिया गया जिस पर वह रविवार एसडीएम सदर के पास पहुची और बताए गए स्थान कीजानकारी हासिल की जानकारी हासिल कर सोमवार को थाना खरखौदा पहुंची और पुलिस से मदद मांगी थाना प्रभारी संजय शर्मा ने पुलिस को नयागांव भेजकर परिजनों की खोजबीन कर उनको थाने बुलाया जिस पर परिजन थाने पहुंच गए और महिला को पहचान उनकी खुशी का ठिकाना न रहा वहीं महिला भी परिजनों से मिलकर बेहद खुश दिखाई दी वहीं संस्था की काउंसलर अंजनी चोरसिया ने परिजनों को महिला की एक माह की दवाई देकर दवाई खत्म होने पर दिए गए नंबर पर फोन कर बताने पर फिरी दवाई आने की बात कही वहीं महिला के परिजनों ने अंजनी चोरसिया का धन्यवाद किया। उसके बाद वह अपने अपने गंतव्य को लौट गए।

UTTARAKHAND
News

HINDI

AMAR UJALA
Nainital

JANUARY 2022

6 राज्य • 2 केंद्रशासित प्रदेश • 21 संस्करण

••• वर्ष 18 । अंक 199 । पृष्ठ : 16+16 । मूल्य : छह रुपये

अमर उजाला

मकर संक्रांति की शुभकामनाएं

नैनीताल • शुक्रवार, 14 जनवरी 2022

पौष शुक्ल-द्वादशी • विक्रम संवत-2078

आंखों ने नीर बहाए, 30 साल बाद दिनेश घर आए

15 वर्ष की उम्र में वर्ष 1992 में घर से चले गए थे दिनेश गिरि, श्रद्धा फाउंडेशन ने सुरकाली गांव के दिनेश को परिजनों से मिलाया

संवाद न्यूज एजेंसी

बागेश्वर। परिवार से बिछड़ने का गम और फिर पुनर्मिलन की खुशी क्या होती है यह दिनेश और उनके परिवार से बेहतर कौन जान सकता है। सुरकाली गांव निवासी दिनेश गिरि 15 साल की उम्र में घर से चले गए थे। तबसे उनका कोई सुराग नहीं था। श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन मुंबई की मदद से उनकी 11 जनवरी को घर वापसी हुई तो परिजनों की आंखें नम हो गईं। 30 साल बाद घर लौटे दिनेश परिजनों को देखकर भावुक नजर आए।

दिनेश जून 2021 में मनोरोगियों के लिए काम करने वाली एक संस्था को महाराष्ट्र के अहमदनगर में मिले थे। मानसिक रूप से अस्वस्थ दिनेश जब ठीक हुए तो मंगलवार को श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन से जुड़े बरेली के मनोवैज्ञानिक शैलेश कुमार शर्मा और अर्पिता सक्सेना उन्हें लेकर सुरकाली पहुंचे तो किसी को पहले तो यकीन ही नहीं हुआ। 15 सालका किशोर अब 45 वर्ष का अधेड़ नजर आ रहा है। हालांकि मां-बाप की आंखें तो अपने बच्चों को हर उम्र में पहचान लेती है। यही हुआ दिनेश के पिता गोविंद गिरी, मां जानकी देवी का खुशी का ठिकाना नहीं रहा। भाई भूपेंद्र भी अपने बिछड़े हुए भाई को सामने देखकर खुशी से फूला नहीं समाया। मां जानकी देवी दिनेश से लिपटकर रोने लगीं। दिनेश की आंखों में भी आंसू छलक आए। दिनेश को देखने के लिए गांव के लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। परिजनों ने सभी का आभार जताया है।

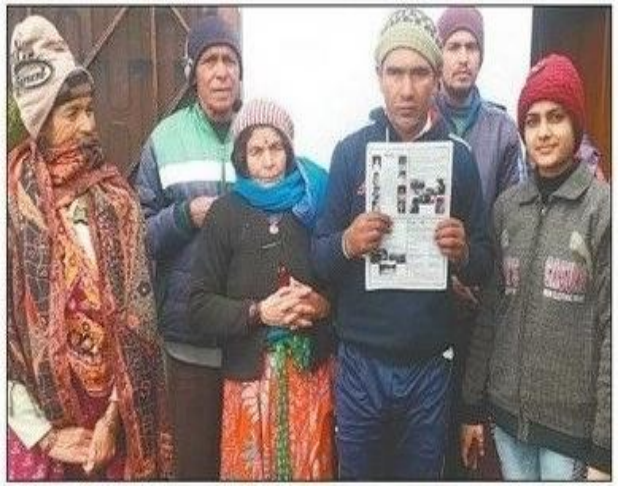

सुरकाली गांव में परिजनों और संस्था के लोगों के साथ दिनेश। विज्ञप्ति

ऐसे हुई घर वापसी की राह आसान

बागेश्वर। मनोवैज्ञानिक शैलेश कुमार शर्मा ने बताया कि स्नेह मनोयात्री पुनर्वसन केंद्र अहमदनगर की टीम ने 19 जून 2021 को दिनेश को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के राहता में पकड़ा था। वे सड़क पर बदहवास हालत में मिले थे। मानसिक रूप से बीमार थे। मनोचिकित्सक डॉ. नीरज करंदीकर की देखरेख में दिनेश का इलाज हुआ। उसके बाद दिनेश को अपना घर आश्रम दिल्ली शिफ्ट किया गया। वहां श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के ट्रस्टी और रैमन मैग्सेसे अवार्डी डॉ. भरत वाटवानी की देखरेख में दिनेश का इलाज हुआ। सोशल वर्कर नितिन, मुकुल ने दिनेश की काउंसलिंग की। स्वस्थ होने पर दिनेश ने अपना नाम-पता बताया। शैलेश ने बताया कि उनकी संस्था ने दिनेश का निशुल्क इलाज कराया। संवाद

लावारिसों के लिए काम करती है संस्था

बागेश्वर। शैलेश शर्मा ने बताया कि श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन मुंबई की सड़कों पर भटकने वाले लावारिस व्यक्तियों के लिए काम करती है। कहते हैं कि सड़कों पर भटकने वाले मानसिक बीमार लोगों के मदद के लिए समाज को आगे बढ़कर मदद करनी चाहिए, ताकि समाज से तिरस्कृत इन लोगों को उनके अधिकार और समाज में सम्मान मिल सके।

BIHAR
News

HINDI

DAINIK BHASKAR
Katihar

MAY 2022

कटिहार भास्कर

27.05.2022

भटकती महिला और बच्चे को स्वयं सेवी संस्था ने महाराष्ट्र से घर पहुंचाया

वटना की महिला देवरानी देवी चार साल पूर्व हो गई थी लापता

भास्कर न्यूज | बलरामपुर

प्रखंड के कचना ओपी क्षेत्र के वटना गांव की महिला देवरानी देवी पति केवल राय, अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ चार वर्ष पूर्व अपने घर से लापता हो थी। गुरुवार को महाराष्ट्र राज्य के पुणे में कार्यरत श्रद्धा फाउंडेशन नामक स्वयंसेवी संस्था के एक प्रतिनिधि समर वष्ट ने कचना ओपी से संपर्क कर महिला को पुलिस के हवाले किया।

इस संबंध में जानकारी देते हुए ओपी अध्यक्ष मुकेश कुमार ने बताया कि उक्त महिला तमिलनाडु राज्य में कहीं भटक रही थी। उनकी दयनीय स्थिति को देख कर उन्हें पुणे लाया गया है और वहीं रखकर उसका इलाज कराया गया तथा बच्चों को भी महिला के पास ही रखा गया। जब महिला ठीक हो गई तो उन्होंने घर का पता बताया उसी पते के आधार पर उसे ओपी क्षेत्र के अध्यक्ष के सुपुर्द किया गया।

पुलिस को सुपर्द करते हुए संस्था के सदस्य।

Emotional Reunion
On Mothers Day -
8th of May 2022

UTTARAKHAND
News

HINDI

HINDUSTAN
Almora

MAY 2022

हिन्दुस्तान
भरोसा नए हिन्दुस्तान का
सोमवार
09 मई 2022

मदर्स-डे के दिन घर लौटे बेटे को देख छलक आई मां की आंखें

संस्था का प्रयास

रानीखेत/अल्मोड़ा, हिटी। रानीखेत तहसील के ग्राम पंचायत बोहरागांव निवासी एक युवक पांच साल बाद घर लौट आया। उसे खोजने और फिर घर पहुंचाने में श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन संस्था का बड़ा योगदान रहा। मदर्स- डे पर बेटे को देख मां भी भाव विभोर हो गई। पांच साल बाद बेटे के घर वापस आते ही मां और परिजन गले लगाकर फफक-फफक कर रो पड़े।

दरअसल, रानीखेत तहसील के बोहरागांव निवासी जीवन पुत्र शिव सिंह मानसिक हालत ठीक नहीं होने के चलते पांच साल पहले घर से लापता हो गया। इसके बाद परिजनों ने उसकी काफी खोज की, लेकिन जीवन का कहीं पता नहीं लगा। इधर, श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के

05 साल पहले लापता हो गया था जीवन

- **बेटे के लौटने पर खुशी से झलके मां के आंसू**

सदस्यों को जीवन को दिल्ली की सड़कों पर बदहवास हालत में घूमते देखा और उसका रेस्क्यू कर अपने संस्थान में दाखिल किया। इसके बाद मनोचिकित्सक और रैमन मैग्सेसे अवार्डी डॉ. भरत वातवानी की देखरेख में जीवन का इलाज हुआ। मनोवैज्ञानिक शैलेश शर्मा ने जीवन कि कॉउंसलिंग की। इसमें जीवन ने परिवार की जानकारी देते हुए घर जाने की इच्छा जताई। इसके बाद बरेली निवासी शैलेश शर्मा जीवन को लेकर उनके घर पहुंचे। शैलेश शर्मा ने बताया कि संस्था सड़कों पर भटकने वाले मनोरोगियों के उपचार और पुनर्वास सेवाएं प्रदान करती है।

रानीखेत में पांच साल बाद अपने परिवार से मिला बोहरागांव का जीवन। • हिन्दुस्तान

Emotional Reunion
On Mothers Day -
8th of May 2022

UTTARAKHAND
News

HINDI

AMAR UJALA
Nainital

MAY 2022

अमर उजाला

6 राज्य
2 केंद्रशासित प्रदेश
21 संस्करण

नैनीताल
सोमवार, 9 मई 2022
वैशाख शुक्ल-अष्टमी
विक्रम संवत-2079

वर्ष 18 । अंक 312 । पृष्ठ : 12+4 । मूल्य : सात रुपये

amarujala.com

वित्तमंत्री बोलीं

आरबीआई ने अचानक ब्याज दर बढ़ाकर मुझे भी हैरान किया...9

उत्तराखंड

पांच साल बाद मां को मिला नया 'जीवन'

मदर्स डे का तोहफा: 2017 को घर से अचानक गायब हो गया था बेटा, श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन ने खोज निकाला

संवाद न्यूज एजेंसी

रानीखेत (अल्मोड़ा)। पांच साल से लापता बेटे की राह देख रही मां के चेहरे की खुशियां उस समय देखने लायक थी जब बेटा घर लौट आया। अवसर मदर्स डे का हो तो यह किसी तोहफे से कम नहीं। बुजुर्ग मां अपने लाड़ले को निहारते फूले नहीं समाईं। मां की आंखें छलक आईं। उन्होंने कहा कि उनका बेटा जीवन ही नहीं लौटा बल्कि उन्हें नया जीवन मिल गया है।

ताड़ीखेत ब्लॉक के भुजान बोहरागांव निवासी शिव सिंह का बड़ा बेटा जीवन (30) पांच साल पहले लापता हो गया था। परिजनों ने कई जगह खोजबीन की। शहर के शहर छान मारे लेकिन कहीं पता नहीं चल सका। शिव सिंह बताते हैं कि जीवन की मानसिक हालत ठीक नहीं थी। उन्होंने काफी इलाज कराया मगर सुधार नहीं हो पाया। पांच साल पहले वह घर से लापता हो गया। इधर, सड़कों पर भटकने वाले मानसिक रोगियों के लिए काम करने वाली श्रद्धा फाउंडेशन संस्था के सदस्यों को पिछले दिनों जीवन दिल्ली में सड़क पर बदहवास हालत में मिला।

उन्होंने उसे अपना घर नामक आश्रम संस्था में दाखिल कराया। संस्था के मनोचिकित्सक मैग्सेसे अवार्ड विजेता डॉ. भरत वातवानी की देखरेख में जीवन का इलाज हुआ। मनोवैज्ञानिक शैलेश शर्मा ने काउंसलिंग की तो जीवन ने अपने परिवार की जानकारी देकर घर जाने की इच्छा जताई। बरेली निवासी शैलेश शर्मा जीवन को लेकर रविवार को घर पहुंचे। जीवन की एक बहन आशा और दो भाई आनंद व राजू हैं।

जीवन के घर लौटने के बाद खुश परिजन। संवाद

जीवन की हर संभव मदद करेंगे

मनोवैज्ञानिक शैलेश शर्मा ने कहा कि उनकी संस्था की तरफ से जीवन के बेहतर मानसिक उपचार के लिए दो महीने की निःशुल्क दवाई दी गई है। आगे भी आवश्यक मदद की जाएगी।

NATIONAL
News

HINDI

RASHTRIYA SAHARA
Varanasi

SEPTEMBER 2022

राष्ट्रीय सहारा
राष्ट्रीयता ■ कर्त्तव्य ■ समर्पण

■ वाराणसी ■ नई दिल्ली ■ लखनऊ ■ गोरखपुर
■ पटना ■ कानपुर ■ देहरादून से प्रकाशित

वाराणसी
मंगलवार ● 6 सितम्बर ● 2022
16 पृष्ठ, मूल्य ₹ 5.00

पांच साल बाद बिछड़े परिवार से मिली महिला

दानगंज/वाराणसी (एसएनबी)। चोलापुर थाना क्षेत्र के विक्रमपुर(बसांव) ग्राम निवासिनी मानिसक रूप से परेशान मालती देवी लगभग पांच वर्ष पूर्व घर से अचानक लापता हो गयी। परिजनों ने महीनों तक खोज की लेकिन कुछ अता पता नहीं चला और परिजन थक गये। उक्त महिला को मुंबई के करजट में संचालित संस्था न सिर्फ 6 महीने तक मानिसक इलाज कराया, बल्कि चोलापुर पुलिस की मदद से सोमवार को लाकर परिजनों से भी मिलाया। पांच साल बाद परिवार के बिछड़े सदस्य को पाकर परिजनों के खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

सामाजिक कार्यकर्त्री पौली दास ने की मदद

परिजनों के साथ प्रसन्न मुद्रा में लापता मालती देवी साथ में पौली दास व पुलिस।

मुंबई में मानिसक रूप से परेशान लोगों का इलाज करने के बाद उनको परिजनों को मिलाने वाली सक्रिय संस्था श्रद्धा रिहैबिलेट्स फाउंडेशन की कार्यकत्री पौली दास ने घर से लापता मालती देवी का उक्त संस्था में सेवा देने वाले रेमन मैग्सेसे अवार्ड से सम्मानित चिकित्सक भारत भटवापी से लगातार छह महीने इलाज कराने के पश्चात मानिसक की स्थिति सुधरते ही नाम और पता जानने का प्रयास किया। इसके बाद पौली दास चोलापुर प्रभारी निरीक्षक दुर्गेश कुमार मिश्रा से संपर्क करते हुए महिला के घर का पता किया। सोमवार को पांच वर्ष पूर्व स्वजनों से बिछड़ी मालती देवी को लेकर जैसे ही पौली दास बसांव स्थित घर पहुंची परिवार की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मालती देवी के भाई कन्हैयालाल व भतीजे राहुल ने उक्त संस्था का धन्यवाद व्यक्त करते हुए बताया कि लगभग पांच वर्ष पूर्व अचानक लापता होने के बाद उन्होंने काफी खोजबीन की लेकिन कुछ पता नहीं चला था।

संस्था कार्यकत्री पौली दास ने बताया कि बीते 22 मार्च को गुजरात में उनके संस्था के कार्यकर्ताओं ने उक्त महिला को सड़क पर घूमते हुए पाया इसके बाद मुंबई लाकर उनका लगातार मानिसक उपचार किया गया। बताने के अनुसार लगभग 38 वर्षों से उक्त संस्था ऐसे लगभग 10,000 मानिसक रूप से परेशान महिलाओं पुरुषों को उनके परिवारों से मिलवा चुकी है।

NATIONAL
News

HINDI

PRAKHAR PUVANCHAL
Varanasi

SEPTEMBER 2022

हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 7, अंकः 77, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 7 सितम्बर, 2022 दिन बुधवार गाजीपुर/वाराणसी

पांच साल बाद बिछड़े परिवार से मिली महिला, सामाजिक कार्यकत्री पौली दास ने की मदद

प्रखर दानगंज वाराणसी। चोलापुर थाना क्षेत्र के विक्रमपुर(बसांव) ग्राम निवासिनी मानसिक रूप से परेशान मालती देवी लगभग पांच वर्ष पूर्व घर से अचानक लापता हो गयी। परिजनों ने महीनों तक खोज की लेकिन कुछ अता पता नहीं चला और परिजन थक गये। उक्त महिला को मुंबई के करजट में संचालित संस्था न सिर्फ 6 महीने तक मानसिक इलाज कराया बल्कि चोलापुर पुलिस की मदद से सोमवार को लाकर परिजनों से भी मिलाया। पांच साल बाद परिवार के बिछड़े सदस्य को पाकर परिजनों के खुशी का ठिकाना नहीं रहा। जानकारी के अनुसार मुंबई में मानसिक रूप से परेशान लोगों का इलाज करने के बाद उनको परिजनों को मिलाने वाली सक्रिय संस्था श्रद्धा रिहैबिलेट्स फाउंडेशन की कार्यकत्री पौली दास ने घर से लापता मालती देवी का उक्त संस्था में सेवा देने वाले रेमन मैग्सेसे अवार्ड से सम्मानित चिकित्सक भारत भटवापी से लगातार छह महीने इलाज कराने के पश्चात मानसिक की स्थिति सुधरते ही नाम और पता जानने का प्रयास किया। इसके बाद पौली दास चोलापुर प्रभारी निरीक्षक दुर्गेश कुमार मिश्रा से संपर्क करते हुए महिला के घर का पता किया। सोमवार को पांच वर्ष पूर्व स्वजनों से बिछड़ी मालती देवी को लेकर जैसे ही पौली दास बसांव स्थित घर पहुंची परिवार की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मालती देवी के भाई कन्हैयालाल व भतीजे राहुल ने उक्त संस्था का धन्यवाद व्यक्त करते हुए बताया कि लगभग पांच वर्ष पूर्व अचानक लापता होने के बाद उन्होंने काफी खोजबीन की लेकिन कुछ पता नहीं चला था। संस्था कार्यकत्री पौली दास ने बताया कि बीते 22 मार्च को गुजरात में उनके संस्था के कार्यकताओं ने उक्त महिला को सड़क पर घूमते हुए पाया इसके बाद मुंबई लाकर उनका लगातार मानसिक उपचार किया गया। बताने के अनुसार लगभग 38 वर्षों से उक्त संस्था ऐसे लगभग 10,000 मानसिक रूप से परेशान महिलाओं पुरुषों को उनके परिवारों से मिलवा चुकी है।

RAJASTHAN
News

HINDI

RAJASTHAN PATRIKA
Jhalawar

OCTOBER 2022

झालावाड़ पत्रिका

शुभ धनतेरस

राजस्थान पत्रिका . झालावाड़, शनिवार, 22 अक्टूबर 2022 patrika.com झालरापाटन . अकलेरा . भवानीमंडी . पिड़ावा . चौमहला

खुशी

12 साल बाद मिले अपनों से

रामचन्द्र घर पहुंचे तो परिजनों की आंखें नम

पत्रिका ग्राउंड रिपोर्ट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सुनेल. परिवार से बिछड़ने का गम और फिर से मिलन की खुशी क्या होती है यह रामचन्द्र और उनके परिवार से बेहतर कौन जान सकता है। सुनेल के कुम्हार निवासी रामचन्द्र प्रजापत 36 साल की उम्र में घर से चले गए थे। श्रद्धा फाउंडेशन मुंबई की मदद से उनकी शुक्रवार सुबह घर वापसी हुई। 12 साल बाद घर लौटे रामचन्द्र परिजनों को देखकर भावुक नजर आए। मानसिक रूप से अस्वस्थ रामचन्द्र को लगभग छह माह पूर्व गुजरात के बड़ोदरा मेन्टर हॉस्पिटल ने श्रद्धा फाण्डेशन कर्जत संस्था मे भेजा। वहां रामचन्द्र प्रजापत का उपचार शुरू हुआ। इसके बाद मनोचिकित्सक और रैमन मैग्सेसे अवॉर्डी डॉ.भरत वाटवानी की देखरेख में संस्था के सामाजिक कार्यकर्ता राकेश कुमावत ने रामचन्द्र की काउन्सलिंग की और उसके धीरे-धीरे अपना पता व घर वालों के बारे में बताया। राकेश कुमावत संस्था के सामाजिक कार्यकर्ता ने अपना घर आश्रम के मैनेजर भवानीमंडी के कृष्ण गोपाल से सम्पर्क किया। इसके बाद कृष्ण गोपाल पालीवाल और उनकी टीम के सदस्य सुनेल घर पहुंचे। वहां पत्नी संतोष बाई, बड़ा पुत्र राजूलाल, शोभाराम और पुत्री धापूबाई का खुशी का ठिकाना नहीं रहा। बड़ा भाई भैरूलाल प्रजापत, भतीजा लालचंद प्रजापत और राजेश प्रजापत ने अपने बिछड़े हुए भाई को सामने देखकर खुशी से फूला नहीं समाया। रामचन्द्र को देखने के लिए गांव के लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। परिजनों ने सभी का आभार जताया है। संस्था के सामाजिक कार्यकर्ता राकेश कुमावत ने बताया कि श्रद्धा रिहेबेलेटेशन फाण्डेशन कर्जत संस्था मुंबई संस्था की सड़कों पर भटकने वाले लावारिस व्यक्तियों के लिए काम करती है।

RAJASTHAN
News

HINDI

KOTA BUREAU NEWS
Kota

OCTOBER 2022

परिजनों सहित पूरे मोहल्ले वालों की आंखे नम हो गई रामचन्द्र को देखकर

12 साल बाद रामचन्द्र घर आए, 36 वर्ष की उम्र में वर्ष 2011 में घर से लापता हो गए

कोटा ब्यूरो न्यूज
(विशेष संवादादाता)

सुनेल,21अक्टूबर। परिवार से बिछडने़ का गम और फिर पुनमिलन की खुशी क्या होती है यह रामचन्द्र और उनके परिवार से बेहतर कौन जान सकात है। सुनेल के कुम्हार निवासी रामचन्द्र प्रजापत 36 साल की उम्र में घर से चले गए थे तबसे उनका कोई सुराग नही था।

श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन मुंबई की मदद से उनको शुक्रवार सुबह घर वापसी हुई तो परिजनों की आंखें नम हो गई। 12 साल बाद घर लौटे रामवन्द्र परिजनों को देखकर भावुक नजर आए। मानसिक रूप से अवस्थ्य रामचन्द्र लगभग छह माह पूर्व गुजरात के बड़ोदरा मेन्टर हॉस्पिटल ने श्रृद्धा रिहेबेलेटेशन फाण्डेशन कर्जत

संस्था में भेजा। वहां रामचन्द्र प्रजापत का उपचार शुरू हुआ। इसके बाद मनोचिकित्सक और रैमन मैग्सोसे अवार्डी डॉ.भरत वाटवानी की देखरेख में संस्था के सामाजिक कार्यकर्ता राकेश कुमावत ने रामचन्द्र का काउन्सलिंग किया और उसके धीरे-धीरे अपना पता व घर वालों के बारे में बताया।

राकेश कुमावत संस्था के सामाजिक कार्यकर्ता ने अपना घर आश्रम के मैनेजर भवानीमंडी के कृष्ण गोपाल से सम्पर्क किया। इसके बाद कृष्ण गोपाल पालीवाल और उनकी टीम के सदस्य सुनेल घर पंहुचे।

तो पत्नी संतोष बाई, बड़ा पुत्र राजूलाल, शोभाराम और पुत्री धापूबाई का खुशी का ठिकाना नहीं रहा। बड़ा भाई भेरूलाल प्रजापत, भतीजा लालचंद प्रजापत और राजेश प्रजापत ने अपने बिछड़े हुए भाई को सामने देखकर खुशी से फूला नहीं समाया। रामचन्द्र को देखने के लिए गांव के लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। परिजनों ने सभी का आभार जताया है।

लावारिसों के लिए काम करती है संस्था

संस्था के सामाजिक कार्यकर्ता राकेश कुमावत ने बताया कि श्रद्धा रिहेबेलेटेशन फाण्डेशन कर्जत संस्था मुंबई संस्था की सडक़ों पर भटकने वाले लावारिस व्यक्तियों के लिए काम करती है। कहते है कि सडक़ों पर भटकने वाले मानसिक बीमार लोगों के मदद के लिए समाज को आगे बढक़र मदद करनी चाहिए ताकि समाज से तिरस्कृत इन लोगोंा को उनके अधिकार और समाज में सम्मान मिल सके।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

INDORE SAMACHAR
Indore

OCTOBER 2022

samachar.indore@gmail.com, indoresmchr@rediffmail.com, info@indoresamachar.net, Web: www.indoresamachar.net

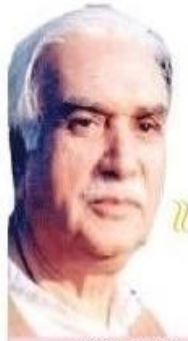

इन्दौर समाचार के
पितृपुरुष स्व. श्री सुरेश सेठजी

इन्दौर समाचार

RNI No. 1533/57, Dak Reg.: MP/IDC/91/2021-2023

वर्ष 81 अंक-214

इन्दौर, रविवार 23 अक्टूबर 2022

पृष्ठ- 12+8 मूल्य 5 रुपए

भटके लोगों कि शरण स्थली श्रद्धा रीहंबिलिटेशन फाऊंडेशन के राकेश कुमावत साथ लेकर आए

इंदौर में ढाई साल पहले बिछड़े गुलाम हुसैन उर्फ गुल्लु भाई मुंबई से भानपुरा लोटे

भानपुरा (लालचन्द्र रुद्रवाल)। परिवार वालों ने अब यह आशा छोड दी थी कि अब उनके पति,पिता,ससुर इस दुनिया में है। पर जब उनकी निराशा आशा में बदल गई। जब 17 मार्च 2020 को भानपुरा निवासी गुलाम हुसैन उर्फ गुल्लु भाई जो मानसिक रुप से कमजोर हे इन्दौर मे गुम हो गये। काफी तलाश करने के बाद उनका पता नहीं लगा तो परिवार जनों ने आजाद नगर इन्दौर थाने में गुमशुदगी कि रिपोर्ट दर्ज कराई। ओर परिवार जन भानपुरा लोट आए तब से लेकर आज तक जब भी कोई खबर मिलती तलाशने चले जाते पर हर बार निराशा हाथ लगी।

पर उनकी निराशा 21 अक्टुबर को आशा में बदल गई जब उन्हें यह पता चला कि गुलाम हुसैन मुबंई थाणे कि मानसिक लावारिस,भटके लोगों कि शरण स्थली श्रद्धा रीहंबिलिटेशन फाऊंडेशन में विगत 6 माह से है। इस संस्था को यह भटकते हुए लावारिस अवस्था में छ: माह पहले मुबंई कि सड़कों पर मिले संस्था इन्हें अपने यहां ले गई छ: माह तक इनका मानसिक उपचार किया। अच्छे से रख रखाव किया उपचार के असर से गुलाम हुसैन जो इतने दिन से अपना पता नहीं बता सका था। संस्था के चिकित्सकों व सदस्यों के पुछने पर यह बताया कि में मोमिनपुरा रतलाम रहता हुं जहा यह तीस साल पहले रहते थे। गुलाम हुसैन को लेकर संस्था के राकेश कुमावत व सहायक शुभम रतलाम लेकर आए वहां बताए पते पर ले गये वहां पुछने पर पता चला कि यहां तीस साल पहले रहते थे। अब इनका परिवार भानपुरा रहता है। इस पर संस्थान के राकेश कुमावत ने रतलाम में गुलाम हुसैन के रिश्तेदारों से भानपुरा परिवार जनों के फोन नबरं लिए गुलाम हुसैन के दामाद पुर्व पार्षद अभिभाषक इरफान अंसारी से फोन पर बात कि विडीयो कालिग करके बताया देखते ही परिवार जनों कि खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इरफान अंसारी अपनी सास श्रीमती रशीदा व पत्नी श्रीमती अर्शिदा के साथ लेने रतलाम रवाना हुए पर संस्था के सदस्यों ने मन्दसौर आकर गुलाम हुसैन को परिवारजनों को सुपुर्द किया। व दो माह कि मेडीसिन भी दी ओर कहा कि दो वर्ष तक संस्थान कि ओर से ही निशुल्क दवाई भानपुरा डाक से आएगी। राधेश्याम कुमावत ने बताया कि गुलाम हुसैन हमारी संस्था को छ माह पहले थाणे मुबंई कि सड़क पर लावारिस अवस्था में भटकते हुए मिले संस्था के सदस्य इन्हें श्रद्धा रीहंबिलिटेशन फाऊंडेशन ले आए। यहां इनका उपचार किया इनकी पुरी देखरेख कि, आपने बताया कि यह संस्थान अब तक 7000 हजार से अधिक रास्ते पर भटकने वाले मनोरोगियों को रास्ते से उठाकर, उनका उपचार कर सफलता पुर्वक उनके घरों तक पहुंचा चुकी है। यह संस्था 1991 से एक धर्मार्थ संस्था के रुप में कार्य कर रही हे आपने बताया कि संस्था सड़क पर भटकने वाले मानसिक रोगियों के लिए काम करती हे समाज को प्रेरणा लेकर बीमार लोगों कि मदद के लिए आगे आना चाहिए। ताकि समाज से तिरस्कृत इन लोगों को उनके अधिकार ओर समाज में सम्मान मिल सके, जैसे ही गुलाम हुसैन को भानपुरा लाया गया रिश्तेदार पड़ोसी देखने के लिए आए ओर सभी ने इस युग में इस तरह कि संस्था के प्रति आश्चर्य जताते हुए कहा कि इससे बड़ी सेवा कोई नहीं हो सकती। गुलाम हुसैन कि पत्नी रशीदा,पुत्री अर्शिदा ने कहा कि हमने अब मिलने कि उम्मीद छोड दी थी पर यह सब खुदा के रहम व इस संस्था के सेवा भाव से सभवं हुआ। जितना एहसान हम इनका माने वह कम है, हमारे लिए यह सस्थां ओर इसमें काम करने वाले फरीश्ते से कम नहीं है। पुर्व पार्षद अभिभाषक जो दामाद हे इरफान अंसारी ने कहा कि छ: माह तक रखना उपचार करना व वापस परिवार कि तलाश कर सुपुर्द करना इस युग में आशचर्य लगता है। संस्थान के सदस्यों ने एक रुपया भी हमसे नहीं लिया हमने कभी बार उनसे आग्रह किया पर साफ इन्कार किया और कहा कि आगामी दो वर्ष तक गुलाम हुसैन के लिए मेडीसिन निशुल्क संस्था भेजेगी। गुलाम हुसैन के चार पुत्र एक पुत्री हे उनकी पत्नी और पुत्री के आसुं नहीं रुक पा रहे थे। परिवार जनों कि खुशी का ठिकाना नहीं रहा,पत्नी ने खुद अपने हाथों से खाना खिलाया,जानकारी अनुसार उपचार के साथ ही अच्छा खाना,कपड़े सब संस्था देती थी। गुलाम हुसैन को देखकर सब आश्चर्य चकित थे पहले कि हालत ओर अभी कि हालत देखकर। श्रद्धा संस्था मुबंई के बाहरी क्षेत्र कर्जत के 6.5 एकड़ जमीन पर फेली हुई हे जहा हर समय कम से कम 120 मनोरोगी उपचाराधीन रहते है। इसमें श्रद्धा नर्सिंग होम जो मानसिक रोगियों का उपचार व उनका पुनर्वास केन्द्र है। गुलाम हुसैन को छोड़ने आए राधेश्याम कुमावत ने कहा कि जीवन में मनोरोगियों कि मदद के लिए अपनी सकारात्मक सोच बनाए ओर यह महसुस करें यह कोई भी हो सकता हे हम भी हो सकते है। पुरे भानपुरा नगर में,मुस्लिम समाज में श्रद्धा संस्थान के सेवाभाव कार्य कि प्रशसां हो रही हे ओर इस कलयुग में सेवा का यह निस्वार्थ भाव सबको आश्चर्य चकित कर रहा है। मुबंई से आए सदस्यो ने परिवार जनो के कितने ही आग्रह के बाद भी एक रुपया नहीं लिया ओर सस्म्मान छोड कर गये। इस दौरान परिवार जनों रिश्तेदारो कि आंखें नम थी।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

MANDSAUR PATRIKA
Mandsaur

OCTOBER 2022

पत्रिका

Mandsaur, 23/10/2022, Page 27

जब मिले गुल्लु भाई तो बह निकले परिजनों के आंसू, विश्वास ही नहीं हुआ

पत्रिका
ह्यूमन एंगल

मुंबई की संस्था ने 6 माह किया उपचार फिर रतलाम पहुंचे और यहां से मिला भानपुरा का पता

हरिकृष्ण मरमट
patrika.com

भानपुरा. परिजनों ने अब यह आशा छोड़ दी थी कि वे जिन्दा है...खूब तलाश की लेकिन नहीं मिले...याद है तो 17 मार्च 2020 का वह दिन, जब गुलाम हुसैन उर्फ गुल्लु भाई इंदौर में गुम हो गए। इस बीच खबर मिली कि गुलाम जिन्दा है तो परिजनों को ?विश्वास ही नहीं हुआ, जब साक्षात सामने देखा तो आंखों में आंसू बह निकले।

यह है मामला

गुलाम हुसैन को लेकर आजाद नगर इंदौर थाने में गुमशुदगी कि रिपोर्ट दर्ज कराई और परिवार जन भानपुरा निराश भाव से लौट आए। उनकी निराशा 21 अक्टूबर को आशा में बदल गई जब उन्हें यह पता चला कि गुलाम हुसैन मुबंई थाणे कि मानसिक लावारिस, भटके लोगों की शरण स्थली श्रद्धा रीहेबिलिटेशन फाउंडेशन में विगत 6 माह से हैं। छह माह पहले गुलाम हुसैन मुबंई की सडक़ों पर मिले। इलाज के बाद पता पूछा तो मोमिनपुरा रतलाम बताया, जहां वे करीब तीस साल पहले रहते थे।

मुंबई की सड़कों पर मिले थे

राधेश्याम कुमावत ने बताया कि गुलाम हुसैन हमारी संस्था को छ माह पहले मिले थे। मुबंई की सडक़ पर लावारिस अवस्था में भटकते हुए मिले संस्था के सदस्य इन्हें श्रद्धा रीहेबिलिटेशन फाउंडेशन ले आए। इनका उपचार किया। यह संस्थान अब तक 7000 हजार से अधिक रास्ते पर भटकने वाले मनोरोगियों को रास्ते से उठाकर, उनका उपचार कर उनके घरों तक पहुंचा चुकी है। गुलाम हुसैन के चार पुत्र एक पुत्री हैं।

रतलाम लाए तो भानपुरा का पता मिला

गुलाम हुसैन को लेकर संस्था के राकेश कुमावत व सहायक शुभम रतलाम लेकर आए और बताए पते पर ले गए, वहां पूछने पर पता चला कि यहां तीस साल पहले रहते थे। अब इनका परिवार भानपुरा में रहता है। इस पर हुसैन के दामाद पूर्व पार्षद इरफान अंसारी से फोन पर बात की वीडियो कालिग करके बताया। देखते ही परिजनों कि खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इरफान अंसारी अपनी सास रशीदा व पत्नी अर्शिदा के साथ लेने रतलाम रवाना हुए पर संस्था के सदस्यों ने मंदसौर आकर गुलाम हुसैन को परिवारजनों को सुपुर्द किया। दो माह की दवाई भी दी और कहा कि दो वर्ष तक संस्थान की ओर से ही निःशुल्क दवाई भानपुरा डाक से आएगी।

UTTAR PRADESH
News

HINDI

AMRIT VICHAR
Bareilly

OCTOBER 2022

लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

कार्तिक कृष्ण पक्ष, दशमी 4.05 तक उपरांत एकादशी विक्रम संवत 2079

अमृत विचार

एक सम्पूर्ण अखबार

वर्ष 3, अंक 340, पृष्ठ 16, मूल्यः 6 रुपये

बरेली, गुरुवार, 20 अक्टूबर 2022

www.amritvichar.com

में वेस्टइंडीज की पहली जीत...15

बुधवार को सन्नी देओल ने मनाय

दिवाली से पहले मिली खुशी तीन साल बाद बेटा घर लौटा

अमृत विचार, बरेली

घर लौटे बेटे के साथ परिवार वाले।

दिवाली से कुछ दिन पूर्व चनहेटी की शांति देवी का घर खुशियों से भर गया। 28 मई 2019 को कचहरी के पास से लापता हुआ बेटा विनोद बुधवार क घर लौट आया।

कैंट थाना क्षेत्र के चनहेटी की रहने वाली शांति देवी कचहरी पर चाय बेचती हैं। उसने बताया कि तीन साल पहले बेटा विनोद अचानक गायब हो गया था। उसने थाना कोतवाली में उसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट भी लिखाई थी और उसे खोजने की बहुत कोशिश की लेकिन वह नहीं मिला। 5 सितंबर 2022 को मुंबई के चेंबूर में सड़कों पर बदहवास हालत में विनोद पड़ा मिला था। जिसके बाद श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन की टीम ने उनको रेस्क्यू कर विनोद का इलाज किया। विनोद की मानसिक स्थिति सही नहीं था तब श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन के

- **कचहरी से लापता हो गया था चनहेटी का विनोद**
- **मां ने कोतवाली में दर्ज कराई थी गुमशुदगी की रिपोर्ट**

फाउंडर ट्रस्टी और मनोचिकित्सक डा. भरत वाटवानी के अंडर में विनोद का मानसिक इलाज हुआ। सोशल वर्कर मुकुल ने विनोद की काउंसिलिंग की। जब विनोद की मानसिक हालत ठीक हुई तो उसने खुद को बरेली का रहने वाला बताया। जिसके बाद टीम उसे लेकर उसके घर पर पहुंची। जिसके बाद उसके परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई।

BIHAR
News

HINDI

DAINIK JAGRAN
Patna

NOVEMBER 2022

पटना, गुरुवार, 3 नवंबर, 2022

जागरण सिटी

दैनिक जागरण

पटना

सप्तरंग
अलग पहचान
तकनीक से आ रहा बैंकिंग में बदलाव
14

शांत चरित्र निभाना कठिन काम : सोनल मोंटेरो 14

www.jagran.com

अर्घ्य दे घर पहुंची तो सामने था चार साल से लापता भाई

जयशंकर बिहारी ● पटना

छठी मईया ने बगैर मांगे बरसों का दुख दूर कर दिया। छठ महापर्व में सुबह का अर्घ्य देकर नंदलाल साह स्वजनों के साथ घर लौटे तो चार साल पहले लापता हुआ उनका 44 वर्षीय बेटा संजय साह दरवाजे पर बैठा मिला। नंदलाल बताते हैं कि जिस बेटे का दो साल पहले दाह-संस्कार कर दिया था, उसे पहली नजर में देखा तो उसके जिंदा होने पर विश्वास नहीं हो रहा था। मां विमला देवी कहती हैं कि बेटी छठ करती है। अर्घ्य के समय बेटे को याद कर हर साल आंखें नम हो जाती थीं। सब छठी माई की कृपा है। भगवान भास्कर ने आंचल को खुशियों से भर दिया।

मगही में बातचीत से हुई पहचान : दानापुर के रामजी चक निवासी संजय कुमार मानसिक रूप से बीमार हो गए थे। 2018 में अचानक घर से गायब हो गए। दो माह पहले उन्हें केरल के कासरगोड के एक गैर सरकारी संगठन ने देखभाल के लिए मुंबई के रेमन मैग्सेसे पुरस्कार विजेता डा. भरत वटवानी द्वारा संचालित श्रद्धा पुनर्वास केंद्र में भेज दिया। यहां डा. उदय सिंह के नेतृत्व में इलाज प्रारंभ हुआ। डा. भरत वटवानी ने बताया कि काउंसिलिंग में संजय मगही में बातचीत करते थे, जिसके आधार पर उनके बिहार के होने की जानकारी मिली। संजय अपना पता रामजी चक, बाटा, आटा-चक्की दुकान ही बता पा रहे थे। उन्होंने जब पिता का नाम नंदलाल साह बताया तो टीम उन्हें लेकर पटना पहुंची।

दो घंटे तक स्वजन का करते रहे इंतजार : संजय को मुंबई से पटना लेकर आए स्वयंसेवक अजय और विकास ने बताया कि 29 अक्टूबर को मुंबई से ट्रेन से चले थे। 31 अक्टूबर की सुबह संजय को दानापुर के क्षेत्र में घुमाया, लेकिन वह अपना घर नहीं पहचान सके। इसके बाद रामजी चक में बाटा दुकान के सामने आटा-चक्की के आसपास नंदलाल साह के घर की जानकारी मिली। सुबह 7:00 बजे उनके घर पहुंचे, लेकिन परिवार के सभी लोग छठ पूजा में गए हुए थे। लगभग सवा नौ बजे के आसपास परिवार पहुंचा तो उनके चेहरे पर दिखी खुशी के लिए शब्द नहीं हैं। नौ वर्षीय बेटी तृषा और 10 वर्षीय बेटा आदित्य लिपट गया।

छठी माई ने लौटाया सिंदूर : पत्नी कंचन देवी ने बताया कि पहली बार तीन दिन घर से बाहर रहने के बाद वह लौट आए थे। हमें उम्मीद थी कि वह जल्द ही लौट आएंगे। दाह-संस्कार के बाद सारी उम्मीदें छोड़ दी थी। ईश्वर की कृपा से वह वापस आ गए हैं। छठी माई ने सुहाग को वापस लौटा दिया। वह बेटे-बेटी को काफी स्नेह दे रहे हैं। उनके लौट आने से पूरे परिवार के साथ साथ गांव में भी हर्ष का माहौल है। लोग उनसे मिलने जुलने और देखने घर आ रहे हैं। सभी सहसा उनके लौटने पर भरोसा नहीं कर पा रहे थे।

पुलिस ने नहीं लिया था गुम होने का आवेदन

नंदलाल साह के अनुसार, 2018 में गुम होने के बाद दीघा थाने में आवेदन दिया था, लेकिन उसे स्वीकार नहीं किया गया। 2020 में कोरोना संक्रमण के दौरान एक परिचित ने बताया कि संजय का शव उसने देखा है। परिवार ने उसे संजय का मानकर दाह-संस्कार भी कर दिया। मृत्यु प्रमाण पत्र भी जारी कर दिया गया था। नंदलाल साव ने बताया कि वह बीएससी अंतिम वर्ष में थे तो अचानक असामान्य व्यवहार शुरू कर दिया।

2020 में संजय को मृत समझकर परिवार ने कर दिया था दाह

02 माह पहले केरल के का सरगोड से इलाज के मुंबई स्थित श्रद्धा पुनर्वास केंद्र में भेजे गए

संजय साह की गोद में बेटा आदित्य, साथ में मां-पत्नी, बेटी, पिता व भाई। ● जागरण

MADHYA PRADESH
News

HINDI

DAINIK BHASKAR
Khandwa

FEBRUARY 2023

दैनिक भास्कर

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

कुल पृष्ठ 16, मूल्य ₹ 5.00 | वर्ष 6, अंक 338, प्रथम

dainikbhaskar.com | खंडवा, मंगलवार 28 फरवरी, 2023 | फाल्गुन, शुक्ल पक्ष-9, 2079 | 12 राज्य | 61 संस्करण

घर वापसी • धनोरा के नवाड़ फलिया का युवक चला गया था घर से, महाराष्ट्र की संस्था ने परिजन से मिलवाया

लापता बेटा नहीं मिला तो मृत मान कर दिया था उत्तरकार्य, 17 साल के बाद जीवित लौटा

भास्कर संवाददाता | धनोरा

घर से लापता जिस युवक को मृत समझकर परिजनों ने उत्तरकार्य कर दिया था वो असल में जीवित निकला। महाराष्ट्र की संस्था की मदद से 17 साल बाद वह घर पहुंचा। उसे देख परिजनों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वहीं युवक ने उसके रिश्तेदारों सहित उसकी मृत मां की तस्वीर देख पहचान लिया।

यह कहानी है सेंधवा ब्लॉक के धनोरा गांव के नवाड़ फलिया में रहने वाले प्रेमसिंग पिता लच्छिया की। प्रेमसिंग 2006 में घर में किसी को बिना बताए कहीं चला गया था। एक साल तक परिजनों ने उसकी तलाश की जहां जाने की उसकी संभावन थी वहां जाकर ढूंढा लेकिन नहीं मिला। परिजनों ने उसे मृत मान लिया था। 24 फरवरी शुक्रवार को महाराष्ट्र के श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के डॉ. तुषार गुले उसे लेकर पहले सेंधवा फिर धनोरा तक पहुंचे। बस में लोगों से पूछताछ के दौरान डॉ. गुले को पता चला प्रेमसिंह का वास्तविक घर धनोरी में है। इसके बाद वहां के सरपंच से संपर्क कर परिजनों को धनोरा बस स्टैंड पर बुलाया और उसकी पहचान कराई। हाथ पर लिखा नाम और हनुमानजी के टैटू से सभी ने उसे पहचाना। वहीं प्रेमसिंग ने भी सभी को पहचान लिया। इस पर उसे परिजनों के सुपुर्द किया।

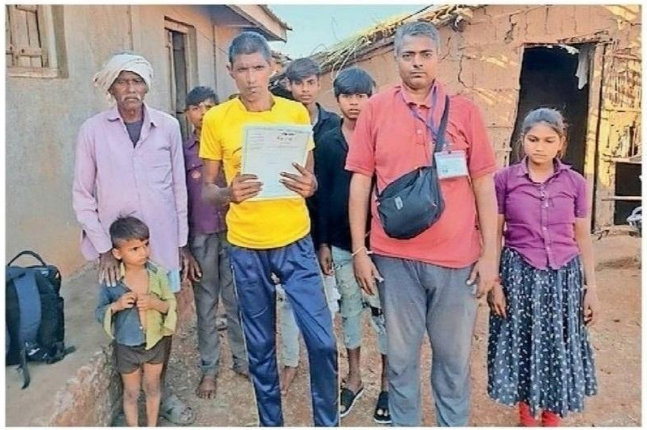

डॉ. गुले के साथ प्रेमसिंग (पीली टी शर्ट में)।

प्रदेश व गुजरात के तीर्थस्थलों पर ढूंढा

2006 में अचानक वो कहीं चला गया। परिवार ने सोचा वापस आ जाएगा लेकिन महीनों बाद भी लौटकर नहीं आया तो परिजनों ने तलाश शुरू की। कई तीर्थ स्थानों पर जाकर उसकी तलाश की। गुजरात-महाराष्ट्र के कई बड़े तीर्थ स्थान सहित मध्यप्रदेश के भी कई जिलों में उसे तलाशा महाराष्ट्र मजदूरी करने गए परिचितों को भी पूछताछ की लेकिन उसका कहीं पता नहीं चला करीब एक से डेढ़ साल तक उसकी खोजबीन करने के बाद भी जब उसकी जानकारी नहीं मिली तो परिजनों ने उसे मृत समझ लिया और उसका क्रियाकर्म करते हुए गमी कार्यक्रम भी कर दिया। अब जब वो जीवित घर लौट आया तो परिजनों की आंख में आंसू आ गए।

मानसिक स्थिति हो गई थी खराब

प्रेमसिंग के पिता लच्छिया और छोटे भाई दिलीप ने बताया प्रेमसिंग बचपन से धार्मिक प्रवृत्ति का था उसे पूजा पाठ करना पसंद था। ज्यादा किसी से बात नहीं करता था। बड़ा हुआ तो पिता ने शादी के लिए कहा तो मना कर दिया। इसके बाद भिलट बाबा और दुर्गा माता की पूजा में लीन रहने लगा। दिलीप ने बताया पहले पूरा परिवार धनोरी पंचायत में रहते थे इसके बाद 2006 में धनोरा के नवाड़ फलिया क्षेत्र में रहने आ गए। प्रेमसिंग खेत में काम करता था। 2001 से थोड़ा मानसिक रूप से बीमार रहने लगा। किसी से कोई बात नहीं करता था। कभी कोई इसका नाम लेता तो पत्थर मार देता था। यहां वहां भटकने के बाद घर के पास ही बनी एक झोपड़ी में शाम को वापस आ जाता था।

2021 के पहले प्रेमसिंग कहां था, याद नहीं

डॉ. गुले ने बताया मुंबई केयर रत्नागिरी स्थित मेंटल हॉस्पिटल में प्रेमसिंग को 2021 में भर्ती किया था। वहां भाषा समस्या व मानसिक रूप से कमजोर होने से वे ठीक से पता व नाम नहीं बता रहा था। उसके असली नाम की पहचान उसके घर आने के बाद हुई। रत्नागिरी मेंटल हॉस्पिटल में परमेशन नाम से रजिस्ट्रेशन था वहां पर मेंटल डिसेबिलिटी के आधार पर आधार कार्ड बनाकर इलाज शुरू किया। थोड़ा ठीक होने पर इसे जनवरी 2023 में श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के सुपुर्द किया। काउंसलिंग के बाद धीरे-धीरे उसने बताना शुरू किया। पहले इसके गांव का नाम जो बताया उसे गूगल पर सर्च किया लेकिन कहीं पर भी उस नाम से पता नहीं चला। गूगल पर कुछ जगहों के नाम सर्च कर बताए। तब इन गांव की पहचान की उसी आधार पर इसे सेंधवा लाए।

सात भाई-बहन हैं

परिजनों ने भास्कर को बताया प्रेमसिंग के परिवार में माता-पिता और 7 भाई-बहन हैं। सबसे बड़ी बहन है। उसके बाद प्रेमसिंग दूसरे नंबर का है। पारिवारिक स्थिति ठीक नहीं होने से पिता के साथ प्रेमसिंग भी मजदूरी कर हाथ बंटाता था। सेंधवा की जिनिंग में भी उसने सालों तक काम किया।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

UJJAIN PATRIKA
Ujjain

MAY 2023

उज्जैन पत्रिका SUNDAY
पत्रिका . उज्जैन, रविवार, 28 मई, 2023

मनोस्थिति बिगड़ने पर घर से चला गया था युवक

एक साल पहले लापता युवक को मुंबई की 'श्रद्धा' ने लौटाया तो महिलाओं ने ली बलाइयां

मुंबई की संस्था ने इलाज कर घर पहुंचाया, परिवार की खशियों का नहीं रहा ठिकाना

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नागदा. करीब एक साल पहले घर से लापता युवक वापस परिजनों के पास पहुंचा, तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मानवता का यह कार्य मुंबई की श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन ने किया है। फाउंडेशन के लोगों को युवक मुंबई की सड़कों पर मिला तो उसकी दिमागी हालत ठीक नहीं थी। फाउंडेशन ने इलाज कर युवक के गांव, घर का पता पूछा। इंटरनेट की मदद से गांव का नाम खोजा। पुख्ता जानकारी के बाद फाउंडेशन के लोग उसे लेकर गांव पहुंचे। एक साल बाद जब युवक अपनों से मिला तो परिजन, रिश्तेदारों, गांववालों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सभी ने युवक का पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया। खासकर महिलाओं ने बलाइयां ली। समीपस्थ ग्राम डाबरी निवासी कमल गुर्जर मानसिक रूप से कमजोर है।

गांव पहुंचने पर कमल व उन्हें घर पहुंचाने वाले राकेश कुमावत का सम्मान किया गया।

करीब एक साल पहले कमल घर से निकल गया और भटकते-भटकते मुंबई जा पहुंचा। मुंबई की सड़कों पर कमल को घूमता देख एक स्वयं सेवी संस्था ने उसे श्रद्धा फाउंडेशन के सुपुर्द किया। फाउंडेशन ने कमल को अपने आश्रम में रखकर इलाज दिया। इलाज के चलते कमल धीरे-धीरे ठीक होने लगा। करीब छह महीने पहले समिति ने कमल से इसके घर का पता जानने की कोशिश की। कमल ने अपने गांव का नाम बताकर घर जाने की इच्छ जताई। फाउंडेशन ने गूगल से कमल के गांव का पता ढूंढ़ निकाला। शुक्रवार सुबह फाउंडेशन के राकेश कुमावत कमल को लेकर गांव पहुंचे। कमल के गांव पहुंचने पर उसका व कुमावत क स्वागत किया गया।

बिरलाग्राम व नागदा थाने में दर्ज कराई थी गुमशुदगी

सरपंच निलेश गुर्जर ने बताया कि कमल के गुम होने पर उसके नाम की गुमशुदगी बिरलाग्राम व मंडी थाने में दर्ज कराई थी। लंबे समय तक कमल का पता नहीं चलने पर सभी उसके मिलने की आस छोड़ चुके थे। परिजनों ने कमल के लिए मन्नत भी मांगी थी, जो अब पूरी हो चुकी है।

अब तक 7 हजार भटकों को दिखाया घर का रास्ता

फाउंडेशन के कुमावत ने बताया कि कमल को अगले एक साल तक की दवाइयां नि:शुल्क उपलब्ध कराई जाएंगी। वर्ष 1991 से संस्था मुंबई में मनोरोगियों के लिए काम कर रही है। संस्था अब तक 7 हजार से अधिक मनोरोगियों को ठीक कर उन्हें उनके परिजनों से मिलवा चुकी है।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

DAINIK BHASKAR
Ujjain

MAY 2023

दैनिक भास्कर
सप्ताह की शुरुआत पॉजिटिव सोच के साथ
उज्जैन | सोमवार, 29 मई, 2023 | ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-9, 2080 | वर्ष 18, अंक 126, नगर | कुल पेज 14, मूल्य ₹ 5.00

गांव डाबरी से एक साल पहले लापता हुआ कमल, मुंबई की संस्था ने इलाज किया

बच्चे ने जैसे ही गांव का नाम बताया लोकेशन ट्रेस कर गांव लेकर पहुंचे

भास्कर संवाददाता | नागदा

गांव डाबरी से एक साल पहले कमल गुर्जर घर से लापता हो गया था। परिजनों ने काफी तलाश की, मन्नतें मांगी। बिरलाग्राम और मंडी पुलिस में भी गुमशुदगी दर्ज कराई। उसके बाद भी उसका कोई पता नहीं मिला। शुक्रवार को मुंबई की श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन उसे लेकर गांव पहुंची तो परिजन और ग्रामीण खुश हो गए। बेटे कमल के सकुशल लौटने पर उसका स्वागत किया और संस्था का आभार भी माना।

सरपंच नीलेश गुर्जर ने बताया कि कमल की मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। वह अचानक घर से लापता हो गया था। काफी खोजबीन के बाद भी नहीं मिला तो परिजन आस खो बैठे थे। सामाजिक संगठन श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन मुंबई सड़कों पर घूमने वाले मानसिक बीमारों के लिए कार्य करती है। संस्था के राजेश कुमावत ने बताया कमल को एक अन्य स्वयं सेवी संस्था ने उनके सुपुर्द किया था, जिसके बाद से ही उसका इलाज शुरू कर दिया था। धीरे-धीरे याददाश्त वापस आने लगी तो कमल ने घर जाने की इच्छा जताई। उसने गांव डाबरी का नाम लिया, वैसे ही संस्था ने गूगल पर गांव को तलाशा, उज्जैन के समीप नागदा की लोकेशन मिली। इसके आधार पर उसे लेकर संस्था के पदाधिकारी गांव डाबरी पहुंचे। कमल को पाकर उसके परिजनों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। राजेश ने बताया संस्था द्वारा कमल को आने वाले एक वर्ष तक की दवाइयां नि:शुल्क उपलब्ध कराई जाएगी। संस्था वर्ष 1991 से संचालित है, अभी तक रास्ता भटकने वाले 7 हजार से अधिक मनोरोगियों को उनके घरों तक पहुंचा चुकी है।

ग्रामीणों के साथ कमल व परिजन ।

RAJASTHAN

News

HINDI

RAJASTHAN PATRIKA

Nagaur

OCTOBER 2023

26.10.2023

नागौर पत्रिका

बारह वर्षों से लापता बेटे को पाकर परिजनों के छलके खुशी के आंसू

करीब पांच माह पहले मुम्बई की संस्था को मिला युवक, इलाज कराकर घर पहुंचाया

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रियांबड़ी. घर से लापता युवक बारह वर्षों बाद परिजनों से मिलते हुए।

रियांबड़ी @ पत्रिका. श्रद्धा फाउंडेशन कर्जत मुंबई की संस्था की सहयोग से बारह वर्षों से लापता युवक बुधवार को अपने घर पहुंचा। युवक के घर पहुंचते ही परिवार के सदस्यों में उसे जीवित देखकर खुशी के आंसू निकल पड़े। परिवार के सदस्यों ने घर से लापता होने के बाद कई जगहों पर तलाश करने के बाद अपने लाडले के मिलने की आस छोड़ चुके थे। मगर मुंबई की संस्था की मेहनत रंग लाई और लापता युवक को परिजनों तक पहुंचाया। बताया जाता है कि शहर के लिखमाराम माली जो 12 वर्ष पहले घर से गायब हो गया था। जिसको 5 माह पहले जोधपुर कि संस्था को लावारिश मिला। इसकी याददाश्त नहीं होने से अपने गांव व परिवार का नाम नहीं बता पा रहा था। जिसे इलाज के लिए मुंबई भिजवाया था। मुंबई संस्था में इसका इलाज हुआ। फिर धीरे धीरे इसकी मानसिक स्थिति में सुधार आया। मानसिक स्थिति सुधरने पर इसने अपना घर का पता बताया तो संस्था के सोशल वर्कर राकेश कुमावत ने रियांबड़ी के जसराज और मुंशी मुकेश माली से संपर्क किया। उन्होंने बताया कि लिखमाराम जो गांव रियांबड़ी बता रहा वो नागौर जिले में हैं। इसके पश्चात संस्था के सोशल वर्कर राकेश कुमावत उसको लेकर रियांबड़ी पहुंचे। घर वालों ने बताया कि 12 वर्ष से घर से निकला था। लिखमाराम के सकुशल मिलने से परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई। युवक के परिवार जनों ने उसको गले लगाया और भाई व बहनों के खुशी के आंसू छलक गए। श्रद्धा फाउंडेशन संस्था का शहर सहित माली समाज के लोगों ने आभार व्यक्त करते हुए उनका अभिनन्दन किया।

संस्था के राकेश कुमावत ने बताया की संस्था 1988 से मुंबई में चल रही हैं। संस्था के फाउंडर ट्रस्टी डॉक्टर भरत भटवानी और उनकी पत्नी डॉक्टर स्मिता भटवानी की देखरेख में अब तक लगभग 10 हजार लोगों का मानसिक इलाज कर उन्हें पूर्ण स्वस्थ कर घर पहुंचाया गया हैं।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

BURHANPUR BHASKAR
Khandwa

NOVEMBER 2023

बुरहानपुर 17-11-2023

बुरहानपुर भास्कर

नेपानगर ▸ शाहपुर ▸ धूलकोट ▸ निंबोला ▸ डेढ़तलाई ▸ खकनार

खंडवा, शुक्रवार, 17 नवंबर, 2023 कार्तिक शुक्ल पक्ष-04, 2080

प्रसन्नता • बहुजन नगर निवासी युवक 20 साल पहले घर से हो गया था लापता

20 साल बाद अचानक बेटा घर लौटा तो मां बोली- बिछड़े हुए बेटे को पाकर क्या खुशी मिलती है यह एक मां ही जानती है

भास्कर संवाददाता | नेपानगर

20 साल बाद घर के बाहर आकर एक एनजीओ की गाड़ी रूकी। वाहन से जैसे ही करीब 42 साल का धर्मेंद्र उतरा, तो परिजन उसे देखकर दौड़ पड़े। मोहल्ले के लोग भी शोर सुनकर जमा हो गए। किसी को यकीन नहीं हो रहा था कि 20 साल पहले घर से अचानक गायब हुआ धर्मेंद्र पिता लिमड़ा आज घर वापस लौट आया है। मुंबई की एक एनजीओ संस्था उसे लेकर पहुंची थी। पूछने पर धर्मेंद्र की मां ने कहा बिछड़े हुए बेटे को वापस पाकर एक मां को कितनी खुशी होती है यह वहीं जान सकती है। दरअसल करीब 20 साल पहले धर्मेंद्र लिमड़ा निवासी बहुजन नगर अचानक घर से कहीं चला गया था। परिजन ने उसकी तलाश की, लेकिन वह नहीं मिला। जब वह घर से गया था तब उसका एक बेटा था। जबकि पत्नी गर्भवती थी। अब लौटा तो बच्चे भी बड़े हो गए। वह मानसिक रूप से कमजोर है।

20 साल बाद वापस घर लौटने पर परिजन के साथ धर्मेंद्र।

संस्था के वाहन से लेकर पहुंचे नेपानगर

संस्था के सदस्य युवक को उनके वाहन से लेकर नेपानगर आए। इस दौरान युवक ने अपने परिजन को भी पहचान लिया। मां और पिता का नाम भी बताया। उसकी मां ने कहा वह मानसिक रूप से कमजोर है। उसके घर से चले जाने के बाद हमने उसकी काफी तलाश की थी, लेकिन वह नहीं मिला था।

मुंबई में सड़क किनारे भटकता मिला था

करीब पांच माह पहले धर्मेंद्र मुंबई की सड़कों पर घूमते हुए मिला। उसे एक व्यक्ति ने एनजीओ संस्था श्रद्धा रिहैबिलिटेशन सेंटर को सौंपा। इसके संरक्षक डॉ. भरत वटवानी हैं। जब धर्मेंद्र मिला, तो वह मानसिक रूप से ठीक नहीं था। युवक को साथ लेकर नेपानगर पहुंचे संस्था के डॉ. उदय भारोसे ने बताया युवक मुंबई में रोड पर भटकते हुए मिला था। उपचार के बाद वह अस्पताल में ठीक हुआ। तब उसने पता बताया। उसने कहा कि मैं मप्र के नेपानगर का रहने वाला हूं।

RAJASTHAN

News

HINDI

RAJASTHAN PATRIKA

Udaipur - Alwar

MARCH 2024

पृष्ठ 16 | मूल्य 5.00 | उदयपुर, सोमवार, 4 मार्च, 2024 | फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी संवत् 2080 राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गुजरात, तमिलनाडु, पश्चिम

राजस्थान पत्रिका

पत्रिका अखबार हर दिन लोगों के घर के दरवाजे खोलता है और पढ़ने के बाद मन के दरवाजे खोलता है।

आखिर खींच लाई मां की ममता : मुंबई की संस्था ने किया उपचार, काउंसलिंग कर पहुंचाया घर

सोलह साल बाद घर पहुंचा लाला तो छलके खुशी के आंसू

2007 में नाथद्वारा में शादी समारोह से हो गया था लापता

पत्रिका शुभम कड़ेला
patrika.com

लाला के सकुशल लौटने की सूचना पर कुशलक्षेम पूछने पहुंचे परिवारजन व ग्रामीण। मावली

उदयपुर . करीब सोलह साल पूर्व लापता हुए लाला को अचानक अपने बीच देखकर पूरा गांव स्तब्ध रह गया। हर कोई अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर पाया। वहीं, अपने पुत्र को देख उसके माता- पिता की खुशी का ठिकाना न रहा। पुत्र को गले लगाया और फूट-फूटकर रोने लगे। खुशी के आंसू देखकर ग्रामीण भी भावुक हो गए। पूरे गांव में खबर फैल गई कि लाला वापस आ गया तो सभी दौड़ते हुए उसके घर पहुंचे और हाल जाना।

हम जिक्र कर रहे हैं मावली तहसील क्षेत्र की लोपड़ा ग्राम पंचायत के सवानिया गांव निवासी रमेशचंद्र (40) उर्फ लाला पुत्र रूपशंकर श्रीमाली का, जो वर्ष 2007 में लापता हो गया था। उस समय वह मानसिक रूप से अस्वस्थ था। मुंबई की संस्था श्रद्धा फाउंडेशन ने उसकी काउंसलिंग कर उसे अपने गांव पहुंचाया। इतने समय वह अपने घर का सही पता नहीं बता पा रहा था। हाल ही में पता सही बताने पर फाउंडेशन ने उसे सही सलामत घर पहुंचाया। इसके बाद घर सहित पूरे गांव में हर्ष है। लाला अपने परिवार का इकलौता पुत्र है। उसके एक बड़ी व एक छोटी बहन हैं।

शादी में खो गई थी परिवार की खुशियां

लाला की मां सीता श्रीमाली ने बताया कि वे वर्ष 2007 में नाथद्वारा में मौसी के पुत्र की शादी में गए थे। तब लाला की उम्र महज 24 साल थी। उस समय मानसिक अस्वस्थ होने से परिजन उसका खयाल रखते थे। वहां से लाला अचानक लापता हो गया था। जिसे काफी ढूंढा, लेकिन पता नहीं चला। मावली थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई, इसके बावजूद इतने सालों तक उसकी कोई खबर नहीं थी।

मुझे पता था कि मेरा लाला आएगा

मां सीता ने बताया कि इतने साल बीतने के बाद मन में डर सा बैठ गया था। बीच में कोरोना महामारी ने दिल को झकझोर दिया। लेकिन मुझे विश्वास था कि मेरा लाला वापस जरूर आएगा और इसी सकारात्मकता के साथ खुद को मजबूत करने का प्रयास करती रही।

सूचना मिलने पर दौड़ते हुए पहुंचे परिजन

संस्था के सदस्य दो दिन पहले लाला को लेकर सुबह 7 बजे पहुंचे। इस दौरान लाला के माता-पिता पूनावली, राजसमंद में एक सामाजिक कार्यक्रम में गए हुए थे। घर के समीप भोलेनाथ मंदिर के पुजारी ने लाला को पहचाना। इसके बाद माता-पिता को सूचना दी गई। जैसे ही माता-पिता को लाला के लौटने की खबर मिली, वे तुरंत दौड़ते भागते घर पहुंचे और अपने पुत्र को गले से लगाकर खुशी से बिलख-बिलख कर रोने लगे। यह दृश्य देख हर किसी की आंखें नम हो गईं।

गुजरात के रास्ते भटक रहा था लाला

मुंबई में श्रद्धा फाउंडेशन ने लाला का उपचार किया। उसके द्वारा सही पता बताने पर काउंसलर रमेश कुमावत ने सकुशल उसे घर पहुंचाया। ग्रामवासियों ने खुशी से फाउंडेशन को 12 हजार 500 रुपए का चेक देकर आभार जताया। कुमावत ने बताया कि लाला गुजरात के रास्ते पर भटक रहा था। जिसे वहां की एक संस्था के सहयोग से श्रद्धा फाउंडेशन कर्जत, महाराष्ट्र में भर्ती करवाया। जहां उसका उपचार किया गया।

राजस्थान पत्रिका

लवर, सोमवार, 4 मार्च, 2024 | फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी संवत् 2080 राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गुज

2007 में नाथद्वारा में शादी समारोह से हुआ था लापता

सोलह वर्ष बाद घर पहुंचा रमेश उर्फ लाला, छलके खुशी के आंसू

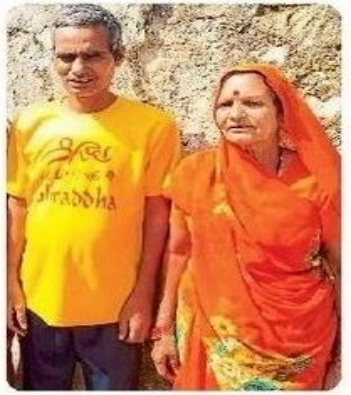

अपनी मां के साथ रमेश उर्फ लाला।

शुभम कडेला
patrika.com

उदयपुर. सोलह साल पहले लापता हुए लाला को अचानक अपने बीच देखकर पूरा गांव स्तब्ध रह गया। हर कोई अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर पाया। वहीं, अपने बेटे को देख उसके माता-पिता की खुशी का ठिकाना न रहा। बेटे को गले लगाया और फूट-फूटकर रोने लगे।

हम जिक्र कर रहे हैं मावली तहसील क्षेत्र की लोपड़ा ग्राम पंचायत के सवानिया गांव निवासी रमेशचंद्र (40) उर्फ लाला का, जो वर्ष 2007 में लापता हो गया था। उस समय लाला मानसिक रूप से अस्वस्थ था। महाराष्ट्र की संस्था श्रद्धा फाउंडेशन ने उसकी काउंसलिंग कर उसे अपने गांव पहुंचाया। इतने समय तक वह अपने घर का सही पता नहीं बता पा रहा था। हाल में पता सही बताने पर फाउंडेशन ने उसे सही सलामत घर पहुंचाया। फाउंडेशन के काउंसलर रमेश कुमावत ने लाला गुजरात के रास्ते पर भटक रहा था। जिसे वहां की एक संस्था के सहयोग से संस्था में भर्ती करवाया। इसके बाद घर सहित पूरे गांव में हर्ष है। लाला अपने परिवार का इकलौता पुत्र है। उसके एक बड़ी व एक छोटी बहन हैं।

शादी में खो गई थी परिवार की खुशियां

लाला की मां सीता श्रीमाली ने बताया कि वे वर्ष 2007 में नाथद्वारा में मौसी के बेटे की शादी में गए थे। तब लाला की उम्र 24 साल थी। वहां से लाला अचानक लापता हो गया था। जिसे काफी ढूंढा, लेकिन पता नहीं चला। मावली थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई, इसके बावजूद इतने साल तक उसकी कोई खबर नहीं थी। सीता ने बताया कि इतने साल बीतने के बाद मन में डर सा बैठ गया था। बीच में कोरोना ने दिल को झकझोर दिया। लेकिन मुझे विश्वास था कि मेरा बेटा वापस जरूर आएगा।

BHUTAN REUNION COVERAGE - 1

WEST BENGAL

News

HINDI

DAINIK JAGRAN

Siliguri

MAY 2024

सिलीगुड़ी, मंगलवार
14 मई, 2024
नगर संस्करण *
मूल्य ₹ 5.00
पृष्ठ 14

दैनिक जागरण

www.jagran.com
पश्चिम बंगाल, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर और हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित

बाइडन ने कालेज परिसरों को सनकी जिहादियों के हवाले कर दिया है : ट्रंप 12

पीओजेके का निश्चित तौर पर भारत में विलय होगा : जयशंकर 12

तेरह वर्ष से लापता भूटानी युवक अपने पिता के साथ स्वदेश लौटा

संवादसूत्र, चामुर्ची : एक भूटानी नागरिक भारत में करीब 13 साल तक लापता होने के बाद सोमवार को अपने पिताजी से मिला। मुलाकात के दौरान बाप-बेटे ने एक दूसरे को गले लगाते हुए अपने स्नेह को व्यक्त किया। चामुर्ची चेक पोस्ट स्थित सामसे भूटान गेट पर भूटानी युवक को लेने उनके पिता नामग्ये वांगदी आए थे। भूटान की सभी प्रशासनिक एवं कानूनी प्रक्रिया को पूरी करने के बाद वह अपने बेटे फोन्से वांगदी को अपने घर ले गए।

उल्लेखनीय है कि 2011 में भूटान से भारतीय सीमा में प्रवेश करने के पश्चात फोनशे वांगदी लापता हो गया था। उसके पिता द्वारा कई जगह तलाश के बाद भी अपने बेटे का कोई सुराग नहीं लगा सके। उन्हें लगा उनका बेटा अब इस दुनिया में नहीं है। लेकिन अचानक फिर से 13 वर्ष बाद उन्हें लापता हुए उनके बेटे को मिलने से उन्हें यकीन ही नहीं हुआ। मुंबई के श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के

भारत-भूटान सीमा पर पिता के साथ फोनशे वांगदी ● जागरण

समाजसेवी समर बसाक एवं निखिलेश संगड़ा ने इस भूटानी युवक फोन्से वांगदी को लेकर मुंबई के श्रद्धा रिहैबिलिटेशन केंद्र से आए थे। जहां आज उन्होंने इस भूटानी युवक को सुरक्षित उनके पिता को सौंप दिया। श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के समाजसेवी समर बसाक ने बताया कि यह भूटानी नागरिक अपने पिता के साथ भूटान की राजधानी थिंपू में किसी बेकरी में काम करता था। अचानक अपने पिताजी से अनबन होने के पश्चात यह युवक भारतीय सीमा में प्रवेश कर भाग गया। कई वर्षों तक दक्षिण भारत के चेन्नई में इस लड़के ने होटल में काम किया। कोविड महामारी के समय जब यह युवक रोजगार विहीन हो गया, तो मानसिक रूप से काफी बीमार पड़ गया। किसी ने इस लड़के को सड़क पर पड़ा हुआ मिला। एवं इस भूटानी नागरिक को चेन्नई के एक मानसिक अस्पताल में लाया गया।

BHUTAN REUNION COVERAGE - 2

WEST BENGAL
News

HINDI

JANPATH SAMACHAR
Siliguri

MAY 2024

email janpath.news@gmail.com

जनपथ समाचार

Siliguri | Tuesday 14 May 2024 | 12 Page | सिलीगुड़ी | मंगलवार 14 मई 2024 | मूल्य : ₹ 5.00 वर्ष 42 अंक 236 RNI: 34394/82

13 वर्षों तक गुमशुदगी के बाद भूटानी युवक की हुई स्वदेश वापसी

- 2011 में पिता से झगड़े के बाद भारत में किया था प्रवेश
- मुंबई की सामाजिक संस्था के प्रयासों से फिर घरवालों से मिला

चामूर्ची (संवाददाता)। भारत में करीब 13 सालों तक गुमशुदा रहने के बाद 36 वर्षीय एक भूटानी नागरिक आज अपने पिता से मुलाकात होने पर अपनी भावनाओं को नहीं रोक सका। इस मुलाकात के दौरान बाप-बेटे ने एक दूसरे को गले लगाते हुए अपना स्नेह व्यक्त किया। यह घटना किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं है।

उल्लेखनीय है कि 2011 में भूटान से भारतीय सीमा में प्रवेश करने के बाद फोनशे वांगदी नामक यह युवक लापता हो गया था। उनके पिता द्वारा कई जगह खोजने के बाद भी जब अपने बेटे का कोई सुराग नहीं मिला तो उन्हें लगा उनका बेटा अब इस दुनिया में नहीं है। लेकिन अचानक 13 वर्ष बाद फिर से अपने लापता बेटे से मिलने पर उन्हें यकीन ही नहीं हुआ। जानकारी के अनुसार, मुंबई के श्रद्धा रिहेबिलीटेशन फाउंडेशन के समाजसेवी समर बसाक एवं निखिलेश सांगड़ा ने इस भूटानी युवक फोनशे वांगदी को मुंबई के श्रद्धा रिहेबिलीटेशन केंद्र से लेकर आए थे। यहां आज उन्होंने इस भूटानी युवक को सुरक्षित उनके पिता को सौप दिया। फाउंडेशन के समर बसाक ने बताया यह भूटानी नागरिक अपने पिता के साथ भूटान की राजधानी थिंपू में किसी बेकरी में काम करता था। अचानक अपने पिताजी से अनबन होने के पश्चात यह युवक भारतीय सीमा में प्रवेश कर भाग गया। कई वर्षों तक दक्षिण भारत के चेन्नई में इस लड़के ने होटल में काम किया। कोविड महामारी के समय जब यह युवक रोजगार विहीन हो गया, तो मानसिक रूप से काफी बीमार पड़ गया। किसी को सड़क पर पड़ा हुआ मिलने के बाद वांगदी को चेन्नई के एक मानसिक अस्पताल लाया गया। वहां 6 महीने तक रखने के बाद युवक को मुंबई में श्रद्धा रिहेबिलीटेशन फाउंडेशन में उपचार के लिए लाया गया। वहां डॉक्टर भरत वाटवानी की निगरानी में धीरे-धीरे इस युवक की मानसिक स्थिति पहले से बेहतर हुई। इसी दौरान, काउंसलिंग में युवक ने बताया उनका घर भूटान के थिंपू शहर में है। बसाक के अनुसार, गत वर्ष भी फाउंडेशन की ओर से युवक को सामसे भूटान आकर उसके परिवार से मिलवाने की कोशिश की गई थी, लेकिन भली-भांति परिजनों के नाम-पता न बता पाने के कारण उसमें सफलता नहीं मिली थी। लेकिन इस बार चामूर्ची चेकपोस्ट के सशस्त्र सीमा बल की 17वीं बटालियन के असिस्टेंट कमांडेंट केपी प्रसून एवं उनके सहयोगी अधिकारियों, चामूर्ची आउटपोस्ट के पुलिस अधिकारी, स्थानीय समाजसेवी रेजा करीम सहित अन्य लोगों की सहयोग से आज 13 वर्षों से लापता इस भूटानी युवक की अपनी स्वदेश वापसी हुई है। यह काफी खुशी की बात है।

आज चामूर्ची चेक पोस्ट स्थित सामसे भूटान गेट पर भूटानी युवक को लेने उनके पिता नामचे वांगदी आए थे। भूटान की सभी प्रशासनिक एवं कानूनी प्रक्रिया को पूरी करने के बाद वह अपने बेटे फोनशे वांगदी को अपने घर ले गए।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

HARIBHOOMI
Jabalpur

DECEMBER 2024

सतपुड़ा भूमि

हरिभूमि

मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

haribhoomi.com जबलपुर, मंगलवार 10 दिसंबर 2024

श्रध्दावन पुनर्वसन केंद्र की अनोखी पहल

12 साल बाद मानसिक रूप से विक्षिप्त महिला का उसके परिवार से पुनर्मिलन

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिवनी।

एक ऐसी कहानी जो दिल छू लेगी। नागपुर के श्रध्दावन पुनर्वसन केंद्र ने मानसिक रूप से अस्वस्थ और बेसहारा महिला उषा (बदला हुआ नाम) को 12 साल बाद उसके परिवार से मिलाया है। यह कहानी सिर्फ एक पुनर्मिलन की नहीं, बल्कि इंसानियत और उम्मीद की ताकत को दर्शाती है।₹

घटना की शुरुआत : ₹यह घटना 24 जून 2024 को शुरू हुई, जब श्रध्दावन पुनर्वसन केंद्र की प्रोजेक्ट कॉऑर्डिनेटर मयूरी भोंग को नागपुर के भोले पेट्रोल पंप के पास एक बेसहारा महिला की सूचना मिली। महिला की हालत बेहद खराब थी—उलझे बाल, फटे कपड़े और मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ। स्थानीय निवासियों और पुलिस के सहयोग से महिला को श्रध्दावन केंद्र लाया गया, जहाँ उसकी देखभाल शुरू हुई। श्रध्दावन केंद्र, जो महारोगी सेवा समिती द्वारा संचालित है, मानसिक रूप से अस्वस्थ लोगों को मदद और पुनर्वास का अवसर देता है। उषा की पहचान कैसे हुई, और यह सफर कैसे उसके परिवार तक पहुँचा।

उषा का इलाज और धीरे-धीरे पहचान उभरने की झलक ₹श्रध्दावन के सायक्ट्रिक डॉक्टरों की मदद से उषा की मानसिक स्थिति में सुधार हुआ। इलाज के दौरान उसने अपने गाँव और परिवार की कुछ यादें साझा की। उसकी पहचान मध्यप्रदेश के

सिवनी जिले के पलारी चौकी के समीप डुंगरिया गाँव, तहसील केवलारी के निवासी के रूप में हुई। उषा का भाई संतकुमार, जो वर्षों से उसे मृत मान चुका था, उसकी जीवित होने की खबर से भावुक हो गया।परिवार से मिलने का सफर आसान नहीं था। उषा को उसके गाँव पहुंचाने की जिम्मेदारी स्थानीय पुलिस अधिकारी, विशेष रूप से पलारी चौकी में पदस्थ उप-निरीक्षक राजेश शर्मा एवं भीमगढ़ चौकी में पदस्थ सहायक पुलिस निरीक्षक श्री पटेल ने सही गाँव और परिवार का पता लगाने में अहम भूमिका निभाई। पुलिस द्वारा 7 अक्टूबर 2024 को उषा को उसके गाँव तक पहुँचाया गया। आइए जानते हैं, इस पुनर्मिलन के दौरान क्या हुआ।

गांव में उषा का स्वागत और भावुक पुनर्मिलन

₹गाँव पहुँचने पर उषा ने धीरे-धीरे अपने परिवार और पुराने रिश्तों को पहचानना शुरू किया। उसके भाई और गाँववालों ने खुशी के आँसू बहाए। हालांकि, उसके गुम होने के बाद, उसके पति ने दूसरी शादी कर ली थी। लेकिन यह पुनर्मिलन उषा के लिए नई शुरुआत लेकर आया।

पुनर्मिलन की यात्रा और पुलिस का सराहनीय सहयोग

इस घटना में पुलिस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सहायक पुलिस निरीक्षक श्री पटेल और उप-निरीक्षक राजेश शर्मा ने उषा के गाँव और परिवार का पता लगाने में पूरी मदद की। श्रध्दावन पुनर्वसन केंद्र और पुलिस की टीम ने यह साबित किया कि जब समाज एकजुट होता है, तो चमत्कार हो सकते हैं। इस घटना ने सिवनी और आसपास के क्षेत्रों में मानसिक स्वास्थ्य और बेसहारा लोगों के लिए जागरूकता भी बढ़ाई है उषा की यह कहानी एक नई उम्मीद देती है। श्रध्दावन पुनर्वसन केंद्र और पुलिस की टीम ने मिलकर जो कर दिखाया, वह सराहनीय है। श्री प्रदीप वाल्मीकि उप पुलिस अधीक्षक महोदय महिला सुरक्षा शाखा जिला सिवनी के मार्गदर्शन में आज शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय धुमा में हम होंगे कामयाब पखवाड़ा के अंतर्गत महिला सुरक्षा और व्यक्तित्व विकास के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए जानकारी प्रदान की गई है।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

WAINGANGA TIMES
Keolari

DECEMBER 2024

'12 साल बाद मानसिक रूप से विक्षिप्त महिला का उसके परिवार से पुनर्मिलन, श्रध्दावन पुनर्वसन केंद्र की अनोखी पहल'

केवलारी - +एक ऐसी कहानी जो दिल छू लेगी। नागपुर के श्रध्दावन पुनर्वसन केंद्र ने मानसिक रूप से अस्वस्थ और बेसहारा महिला उषा (बदला हुआ नाम) को 12 साल बाद उसके परिवार से मिलाया है। यह कहानी सिर्फ एक पुनर्मिलन की नहीं, बल्कि इंसानियत और उम्मीद की ताकत को दर्शाती है। घटना की शुरुआत = +यह घटना 24 जून 2024 को शुरू हुई, जब श्रध्दावन पुनर्वसन केंद्र की प्रोजेक्ट कॉऑर्डिनेटर मयूरी भोंग को नागपुर के भोले पेट्रोल पंप के पास एक बेसहारा महिला की सूचना मिली। महिला की हालत बेहद खराब थी उलझे बाल, फटे कपड़े और मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ। स्थानीय निवासियों और पुलिस के सहयोग से महिला को श्रध्दावन केंद्र लाया गया, जहाँ उसकी देखभाल शुरू हुई। उषा की पहचान कैसे हुई, और यह सफर कैसे उसके परिवार तक पहुँचा।

उषा का इलाज और धीरे-धीरे

पहचान उभरने की झलक

श्रध्दावन के सायक्ट्रिक डॉक्टरों की मदद से उषा की मानसिक स्थिति में सुधार हुआ। इलाज के दौरान उसने अपने गाँव और परिवार की कुछ यादें साझा की। उसकी पहचान मध्यप्रदेश के सिवनी जिले के पलारी चौकी के समीप डुंगरिया गाँव, तहसील केवलारी के निवासी के रूप में हुई। उषा का भाई संतकुमार, जो वर्षों से उसे मृत मान चुका था, उसकी जीवित होने की खबर से भावुक हो गया। परिवार से मिलने का सफर आसान नहीं था। उषा को उसके गाँव पहुंचाने की जिम्मेदारी स्थानीय पुलिस अधिकारी, विशेष रूप से पलारी चौकी में पदस्थ उप-निरीक्षक राजेश शर्मा एवं भीमगढ़ चौकी में पदस्थ सहायक पुलिस निरीक्षक श्री पटेल ने सही गाँव और परिवार का पता लगाने में अहम भूमिका निभाई। पुलिस द्वारा 7 अक्टूबर 2024 को उषा को उसके गाँव तक पहुँचाया गया

पुनर्मिलन की यात्रा और पुलिस का सराहनीय सहयोग

+इस घटना में पुलिस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सहायक पुलिस निरीक्षक श्री पटेल और उप-निरीक्षक राजेश शर्मा ने उषा के गाँव और परिवार का पता लगाने में पूरी मदद की। श्रध्दावन पुनर्वसन केंद्र और पुलिस की टीम ने यह साबित किया कि जब समाज एकजुट होता है, तो चमत्कार हो सकते हैं। इस घटना ने सिवनी और आसपास के क्षेत्रों में मानसिक स्वास्थ्य और बेसहारा लोगों के लिए जागरूकता भी बढ़ाई है। उषा की यह कहानी एक नई उम्मीद देती है। श्रध्दावन पुनर्वसन केंद्र और पुलिस की टीम ने मिलकर जो कर दिखाया, वह सराहनीय है।

RAJASTHAN
News

HINDI

BEAWAR NAVJYOTI
Ajmer

DECEMBER 2024

ब्यावर नवज्योति
अजमेर, मंगलवार, 17 दिसम्बर 2024
• ब्यावर • टॉडगढ़ • जैतारण • रायपुर • मसूदा • बिजयनगर • बदनौर

श्रद्धा फाउंडेशन के प्रयास रंग लाए, 4 माह बाद घर लौटा राजेन्द्र

ब्यावर। मुम्बई की श्रद्धा फाउंडेशन के प्रयासों से चार माह पूर्व लापता युवक अपने घर पहुंचा। जिसे देखकर घरवालों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। श्रद्धा फाउंडेशन के काउंसलर राकेश कुमावत ने बताया कि राजेंद्र लुहार 4 माह पहले केरल के कासरगौड में रास्ते पर भटक रहा था। वहां की स्नेहालया संस्था ने इलाज के लिए उसे श्रद्धा फाउंडेशन मुंबई को ट्रांसफर किया। प्राथमिक रूप से राजस्थानी और मारवाड़ी भाषा बोलने के कारण संस्था के काउंसलर राकेश कुमावत को उससे रूबरू करवाया गया। राजेन्द्र

का चार माह तक इलाज एवं काउंसलिंग की गई। जिसके बाद उसके मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया। समय के साथ उसने अपने परिजनों एवं घर के पते की जानकारी दी। जिसके बाद राजेन्द्र लुहार को श्रद्धा फाउंडेशन की टीम एम्बुलेंस से मुंबई से घर छोड़ने के लिए ब्यावर लेकर पहुंची। राजेन्द्र को देख घर वालों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने संस्था का आभार व्यक्त किया। संस्था के काउंसलकर कुमावत ने बताया कि श्रद्धा फाउंडेशन की शुरूआत 1988 में डॉ.भरत वाटवानी और डॉ.स्मिता वाटवानी के द्वारा की गई थी। जिसके बाद संस्था ने अब तक दस हजार ऐसे लोगों को रास्ते से उठाकर उनका उपचार करने के बाद उन्हें घर पहुंचाया गया है। सेवा कार्य के लिए डॉ.भरत वाटवानी को 2018 में एशिया का सबसे बडा नोबल पुरूस्कार रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। कुमावत ने बताया कि संस्था द्वारा इस बार राजस्थान को 11 लोगो को उपचार कर घर भिजवाया गया है।

RAJASTHAN
News

HINDI

BHASKAR PATRIKA
Jaipur

DECEMBER 2024

DBP NEWS डिजिटल
हर खबर पर नज़र
भास्कर पत्रिका न्यूज़
(दिल्ली जयपुर अजमेर झुंझुनू संस्करण)
डिजिटल अंक: 56 | जयपुर, सोमवार 16 दिसम्बर 2024 | संपादक - राजेश चौहान | मो. 9643281684 | पृष्ठ: 9 | मूल्य-0.00

लापता व्यक्ति को परिवार वालों से मिलाया

नाहरगढ़ (शमशाद खान रंगीला) डिजिटल भास्कर पत्रिका न्यूज़। राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड ऐंटी करप्शन मिशन और श्रद्धा फाउंडेशन मुंबई के प्रयास रंग लाए, श्रद्धा फाउंडेशन द्वारा भारत के रास्तो पर घुमने वाले मनोरोगियों को रास्ते से उठाकर संस्था मैं इलाज करके फिर पूरे भारत मैं जहाँ कहीं का हो उसे घर पहुंचता है, इसी तरह आज द्वारिका लाल मीणा पिता काजोड़ लाल मीणा निवासी देवपुरिया मोठपुर, भटकते भटकते कोलकाता पहुंच गया वहां की संस्था ने रास्ते से उठाकर अपने संस्थान में भर्ती किया और फिर कर्जत के श्रद्धा फाउंडेशन मुंबई मैं ईलाज के लिए ट्रांसफर किया। संस्था मैं इसका इलाज हुआ, और फिर धीरे धीरे इसकी मानसिक स्थिति मैं सुधार आया और इसने अपना पता बताया तो संस्था के सोशल वर्कर राकेश कुमावत ने नाहरगढ निवासी राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड ऐंटी करप्शन मिशन के शमशाद खान रंगीला से संपर्क साधा और उन्होंने इनके गांव मैं संपर्क किया और शमशाद खान और श्रद्धा फौंडेशन टीम की बदोलत आज द्वारिका लाल सकुशल अपने घर पहुंच पाया, और आज

संस्था के सोशल वर्कर राकेश कुमावत, मनीषा, नीलेश और आबिद इसे एम्बुलेंस से लेकर आये और उसके गाँव– मीणा का देवीपुरिया मोठपुर पहुंचे तो द्वारिका लाल के परिवार वाले, और ग्रामवासियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और देखने के लिए लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा, उन्होंने संस्था का बहुत बहुत आभार व्यक्त किया, इसके भाई ने बताया कि यह 2 वर्षों से घर से लापता हो गया था। कुमावत ने बताया की संस्था 1988 से चल रहीं है और संस्था के फाउंडर डाक्टर भरत वाटवानी और उनकी पत्नी स्मिता वाटवानी की देखरेख मैं अभी तक लगभग 10000 लोगों को ठीक कर के घर पहुंचाया है।

RAJASTHAN
News

HINDI

VISHWA NAYAK
Kota

DECEMBER 2024

विश्व नायक

सम्पूर्ण राज्य में प्रसारित व दक्षिण-पूर्वी, राजस्थान का हिन्दी प्रमुख समाचार पत्र

वर्ष : 20 अंक :170 | कोटा, सोमवार, राजस्थान, 16 दिसंबर 2024 | पेज-8, मूल्य : 3 रूपया

लापता व्यक्ति को परिवार वालों से मिलाया

शमशाद खान रंगीला - विश्व नायक

बारां -- नाहरगढ, राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड ऐंटी करप्शन मिशन और श्रद्धा फाउंडेशन मुंबई के प्रयास रंग लाए,श्रद्धा फाउंडेशन द्वारा भारत के रास्तो पर घुमने वाले मनोरोगियों को रास्ते से उठाकर संस्था मैं इलाज करके फिर पूरे भारत मैं जहाँ कहीं का हो उसे घर पहुंचता है ,इसी तरह आज द्वारिका लाल मीणा पिता काजोड़ लाल मीणा निवासी देवपुरिया मोठपुर,भटकते भटकते कोलकाता पहुंच गया वहां की संस्था ने रास्ते से उठाकर अपने संस्थान में भर्ती किया और फिर कर्जत के श्रद्धा फाउंडेशन मुंबई मैं

ईलाज के लिए ट्रांसफर किया !

संस्था मैं इसका इलाज हुआ, और फिर धीरे धीरे इसकी मानसिक स्थिति मैं सुधार आया और इसने अपना पता बताया तो संस्था के सोशल वर्कर राकेश कुमावत ने नाहरगढ निवासी राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड ऐंटी करप्शन मिशन के शमशाद खान रंगीला से संपर्क साधा और उन्होंने इनके गांव मैं संपर्क किया और शमशाद खान और श्रद्धा फौंडेशन टीम की बदोलत आज द्वारिका लाल सकुशल अपने घर पहुंच पाया ,और आज संस्था के सोशल वर्कर राकेश कुमावत,मनीषा, नीलेश और आबिद इसे एम्बुलेंस से लेकर आये और उसके गाँव- मीणा का देवीपुरिया मोठपुर पहुंचे तो द्वारिका लाल के परिवार वाले ,और ग्रामवासियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और देखने के लिए लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा, उन्होंने संस्था का बहुत बहुत आभार व्यक्त किया,

इसके भाई ने बताया कि यह 2 वर्षों से घर से लापता हो गया था। कुमावत ने बताया की संस्था 1988 से चल रहीं है और संस्था के फाउंडर डाक्टर भरत वाटवानी और उनकी पत्नी स्मिता वाटवानी की देखरेख मैं अभी तक लगभग 10000 लोगों को ठीक कर के घर पहुंचाया है ,

UTTAR PRADESH
News

HINDI

SHAH TIMES
Saharanpur

JANUARY 2025

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

सहारनपुर मंगलवार 1 दिसम्बर 2024 संस्करण: वर्ष 16 अंक 41 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

www.shahtimesnews.com

15 साल पहले लापता को परिवार से मिलाया

सरसावा। सहारनपुर से करीब 15 साल पहले लापता हुए दिमाग से कमजोर एक व्यक्ति का सहारा बनी मुंबई की एक संस्था श्रद्धा फाउंडेशन।संस्था के सोशल वर्करों ने उसे सरसावा पुलिस की मदद से परि. जनों से मिलाया।परिजनो को देख काशीराम की आंखों से छलक पड़े आंसू।

थाना सरसावा क्षेत्र के यमुना नदी के समीप बसे गांव बहलोलपुर झरौली निवासी करीब 55 वर्षीय काशीराम की दिमागी हालत कमजोर होने के कारण वह कघ्रीब 15 साल पहले घर से अचानक कहीं चला गया था। परिजनों ने उसकी काफी तलाश की लेकिन उसका कुछ पता नहीं चल पाया था। आज शनिवार सुबह करीब 8:30 सरसावा पुलिस की मदद से मुंबई के बोरिवली में स्थित संस्था

श्रद्धा फाउंडेशन की मदद से उसे परि. जनों से मिलवाया तो उसे देखकर उसके दो भाई कश्मीरा व इन्द्र भतीजा दीपक की आंखें छलक आई।

मुंबई की श्रद्धा फाउंडेशन संस्था से जुडे सोशल वर्कर शकील अहमद ने जानकारी देते बताया कि मुंबई में बोरवली में श्रद्धा फाउंडेशन नाम की संस्था आन्ध्र प्रदेश विशाखापत्तनम संस्था ने करीब डेढ़ माह पहले इस मानसिक रोगी को हमें सौंपा था। जिसका संस्था के संस्थापक डा भरत बड़वानी ने इसका ईलाज किया स्थिति में कुछ सुधार आने पर इसने अपना नाम पता जनपद सहारनपुर के थाना सरसावा क्षेत्र में गांव बहलोलपुर झरौली निवासी 55 वर्षीय काशीराम पुत्र रामसुख बताते हुए अपने दो भाइयों के नाम कश्मीरा और इन्द्र बताया तब संस्था द्वारा गूगल के माध्यम से जनपद सहारनपुर के थाना सरसावा का सीयूजी नंबर खोज कर थाना प्रभारी निरीक्षक नरेंद्र कुमार शर्मा से संपर्क कर थाना प्रभारी को पूरे मामले से अवगत कराते हुए गांव में काशीराम के परिवारजनों का पता लगाने का आग्रह किया जिस पर थाना प्रभारी ने भी बिछड़े को उसके परिवारजनों से मिलाने में अहम भूमिका निभाते सहयोग करते इसके पते आदि की तमाम जानकारी उन्हें उपलब्ध कराई जानकारी मिलने पर हम उसे यहां पर थाना में अपने साथ लाए। जहां पुलिस द्वारा काशीराम के परिजनों को फोन के माध्यम से सूचना दी।

UTTAR PRADESH
News

HINDI

DAINIK JAGRAN
Prayagraj

JANUARY 2025

प्रयागराज, सोमवार
6 जनवरी, 2025
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 24

दैनिक जागरण

www.jagran.com
उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

छह महीने बाद मिला परिवार तो छलक उठी आंखें

जागरण संवाददाता, प्रयागराज : मऊ जिले के रहने वाले 45 वर्षीय हरेंद्र यादव महीनों से सड़क पर बेसहारा जीवन बिता रहे थे। पत्नी और भतीजे उन्हें ढूंढते रहे जबकि मुंबई के एक गैर सरकारी संगठन के सदस्यों के हाथ लगे हरेंद्र को स्वरूपरानी नेहरू 'एसआरएन' चिकित्सालय पहुंचा दिया गया। मानसिक रोग विभाग में डाक्टरों ने इलाज किया तो हालत में सुधार हुआ। फिर घर का पता मिला और एक दिन हरेंद्र को अपना परिवार भी मिल गया। यह संभव हो सका एसआरएन के डाक्टरों और संस्था की संयुक्त पहल से। ऐसे लोगों का इलाज कर उनके घर पहुंचाने की अस्पताल में पहल शुरू हुई है, जो बेघर हैं और परिवार से बिछड़ गए हैं।

मुंबई के गैर सरकारी संगठन श्रद्धा पुनर्वास फाउंडेशन 'एसआरएफ' ने एसआरएन के मानसिक रोग विभाग के साथ लिखित समझौता किया है। इसमें संस्था ऐसे लोगों को ढूंढकर लाती है जो परिवार से बिछड़ कर बेसहारा जीवन बिता रहे हैं। अस्पताल में डाक्टर ऐसे लोगों का इलाज करते हैं फिर स्वस्थ हुए लोगों को संस्था उनके घर पहुंचाती है। अब तक दो लोगों को राहत पहुंचाई जा चुकी है। इलाज और पुनर्वास की शुरुआत हरेंद्र यादव से हुई। एसआरएफ की टीम ने 19 दिसंबर को अस्पताल में भर्ती कराया था। इलाज से हालत सुधरी तो 29 दिसंबर को छुट्टी दी गई। फिर संस्था के सदस्यों मोहम्मद शादाब और डा. उदय सिंह ने घर का पता लगाकर हरेंद्र को परिवार से मिलाया। एक अन्य व्यक्ति के घर के पते की जानकारी न होने पर संस्था ने उसे महाराष्ट्र के अपने मुख्यालय में शरण दी है।

मऊ जिले में परिवार से मिले हरेंद्र यादव (पीली टीशर्ट में), साथ में उन्हें घर पहुंचाने वाले संस्था के सदस्य • सौजन्य, मानसिक रोग विभागाध्यक्ष

कालेज की कार्यकारी प्राचार्य डा. वत्सला मिश्रा के निर्देशन में मानसिक रोग विभाग ने नई राह पर कदम रखा है। इससे उन उपेक्षित लोगों के लिए एक उम्मीद जगी है, जिन्हें अक्सर भुला दिया जाता है। उद्देश्य है कि बेसहारा लोगों को समाज की मुख्य धारा में लाते हुए परिवार से मिलाया भी जाए।
- डा. वीके सिंह, विभागाध्यक्ष

अस्पताल से फोन आने पर घर लौटी खुशियां : हरेंद्र की पत्नी सुनीता यादव ने फोन पर दैनिक जागरण को बताया कि पति मिल गए, इससे बढ़कर खुशी क्या हो सकती है। छह महीने से ढूंढ रही थीं, पति कहीं लापता हो गए थे। एक बेटा और दो बेटियां हैं।

RAJASTHAN

News

HINDI

BARAN BHASKAR &
DAINIK NAVJYOTI

Baran

MARCH 2025

Transferred from Banyan, Kerala

बारां भास्कर

वार, 26 मार्च, 2025 अंता • छबड़ा • छीपाबड़ौद मांगरोल • साठबाड़ • किशनगंज dainikbh

25 साल बाद घर लौटा रामप्रसाद

अटरू| राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड एंटी करप्शन मिशन और श्रद्धा फाउंडेशन मुंबई के प्रयासों से 25 साल से लापता रामप्रसाद माली अपने घर लौट आया। जिसे देखकर परिजनों और ग्रामीणों ने खुशी जताई। मानसिक रूप से अस्वस्थ रामप्रसाद भटकते-भटकते केरल पहुंच गया था। वहां की एक संस्था ने वर्ष 2019 में उसे सड़क से उठाकर केंद्र में भर्ती किया। इलाज के बाद उसे श्रद्धा फाउंडेशन, कर्जत मुंबई भेजा गया। वहां लंबे इलाज के बाद उसकी मानसिक स्थिति में सुधार हुआ। जब उसने अपना पता बताया, तो संस्था के सोशल वर्कर राकेश कुमावत ने राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड एंटी करप्शन मिशन के शमशाद खान रंगीला से संपर्क किया। शमशाद खान ने अटरू में राम प्रसाद के परिवार को ढूंढ निकाला। संस्था के सोशल वर्कर राजदीप चौहान रामप्रसाद को लेकर उसके गांव मन्यागण पहुंचे। ग्रामीण उसे देखने के लिए उमड़ पड़े।

जोधपुर, अजमेर और उदयपुर से प्रकाशित @DailyNavajyoti DainikNavajyotiNews feedback@dainiknavajyoti.com dainiknavajyoti संस्थापक : स्व. कप्तान

सफलता, विश्वास और विश्वसनीयता के 89 YEARS

दैनिक नवज्योति

राष्ट्रीय

वर्ष 44 | अंक 82 चैत्र, कृष्ण पक्ष, द्वादशी संवत 2081

अटरू निवासी भटकते हुए पहुंच गया था केरल

25 साल बाद मिला परिवार, छलके खुशी के आंसू

ग्रामीणों का हुजूम उमड़ पड़ा

न्यूज सर्विस/नवज्योति, अटरू।

राष्ट्रीय मानवाधिकार एण्ड एंटी करप्शन मिशन ब्लॉक अटरू के ब्लॉक अध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश यादव व बूथ ब्लॉक अध्यक्ष भूपेंद्र यादव ने बताया कि शमशाद खान रंगीला प्रदेश सचिव के सहयोग से

भटके हुए मनोरोगीयो की शरण स्थाली श्रद्धा पुनर्वास केंद्र है। राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड एंटी करप्शन मिशन और श्रद्धा फाउंडेशन मुंबई के प्रयास रंग लाए। श्रद्धा फाउंडेशन द्वारा भारत के रास्तो पर घूमने वाले मनोरोगियों को रास्ते से उठाकर संस्था में इलाज करके फिर पूरे भारत में जहां कहीं का हो उसे घर पहुंचता है ,इसी तरह मंगलवार को रामप्रसाद माली पुत्र रामगोपाल माली गांव-मन्यागण अटरू का निवासी भटकते

भटकते केरल पहुंच गया। वहां की संस्था ने रास्ते से उठाकर 2019 में अपने संस्थान में भर्ती किया और फिर इलाज और पुनर्वास के लिए श्रद्धा फाउंडेशन कर्जत मुंबई में ट्रांसफर किया। संस्था में इसका इलाज हुआ,और फिर धीरे धीरे इसकी मानसिक स्थिति में सुधार आया और इसने अपना पता बताया तो संस्था के सोशल वर्कर राकेश कुमावत ने नाहरगढ़ निवासी राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड ऐंटी करप्शन मिशन के शमशाद खान रंगीला से संपर्क साधा और उन्होंने अटरू में संपर्क किया और शमशाद खान और श्रद्धा फौंडेशन टीम की बदोलत रामप्रसाद सकुशल अपने घर पहुंच पाया। मंगलवार को संस्था के सोशल वर्कर राजदीप उसे लेकर आए और उसके गांव-मन्यागण लेकर पहुंचे तो रामप्रसाद के परिवार वाले और ग्रामवासियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और देखने के लिए लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। उन्होंने संस्था का बहुत बहुत आभार व्यक्त किया। इसके भाई ने बताया कि राम प्रसाद की मानसिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण 25 वर्ष पहले घर से लापता हो गया था। काफी जगह ढूंढा था पर नहीं मिला। राजदीप चौहान ने बताया की संस्था 1988 से चल रहीं है और संस्था के फाउंडर डॉ. भरत वाटवानी और उनकी पत्नी स्मिता वाटवानी की देखरेख में अभी तक लगभग 12 हजार लोगों को ठीक कर के घर पहुंचाया है। समाज सेवा के क्षेत्र में वाटवानी को 2018 में " रेमन मैग्सेसे पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।

RAJASTHAN

News

HINDI

BHASKAR PATRIKA & VISHWA NAYAK

Jaipur & Kota

MARCH 2025

Transferred from Banyan, Kerala

DBP NEWS डिजिटल हर खबर पर नज़र

भास्कर पत्रिका न्यूज़

(दिल्ली जयपुर अजमेर झुंझुनू संस्करण)

अंक: 145 जयपुर, बुधवार 26 मार्च 2025 संपादक - राजेश चौहान मो. 9643281684 पृष्ठ: 5 मूल्य -

25 साल बाद मिला परिवार से, छलके खुशी के आंसू

भटके हुए मनोरोगीयो की शरण स्थली है श्रद्धा पुनर्वास केंद्र कर्जत

शमशाद खान रंगीला
डिजिटल भास्कर पत्रिका न्यूज।

नाहरगढ। राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड ऐंटी करप्शन मिशन और श्रद्धा फाउंडेशन मुंबई के प्रयास रंग लाए, श्रद्धा फाउंडेशन द्वारा भारत के रास्तो पर घुमने वाले मनोरोगियों को रास्ते से उठाकर संस्था मैं इलाज करके फिर पूरे भारत मैं जहाँ कहीं का हो उसे घर पहुंचता है, इसी तरह आज राम प्रसाद (भगवान) माली पिता राम गोपाल माली गाँव- मन्यागण अटरू जिला-बारां का निवासी भटकते भटकते केरल पहुंच गया वहां की संस्था ने रास्ते से उठाकर 2019 मैं अपने संस्थान में भर्ती किया और फिर इलाज और पुनर्वास के लिए श्रद्धा फाउंडेशन कर्जत मुंबई मैं ट्रांसफर किया। संस्था मैं इसका इलाज हुआ, और फिर धीरे धीरे इसकी मानसिक स्थिति मैं सुधार आया और इसने अपना पता बताया तो संस्था के सोशल वर्कर राकेश कुमावत ने नाहरगढ निवासी राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड ऐंटी करप्शन मिशन के शमशाद खान रंगीला से संपर्क साधा और उन्होंने अटरू में संपर्क किया और शमशाद खान और श्रद्धा फौंडेशन टीम की बदोलत आज राम प्रसाद सकुशल अपने घर पहुंच पाया, और आज संस्था के सोशल वर्कर राजदीप उसे लेकर आये और उसके गाँव- मन्यागण लेकर पहुंचे तो राम प्रसाद के परिवार वाले ,और ग्रामवासियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और देखने के लिए लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा, उन्होंने संस्था का बहुत बहुत आभार व्यक्त किया। इसके भाई ने बताया की राम प्रसाद की मानसिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण 25 वर्ष पहले घर से लापता हो गया था। काफी जगह ढूँढा था पर नहीं मिला। राजदीप चौहान ने बताया की संस्था 1988 से चल रहीं है और संस्था के फाउंडर डाक्टर भरत वाटवानी और उनकी पत्नी स्मिता वाटवानी की देखरेख में अभी तक लगभग 12000 लोगों को ठीक कर के घर पहुंचाया है, समाज सेवा के क्षेत्र में डॉक्टर भरत वाटवानी सर को 2018 मैं रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

Approved by Government of India

विश्व नायक

सम्पूर्ण राज्य में प्रसारित व दक्षिण-पूर्वी, राजस्थान का हिन्दी प्रमुख समाचार पत्र

कोटा, बुधवार, राजस्थान, 26 मार्च 2025 पेज-

25 साल बाद मिला परिवार से छलके खुशी के आंसू

भटके हुए मनोरोगीयो की शरण स्थाली है श्रद्धा पुनर्वास केंद्र कर्जत

शमशाद खान रंगीला - विश्व नायक

नाहरगढ, राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड ऐंटी करप्शन मिशन और श्रद्धा फाउंडेशन मुंबई के प्रयास रंग लाए, श्रद्धा फाउंडेशन द्वारा भारत के रास्तो पर घुमने वाले मनोरोगियों को रास्ते से उठाकर संस्था मैं इलाज करके फिर पूरे भारत मैं जहाँ कहीं का हो उसे घर पहुंचता है ,इसी तरह आज राम प्रसाद (भगवान)माली पिता राम गोपाल माली गाँव- मन्यागण अटरू जिला- बारां का निवासी भटकते भटकते केरल पहुंच गया वहां की संस्था ने रास्ते से उठाकर 2019 मैं अपने संस्थान में भर्ती किया और फिर इलाज और पुनर्वास के लिए श्रद्धा फाउंडेशन कर्जत मुंबई मैं ट्रांसफर किया !

संस्था मैं इसका इलाज हुआ, और फिर धीरे धीरे इसकी मानसिक स्थिति मैं सुधार आया और इसने अपना पता बताया तो संस्था के सोशल वर्कर राकेश कुमावत ने नाहरगढ निवासी राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड ऐंटी करप्शन मिशन के शमशाद खान रंगीला से संपर्क साधा और उन्होंने अटरू में संपर्क किया और शमशाद खान और श्रद्धा फौंडेशन टीम की बदोलत आज राम प्रसाद सकुशल अपने घर पहुंच पाया ,

और आज संस्था के सोशल वर्कर राजदीप उसे लेकर आये और उसके गाँव- मन्यागण लेकर पहुंचे तो राम प्रसाद के परिवार वाले ,और ग्रामवासियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और देखने के लिए लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा, उन्होंने संस्था का बहुत बहुत आभार व्यक्त किया।

इसके भाई ने बताया की राम प्रसाद की मानसिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण 25 वर्ष पहले घर से लापता हो गया था। काफी जगह ढूँढा था पर नहीं मिला
!

राजदीप चौहान ने बताया की संस्था 1988 से चल रहीं है और संस्था के फाउंडर डाक्टर भरत वाटवानी और उनकी पत्नी स्मिता वाटवानी की देखरेख मैं अभी तक लगभग 12000 लोगों को ठीक कर के घर पहुंचाया है , समाज सेवा के क्षेत्र में डॉक्टर भरत वाटवानी सर को 2018 मैं " रेमन मैग्सेसे पुरस्कार" से सम्मानित किया गया!

RAJASTHAN
News

HINDI

RAJASTHAN PATRIKA
Baran

MARCH 2025

patrika.com राजस्थान पत्रिका. बारां, बुधवार, 26 मार्च 2025

बारां पत्रिका प्राइम

अंता . छबड़ा . अटरू . किशनगंज . मांगरोल . छीपाबड़ौद . शाहाबाद

श्रद्धा फाउंडेशन की मदद से हुआ मिलन

25 साल बाद परिवार से मिला तो आंखें हुई नम

पत्रिका ह्यूमन एंगल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

कवाई. एक बार बिछुड़कर फिर से परिवार से मिलना, इस खुशी के अहसास की कल्पना नहीं की जा सकी। ऐसा ही कुछ मन्यागण निवासी रामप्रसाद माली के साथ हुआ। वो 25 वर्ष पहले अपने परिवार से बिछड़ गया था। इसे श्रद्धा फाउंडेशन की मदद से मंगलवार को परिवार से मिलाया गया। उसे देखकर परिवारजन के चेहरे भी खुशी से छलक उठे। श्रद्धा फाउंडेशन अनाथ और बेसहारा मनोरोगियों का संस्था में इलाज करके उन्हें परिजन तक पहुंचाता है। इसी तरह राम प्रसाद उर्फ भगवान माली पुत्र रामगोपाल माली निवासी मन्यागण भी अपने परिजन से मिल गया।

यह है रामप्रसाद की कहानी

रामप्रसाद 25 वर्ष पूर्व भटकते-भटकते केरल पहुंच गया था। वहां की संस्था ने उसे 2019 में अपने संस्थान में भर्ती किया और फिर इलाज और पुनर्वास के लिए श्रद्धा फाउंडेशन कर्जत मुंबई भेज दिया। वहां उसका इलाज हुआ, जब धीरे धीरे इसकी मानसिक स्थिति में सुधार आया तो अपना पता बताया। इस पर सोशल वर्कर राकेश कुमावत ने राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड एंटी करप्शन मिशन के शमशाद खान रंगीला से संपर्क किया। उन्होंने अटरू में संपर्क किया। शमशाद खान और श्रद्धा फाउंडेशन टीम के प्रयास से रामप्रसाद सकुशल अपने घर पहुंच सका। संस्था के सोशल वर्कर राजदीप मंगलवार को उसे लेकर आए और मन्यागण लेकर पहुंचे। उसे देख रामप्रसाद के परिवार व ग्रामीणों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। रामप्रसाद के भाई ने बताया कि रामप्रसाद की मानसिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण वो 25 वर्ष पहले घर से लापता हो गया था। काफी जगह खोजा पर वो नहीं मिला।

कवाई मन्यागण गांव में परिजन व ग्रामीणों के बीच रामप्रसाद माली

MADHYA PRADESH
News

HINDI

APRIL 2025

नागपुर की एक ऐसी संस्था जिसने सात वर्ष से लापता खेड़ी के कृष्णा को अपने परिजनों से मिलाया,श्रद्धावन,संस्था

मनोहर अग्रवाल की रिपोर्ट

बैतूल के समीप ग्राम खेड़ी सांवलीगढ़ निवासी स्वर्गीय सूरतलाल डोंगरे के बड़े बेटेकृष्णा डोंगरे जो कि विगतसात वर्षों से लापता था परिजनों ने हाथ खड़े करदिए की अब कृष्णा नहीं।मिलेगा लेकिन 7 वर्ष बादआज कृष्णा उनके द्वार पर पहुंच गया लेकिन कैसेइसकी वजह ए जी ओ द्वारासंचालित, श्रद्धावन, संस्थाहै जिनके सोशल वर्कर कोकृष्णा कोलकाता में मिलाउन्होंने कृष्णा को नागपुरपहुंचाया उन्होंने मानसिकरोग से ग्रस्त कृष्णा को अस्पतालमें भर्ती कर उसका एक वर्ष तकनिःशुल्क उपचार किया जब वहअपने घर का पता बताने लगा तोउसकी सेहत का लगातार ख्यालरखने वाली नर्स चेतना नेताम करसहायक नेताम मतकरी के द्वारास्पेशल एंबुलेंस से कृष्णा को।पहले पुलिस सहायता केंद्र लेगए और पास ही कृष्णा के परिवार छोटे भाई अरुणडोंगरे को पुलिस सहायता केंद्रप्रभारी प्रवीण पचौरी एवं स्टापके समक्ष सोपा गया कृष्णा डोंगरेके परिजनों ने श्रद्धावन संस्थाका आभार व्यक्त किया

BIHAR
News

HINDI

PRABHAT KHABAR
Bhagalpur

JUNE 2025

बिहार जागे... देश आगे

प्रभात खबर

भागलपुर, शुक्रवार
20.06.2025
आषाढ़ कृष्ण पक्ष 09 संवत 2082
पृष्ठ : 20
मूल्य : ₹ 4
वर्ष : 15, अंक : 128
रजिस्ट्रेशन : बी.आई.एच.एच.आई.एन 2011/37188

भागलपुर । पटना । मुजफ्फरपुर । रांची । जमशेदपुर । धनबाद । देवघर । कोलकाता से प्रकाशित

facebook.com/prabhat.khabar twitter.com/prabhatkhabar instagram.com/prabhat.khabar youtube.com/c/PrabhatKhabartv/

घर से भटक गयी युवती दो साल बाद पहुंची अपने घर

प्रतिनिधि, अररिया

भरगामा प्रखंड के जगता स्थित महादलित टोला में खुशी का उस समय ठिकाना नहीं रहा. जब महाराष्ट्र की एक संस्था ने दो साल पूर्व अपने परिवार से बिछड़ी मानसिक विक्षिप्त युवती को उनके परिवार से मिलाया. मामला भरगामा प्रखंड के जगता अंतर्गत मौजहा के बरौहुआ महादलित टोला का है. जहां से काजल कुमारी पिता बिंचू ऋषिदेव मानसिक बीमारी के कारण 02 साल पूर्व अपने घर से निकलकर खो गई थी. जिसका कोई अता-पता उनके परिजनों को नहीं चल रहा था. इस दौरान जानकारी मिलने पर महाराष्ट्र के कर्जत, रायगड़ जिले के श्रद्धा रेहाबिलीटेशन फाउंडेशन के फाउंडर सह मनोरोग डॉ भरत वटवानी ने काजल कुमारी (पुष्पा - गुप्त नाम कोड) को नेपाल के मोरंग स्थित मानवसेवा आश्रम बिराटनगर से पिकअप किया. इसके बाद काजल कुमारी का इलाज कराया गया व 2.5 साल के बाद उसके घर सही सलामत पहुंचाया गया. जिसमें श्रद्धा फाउंडेशन के सोशल वर्कर में शामिल मयुरी भोंग व पल्लवी जाधव ने काजल कुमारी को सही सलामत भरगामा प्रखंड स्थित उसके घर पहुंचाया. दोनों सोशल वर्कर ने बताया कि काजल कुमारी के घरवाले व सभी गांव वाले उसे देखकर बहुत खुश हुए. परिवार वाले इतने दिनों के बाद ने उसे देख बहुत भावुक हो गये व एक दूसरे से लिपट के रोने बिलखने लगे. बताया गया कि यह संस्था रास्ते पर भटके मनोरोगियों को ढूंढकर उनका इलाज कराकर उनके घर सही सलामत पहुंचाने का कार्य करती है. इस संस्था का ही देन है कि 2.5 साल बाद गुरुवार 19 जून को काजल कुमारी अपने घर सकुशल पहुंच सकी है.

MADHYA PRADESH
News

HINDI

RAISEN BHASKAR &
RAJ EXPRESS
Bhopal

AUGUST 2025

रायसेन भास्कर
बरेली • बेगमगंज • गैरतगंज • सिलवानी • उदयपुरा • सांची
भोपाल, शुक्रवार, 8 अगस्त, 2025 श्रावण शुक्ल पक्ष-14 2082

5 महीने पहले लापता युवक 1000 किमी दूर मिला, संस्था ने घर पहुंचाया

सलामतपुर। परिजनों के साथ पीली टीशर्ट में शिवम।

भास्कर संवाददाता | सलामतपुर

सांची जनपद के सुनारी गांव से पांच महीने पहले लापता हुआ मानसिक रूप से कमजोर शिवम पाल महाराष्ट्र के अहमदनगर में मिला। उसे श्रद्धावन संस्था ने सड़क पर भटकते हुए पाया और इलाज के बाद घर लौटाया।शिवम के पिता गुलाब पाल बेटे को सामने देख भावुक हो गए। परिजन कई महीनों से उसकी तलाश में जुटे थे, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। उम्मीद छोड़ चुके परिवार को 5 अगस्त को तब खुशी मिली जब श्रद्धावन संस्था के राजकुमार विश्वकर्मा शिवम को लेकर गांव पहुंचे। संस्था के अनुसार 23 मई को शिवम अहमदनगर में भटकता मिला था। मानसिक स्थिति ठीक न होने के कारण उसे नागपुर शाखा में तीन महीने तक इलाज और काउंसलिंग दी गई। तब जाकर उसका पता चला। संस्था ने शिवम को परिजनों को सौंपा और एक महीने की निशुल्क दवा भी दी। इस दौरान सरपंच प्रतिनिधि कप्तान सिंह राजपूत भी मौजूद रहे। शिवम के पिता ने संस्था के प्रति आभार जताया।

सच कहने का साहस और सलीका
राज एक्सप्रेस
• भोपाल • इंदौर • जबलपुर • ग्वालियर • रतलाम • रीवा • सतना • छिंदवाड़ा • उज्जैन • सागर

नागपुर की श्रद्धावन संस्था ने 5 महीने से लापता हुए शिवम को परिजनों से मिलाया

● सलामतपुर / राज न्यूज नेटवर्क

सांची जनपद के सुनारी गांव से पांच महीने पहले लापता हुए मानसिक रूप से कमज़ोर शिवम पाल एक हज़ार किलोमीटर दूर महाराष्ट्र के अहमदनगर में श्रद्धावन संस्था को सड़क पर भटकते हुए मिला है। परिजन काफी महीने से शिवम की तलाश में परेशान थे। और आसपास क्षेत्र में उसकी तलाश भी कर चुके थे लेकिन उसका कहीं पता नही चल रहा था। परिजन तो शिवम के मिलने की उम्मीद ही छोड़ चुके थे। लेकिन पांच अगस्त को जब श्रद्धावन संस्था के राजकुमार विश्वकर्मा नागपुर से शिवम पाल को उनके घर सुनारी गांव लेकर पहुंचे तो पिता गुलाब पाल की खुशी का ठिकाना ही नही रहा। बेटे शिवम को सामने देखकर परिजनों की आंखों से खुशी के आंसू निकल पड़े। उन्होंने शिवम को गले लगा लिया।

गांव के नज़दीकी जंगल से हुआ था लापता, मानसिक रूप से कमज़ोर है शिवम

सड़क पर भटकते हुए मिला था शिवम

शिवम लगभग 5 महीने पहले सुनारी गांव के पास नज़दीकी जंगल से लापता हो गया था। श्रद्धावन संस्था के राजकुमार विश्वकर्मा और डॉ भारत वातवानी ने बताया कि 23 मई को शिवम पाल महाराष्ट्र के अहमदनगर में भटकता हुआ मिला था। उसकी मानसिक स्तिथि ठीक नही थी। संस्था ने अपनी उप शाखा नागपुर में लगभग 3 महीने तक निशुल्क ईलाज किया। ताकि उसके घर का पता चल सके। फिर उसकी काफी काउंसलिंग की गई तब कहीं जाकर उसके घर और गांव का पता चल सका। श्रद्धावन संस्था के राजकुमार विश्वकर्मा 5 अगस्त को शिवम को लेकर उसके गांव सुनारी पहुंचे। और परिजनों के सुपुर्द किया। और संस्था द्वारा शिवम को एक महीने की दवा भी निशुल्क दी गई है। इस दौरान सरपंच प्रतिनिधि कप्तान सिंह राजपूत भी मौजूद रहे। वहीं शिवम के पिता गुलाब पाल ने शिवम को सकुशल घर पहुंचाने और उसका ईलाज करने के लिए श्रद्धावन संस्था का आभार व्यक्त किया है।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

RAISEN PATRIKA
Bhopal

AUGUST 2025

पत्रिका

रायसेन पत्रिका

बेगमगंज. सिलवानी. बरेली. सलामतपुर. दीवानगज. गैरतगंज. उदयपुरा. सांची. औबेदुल्लागंज. मंडीदीप

patrika.com पत्रिका. भोपाल, शुक्रवार, 08 अगस्त, 2025

जंगल से हुआ था लापता, मानसिक कमजोर है युवक

पांच माह बाद परिजनों से मिला शिवम

सलामतपुर@पत्रिका. सांची जनपद के ग्राम सुनारी से पांच महीने पहले लापता हुआ मानसिक रूप से कमजोर शिवम पाल एक हजार किलोमीटर दूर महाराष्ट्र के अहमदनगर में श्रद्धावन संस्था को सड़क पर भटकते हुए मिला। परिजन शिवम की तलाश में परेशान थे। लेकिन उसका कहीं पता नही चल रहा था। परिजन तो शिवम के मिलने की उम्मीद ही छोड़ चुके थे। लेकिन पांच अगस्त को जब श्रद्धावन संस्था के राजकुमार विश्वकर्मा नागपुर से शिवम पाल को उनके घर सुनारी गांव लेकर पहुंचे तो पिता गुलाब पाल की खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। बेटे शिवम को सामने देखकर परिजनों की

परिजनों के साथ शिवम।

आंखों से खुशी के आंसू निकल पड़े। उन्होंने शिवम को गले लगा लिया।

शिवम लगभग 5 महीने पहले सुनारी गांव के पास नजदीकी जंगल से लापता हो गया था। श्रद्धावन संस्था के राजकुमार विश्वकर्मा और डॉ. भारत वातवानी ने बताया कि 23 मई को शिवम पाल महाराष्ट्र के अहमदनगर में भटकता हुआ मिला था। उसकी मानसिक स्तिथि ठीक नहीं थी। संस्था ने अपनी उप शाखा नागपुर में लगभग 3 महीने तक निशुल्क इलाज किया, ताकि उसके घर का पता चल सके। फिर उसकी काउंसलिंग की गई, तब कहीं जाकर उसके घर और गांव का पता चल सका। राजकुमार विश्वकर्मा ने शिवम को परिजनों के सुपुर्द किया और संस्था द्वारा शिवम को एक महीने की दवा भी निशुल्क दी गई है। पिता गुलाब पाल ने शिवम को सकुशल घर पहुंचाने और उसका इलाज करने के लिए श्रद्धावन संस्था का आभार व्यक्त किया है।

MADHYA PRADESH
News

HINDI

DAMOH PATRIKA
Sagar

OCTOBER 2025

दमोह पत्रिका हटा तेंदूखेड़ा

प्राइम

पत्रिका. सागर, शनिवार, 04 अक्टूबर, 2025

जबेरा. पटेरा. पथरिया. बटियागढ़. रनेह. हिंडोरिया. मगरौन. मड़ियादो. बांदकपुर. देवडोंगरा. कुम्हारी. तेजगढ़. खड़ेरी.

खिल उठे चेहरे

वृंदावन में छूट गया मानसिक रूप से बीमार बेटा, परिवार ने छोड़ दी थी उम्मीद, इलाज कराकर संस्था ले आई

श्रद्धा के सहारे पांच साल बाद घर लौट आया वृंदावन से बिछड़ा राजू

पत्रिका ह्यूमन एंगल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

दमोह. पांच साल पहले बिछड़ा राजू पीली टी शर्ट में परिजनों के साथ।

दमोह/ नोहटा. पांच साल पहले मथुरा वृंदावन में परिवार के साथ से गुम हुआ युवक जब अचानक से घर पहुंचा तो परिजन भी विश्वास नहीं कर सके। वापसी की उम्मीद छोड़ चुके परिजनों ने जैसे ही बेटे को देखा, उनकी आंखों में आंसू आए। यह कहानी थोड़ी फिल्मी जरूर है, लेकिन यह सब संभव हो सका है, एक समाजसेवी संस्था के कारण। जिसे चैन्नई में सड़कों पर बसर करते हुए 2021 में उक्त युवक राजू मिला था। मानसिक रोगी राजू उस समय खुद का नाम, पता और कुछ भी बताने में सक्षम नहीं था। ऐसे में चैन्नई की श्रद्धा फाउंडेशन ने राजू को सड़क से उठाकर सहारा दिया।

उपचार के लिए मुंबई भेजा और उसकी देखरेख भी की। इन 5 सालों में राजू की मानसिक स्थिति में सुधार हुआ और उसने अपना नाम, पता और थोड़ा बहुत जो याद आया, बताना शुरू किया। जिस पर संस्था ने बिना देर किए उसे उसके घर तक पहुंचाने का जिम्मा भी उठाया। संस्था की ओर से राजेश कुमार मौर्या मुंबई से राजू लोधी को लेकर नोहटा पहुंचे। राजू ने अपना पता नोहटा ही बताया था। नोहटा में मौर्या ने उसकी बताई लोकेशन पर सर्च किया, लेकिन वह गलत निकली। चार से पांच जगहों पर पता करने के बाद भी जब सही लोकेशन नहीं मिली तो मौर्या राजू को लेकर नोहटा पुलिस थाने पहुंचे। जहां से उसके घर की तलाश के नए प्रयास शुरू हुए। सोशल मीडिया और ग्रुपों पर राजू की फोटो डालकर पता लगाने का प्रयास किया गया, जहां से कप्तान सिंह लोधी व अन्य ने उसे पहचान लिया। कुछ ही देर में राजू लोधी की पहचान ग्राम पंचायत नोहटा के ग्राम गाड़ाघाट निवासी के रूप में हुई। इसके बाद संस्था कर्मचारी उसे लेकर उसके गांव पहुंचे। जहां परिजनों ने राजू को देख खुशी जाहिर की। इस दौरान गांव के लोगों ने संस्था कर्मचारी का भी स्वागत किया। राजू के घर लौटते ही परिवार की आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े। गाड़ाघाट निवासी देशराज लोधी ने भावुक होकर संस्था का आभार माना। कप्तान सिंह लोधी ने श्रद्धा फाउंडेशन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे क्षेत्र का लड़का पांच वर्षों से लापता था। संस्था ने उसका निःशुल्क इलाज किया और पूरी तरह स्वस्थ होने के बाद घर तक पहुंचाया।

वृंदावन गए थे काम करने , तभी बिछड़ गया था युवक

राजू लोधी के परिवार की बात करें तो परिवार में कुल 7 सदस्य हैं। परिजनों ने बताया कि राजू लोधी की मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। वह स्वयं को पहचानने की हालत में नहीं थे और शहर की गलियों में भटककर जो मिलता उसी से जीवन यापन कर रहे थे। हम सभी काम करने 2021 में मथुरा वृंदावन गए थे, जहां राजू बिछड़ गया था। काफी प्रयास के बाद भी नहीं मिला था, जिसकी गुमइंसान रिपोर्ट भी वहां दर्ज है। संस्था ने आगे भी राजू लोधी के उपचार की जिम्मेदारी उठाते हुए यह भरोसा दिलाया है कि आने वाले दो वर्षों तक उनकी दवाओं का खर्च निःशुल्क उठाया जाएगा और दवाएं घर तक पहुंचाई जाएगी।

UTTAR PRADESH
News

HINDI

LOK BHARTI
Kanpur

FEBRUARY 2026

लोक भारती

कानपुर | बुधवार | 11 फरवरी, 2026

कानपुर-लखनऊ से एक साथ प्रकाशित

20 साल दौलत सिंहः भूख-बेघरपन और गुमनामी की दर्दनाक दास्तां

मुंबई की श्रद्धा फाउंडेशन ने नेपाल की सड़कों से बचाकर अजीतमल पहुंचाया

अजीतमल। कहते हैं जिसका कोई नहीं होता, उसका भगवान होता है। इस कहावत को अजीतमल कस्बे के सूर्य नगर मोहल्ला निवासी दौलत सिंह ने सच कर दिखाया है। लगभग 20 वर्षों तक गुमनामी, भूख, दर-दर की ठोकरें और बेघरपन झेलने के बाद दौलत सिंह आखिरकार अपने घर लौट आया। लेकिन उसके पीछे जो कहानी है, वह समाज को झकझोर देने वाली है।

दौलत सिंह की कहानी की जड़ें पांच दशक पहले तक जाती हैं। सूर्य नगर निवासी राम बेटी की शादी उनके पिता ने पूरे हर्षोल्लास के साथ की थी, लेकिन शादी के कुछ ही दिनों बाद राम बेटी का संसार उजड़ गया। विधवा हुई राम बेटी अपनी मासूम बेटी गुड्डी को लेकर मायके आ गईं। समाज में असुरक्षा और भविष्य की चिंता के बीच राम बेटी ने जनपद इटावा के कुशगवां गांव निवासी रामसेवक यादव को अपना जीवनसाथी बनाया और नई जिंदगी की शुरुआत की।

राम बेटी और रामसेवक अजीतमल में ही रहने लगे, जहां से दौलत सिंह का जन्म हुआ। समय बीतता गया, गुड्डी और दौलत जवान हुए। गुड्डी की शादी हो गई और वह भी अपने पति के साथ मां के घर पर ही रहने लगी। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था।

कुछ ही समय के अंतराल में राम बेटी और रामसेवक दोनों का निधन हो गया।

माता-पिता के साये से वंचित दौलत सिंह की जिंदगी अचानक बदल गई। कभी-कभी पेट न भरने, अपनों की उपेक्षा और मोहल्ले के तानों ने उसे अंदर से तोड़ दिया। अकेलेपन और मानसिक तनाव से जूझता दौलत सिंह अपने पिता के गांव कुशगवां चला गया, लेकिन कुछ ही दिनों बाद वहां से भी लापता हो गया।

इसके बाद शुरू हुआ संघर्ष का वह दौर, जिसने दौलत सिंह की जवानी छीन ली। पेट की आग बुझाने के लिए उसने करीब 20 साल हिंदुस्तान और नेपाल की सड़कों पर भटकते हुए गुजार दिए। न कोई ठिकाना, न कोई सहारा—नाम का दौलत सिंह, लेकिन जिंदगी में दौलत का नामोनिशान नहीं। भूख, बीमारी और बदहवासी के बीच वह कई बार मौत के मुहाने तक पहुंचा।

इसी दौरान बेसहारा और मानसिक रूप से परेशान लोगों के लिए काम करने वाली मुंबई की श्रद्धा फाउंडेशन उसकी जिंदगी में फरिश्ता बनकर आई। फाउंडेशन ने दौलत सिंह को नेपाल की सड़कों से रेस्क्यू कर मुंबई स्थित पुनर्वास केंद्र पहुंचाया। वहां उसका इलाज, देखभाल और मानसिक उपचार किया गया।

फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. भरत वातवानी के निर्देशन में आवश्यक औपचारिकताएं पूरी कर दौलत सिंह को उसके पैतृक घर जनपद औरैया के अजीतमल कस्बे के सूर्य नगर मोहल्ले में सुरक्षित पहुंचा दिया गया।

20 साल बाद दौलत सिंह को अपने घर की चौखट नसीब नहीं हुई।दौलत सिंह की वापसी ने जहां मोहल्ले में भावुक माहौल बना दिया,

HIMACHAL PRADESH
News

HINDI

AMAR UJALA
Dharamshala

APRIL 2026

6 राज्य
2 केंद्रशासित प्रदेश
22 संस्करण

नगर •••••
वर्ष 21 | अंक 139 | पृष्ठ : 16
मूल्य : पांच रुपये

अमर उजाला

धर्मशाला
सोमवार, 27 अप्रैल 2026
वैशाख शुक्ल-एकादशी
विक्रम संवत-2083

अपनों की यादें धुंधली हुईं पर 'ममता' ने पहचान लिया

40 साल बाद दिल्ली की सड़कों से वापस सरकाघाट पहुंचा राजू, 95 वर्षीय मां की आंखों से छलके खुशी के आंसू

सरकाघाट (मंडी)। कहते हैं कि ममता की डोर कितनी भी समय की आंधियों में उलझ जाए, वह टूटती नहीं और किस्मत अगर साथ दे तो बिछड़े हुए अपने फिर से मिल ही जाते हैं।

ऐसा ही भावुक और अविश्वसनीय दृश्य सरकाघाट की ग्राम पंचायत अपर बरोट के गांव जरल (फतेहपुर) में देखने को मिला। जहां चार दशक पहले लापता हुआ राजू (55) अचानक अपने परिवार के बीच लौट आया।

95 वर्षीय माता शंकरी देवी ने जैसे ही वर्षों बाद अपने बेटे को देखा, उनके जीवन भर का इंतजार मानो एक पल में आंसुओं में बह निकला और पूरे क्षेत्र में भावनाओं की लहर दौड़ गई। राजू, स्वर्गीय परमानंद के पुत्र हैं, जो करीब 15 वर्ष की उम्र में अचानक घर से लापता हो गया था।

जरल गांव का राजू अपने परिजनों के साथ। स्रोत : जागरूक पाठक

उस समय परिजनों ने उसे हर संभव जगह ढूंढा, लेकिन कोई सुराग न मिलने पर उन्होंने उसे मृत मान लिया था। राजू ने बताया कि घर से निकलने के बाद वह पुरानी दिल्ली पहुंच गया, जहां उसने वर्षों तक लाल किले के पास स्थित अशोका ढाबे में काम किया।

बाद में स्वास्थ्य बिगड़ने और मानसिक स्थिति प्रभावित होने के कारण वह सड़क पर लावारिस

15 वर्ष की उम्र में अचानक घर से हो गया था लापता

जीवन जीने लगा और इस दौरान उसकी याददाश्त भी खो गई। राजू की घर वापसी का श्रेय श्रद्धा पुनर्वास केंद्र (श्रद्धा फाउंडेशन) को जाता है।

संस्था के सामाजिक कार्यकर्ता स्वरूप कुमार (निवासी कांगड़ा) ने बताया कि 23 मई 2024 को राजू को दिल्ली की सड़कों से लावारिस हालत में रेस्क्यू कर संस्था में भर्ती कराया गया था। इस संस्था के संस्थापक डॉ. भरत वाटवानी को वर्ष 2018 में रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

पंचायत के पूर्व प्रधान दलीप राव की मौजूदगी में जब राजू को गांव लाया गया तो शुरुआत में सन्नाटा छा गया लेकिन, जैसे ही 95 वर्षीय माता शंकरी देवी ने राजू के स्वभाव और बचपन में उसकी आंख पर लगे चोट के निशान से उसे पहचाना, पूरा माहौल भावुक हो उठा।

मां-बेटे का यह मिलन देख वहां मौजूद हर व्यक्ति की आंखें नम हो गईं। राजू के भाइयों जोगिंदर सिंह, विजय कुमार और सुरेश कुमार ने मिठाई बांटकर उसका स्वागत किया और उसकी देखभाल का पूरा जिम्मा उठाया।

राजू का उपचार अभी जारी रहेगा और संस्था की ओर से उसकी दवाइयां घर पर ही निशुल्क उपलब्ध कराई जाएंगी।

पूर्व प्रधान दलीप राव ने बताया कि राजू ने अपने स्कूल, मामा और दिवंगत पिता से जुड़ी जो बातें साझा कीं, उनसे यह पूरी तरह स्पष्ट हो गया कि वह इसी परिवार का सदस्य है। संवाद

HIMACHAL PRADESH
News

HINDI

DIVYA HIMACHAL
Mandi

APRIL 2026

समाज सेवा | जरल का राजू 15 साल की उम्र में हो गया था लापता, 40 साल बाद परिजनों के चेहरों पर खुशी

श्रद्धा फाउंडेशन ने परिवार से मिलाया बिछड़ा बेटा

निजी संवाददाता- सरकाघाट

मानवता और समाज सेवा की मिसाल पेश करते हुए श्रद्धा फाउंडेशन ने एक और बिछड़े व्यक्ति को उसके परिवार से मिलाकर नई उम्मीद जगाई है। संस्था द्वारा सड़कों पर भटक रहे मानसिक रूप से अस्वस्थ लोगों को सहारा देकर उनका इलाज और पुनर्वास किया जाता है। इसी कड़ी में परमानंद का बेटा राजू उर्फ राजकुमार, निवासी गांव जरल, पोस्ट ऑफिस फत्तेहपुरए तहसील सरकाघाट (जिला मंडी) लगभग 15 वर्ष की उम्र में घर से लापता हो गया था। मानसिक स्थिति ठीक न होने के कारण वह भटकते.भटकते दिल्ली पहुंच गया। वहां अपना घर आश्रम ने उसे 23 मई 2024 को अपने संस्थान में भर्ती किया। प्रारंभिक देखभाल के बाद उसे इलाज और पुनर्वास के लिए श्रद्धा पुनर्वास केंद्र कर्जत (मुंबई) भेजा गया। करीब दो साल के उपचार और देखभाल के बाद राजू की मानसिक स्थिति में सुधार हुआ और उसने अपने गांव का पता बताया। इसके बाद संस्था के सोशल वर्कर स्वरूप कुमार उसे लेकर उसके गांव फतेहपुर पहुंचे। यहां स्थानीय पूर्व प्रधान दिलीप कुमार के सहयोग से उसे उसके परिवार से मिलवाया गया। करीब 40 वर्षों बाद अपने बेटे को सामने देख परिवार की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। परिवार ने संस्था और सहयोगियों का दिल से आभार व्यक्त किया। संस्था के प्रतिनिधि ने बताया कि डॉ. भरत वाटवानी और उनकी पत्नी स्मिता वाटवानी के मार्गदर्शन में 1988 से कार्य कर रही यह संस्था अब तक लगभग 14000 से अधिक लोगों को स्वस्थ कर उनके घर पहुंचा चुकी है। समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉण् वाटवानी को 2018 में रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह घटना न केवल एक परिवार के लिए खुशी लेकर आई है, बल्कि समाज के लिए भी प्रेरणा है कि मानवता और सेवा से हर बिछड़ा रिश्ता फिर जुड़ सकता है।

सरकाघाट: बिछड़े बेटे को परिजनों को सौंपते संस्था के सदस्य

UTTAR PRADESH
News

HINDI

LOK BHARTI
Varanasi

MAY 2026

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

पार्थ सारथी

"ना रहे कसर खबर का असर"

वाराणसी गुरुवार 07 मई 2026

सराहनीय कार्य:सत्रह वर्षो से गायब बुजुर्ग महिला को अपने पास रख दवा इलाज के बाद श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के पदाधिकारियों ने पहुँचाया घर खुशी की लहर

एस के श्रीवास्तव विकास

वाराणसी/-राजातालाब थाना क्षेत्र के चंदापुर निवासिनी 55 वर्षीय बुजुर्ग महिला बीते सत्रह वर्ष पूर्व घर से गायब हो गयी थी और जिसकी मानसिक संतुलन ठीक नही था वह भटकते भटकते बीते 20 अक्टूबर 2025 को मुम्बई पहुँच गयी थी जिसे महिला बेगर्स होम चेंबूर ने अपने पास लेते हुये श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के पदाधिकारियों को सौप दी थी,जिसके बाद श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के पदाधिकारियों द्वारा मानसिक विक्षिप्त महिला का 6 माह से दवा इलाज खान पान कराते हुए स्वस्थ होने पर तीन दिनों के अथक प्रयास के बाद टीम के पदाधिकारियों ने उसे उसके घर चंदापुर थाना राजातालाब पहुँचाया परिजनों ने अनिता उर्फ विमला देवी को पाकर खुशी से झूम उठे और श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के पदाधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापित किये और बहुत बहुत आभार प्रकट किए।महिला का मानसिक स्थिति पिछले 25 वर्षों से सही नही था जिसकी उपचार परिजनों द्वारा 5 वर्षों तक कराया गया था।मानसिक बीमारी के कारण वह 17 साल तक अपने घर परिवार और बच्चों से दूर रहीं।17 वर्ष पूर्व थाना कपसेठी में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई गयी थी।प्राप्त जानकारी के मुताबिक अनीता को एक बेटी और दो बेटे हैं।20 साल पहले छोटे बेटे के जन्म के बाद उनकी मानसिक स्थिति बिगड़ गई थी,जिसकी वजह से वह बच्चों का ध्यान नहीं रख पाती थीं और

उन्हें बार-बार पानी में डुबो देती थीं।इसी कारण परिवार ने सुरक्षा के लिए उन्हें बेड़ियों में बांधकर रखा था। उनका इलाज करीब पाँच साल तक चला,तब तक वह ठीक थीं,लेकिन दवा बंद होने के कुछ समय बाद वह अपनी ससुराल से निकल गईं।उनके पति और भाई ने मुंबई तक तलाश की पर कोई सुराग नहीं मिला और अंत में उन्होंने उम्मीद छोड़ दी कि वह कभी वापस आएंगी।अनीता ने अपने गांव का नाम 'चंदापुर' और थाना 'रोहनिया' बताया था।पहले दिन जब टीम उन्हें रोहनिया लेकर गई तो पता चला कि क्षेत्रों के विभाजन के कारण चंदापुर अब राजातालाब थाने में आता है।राजातालाब पुलिस ने सरपंच को बुलाया लेकिन उन्होंने अनीता को नहीं पहचाना।इसके बाद अनीता ने अपना गांव 'सेवापुरी' बताया। सेवापुरी में जंसा और कपसेठी दो थाने लगते हैं।कपसेठी थाने में अनीता ने महिला कांस्टेबल से बात करते हुए बताया कि उसका बेटा बनारसी साड़ी की फैक्ट्री में काम करता है।इसके आधार पर हमें 'लोहता' जाने का सुझाव मिला,जहाँ चंदापुर और चांदपुर नाम के दो गांव थे,पर वहां भी किसी ने उन्हें नहीं पहचाना।रात में होटल लौटकर जब फिर से काउंसलिंग की गई,तो अनीता बार-बार चंदापुर गांव और राजातालाब बाजार का जिक्र करने लगी।अगले दिन टीम फिर से राजातालाब के चंदापुर गांव पहुँची शुरूआत में किसी ने नहीं पहचाना क्योंकि 17 सालों में उनका हुलिया काफी बदल चुका था।तभी गांव के एक बुजुर्ग ने उनकी जाति (राजभर) के आधार पर पास के 'लोहारन' टोले में जाने की सलाह दी।वहां पहुंचते ही अनीता के भाई ने उन्हें पहचान लिया।पता चला कि अनीता की ससुराल सेवापुरी (थाना कपसेठी) में है,जो वह पूरी तरह भूल चुकी थीं।उनके भाई ने पुष्टि की कि 17 साल पहले उनकी गुमशुदगी की रिपोर्ट वहीं दर्ज कराई गई थी।अनीता को वापस पाकर उनका भाई और गांव वाले दंग रह गए और उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।अनीता को श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन से एक महीने की दवा दी गई है।श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन टीम के पदाधिकारियों ने वाराणसी में तीन दिवसीय प्रवास व काउंसिलिंग के बाद पिछड़े हुए बुजुर्ग को परिजनों से मिलाने का सराहनीय कार्य किया गया।मनोचिकित्सक एवं संस्थापक डाक्टर भरत वाटवानी 2018 के रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित ने बुजुर्ग महिला का उपचार किया था।इस अवसर पर श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के सामाजिक कार्यकर्ता रीना सिंह,अनामिका अंबोरे उपस्थित रही।